RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

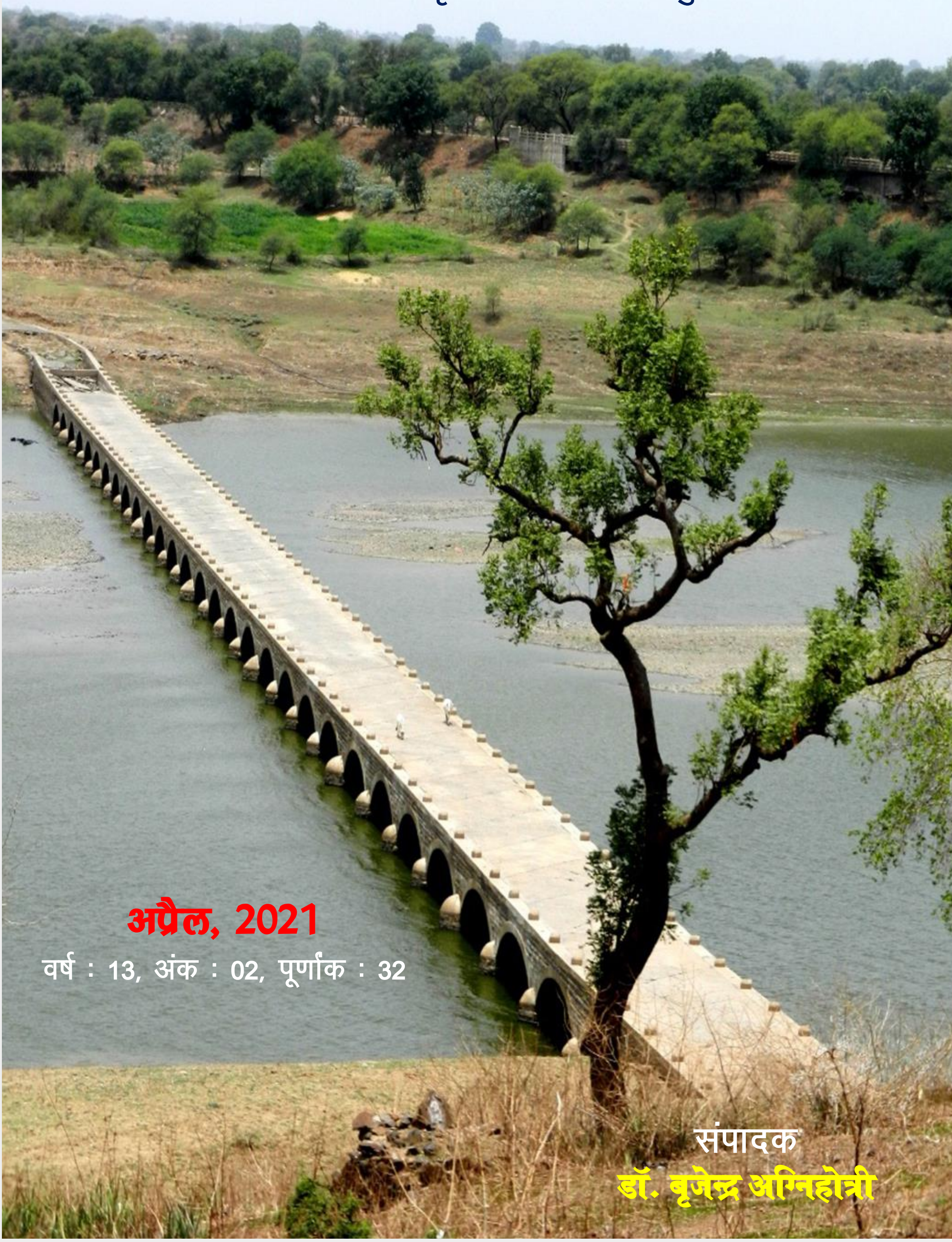

अप्रैल, 2021

वर्ष : 13, अंक : 02, पूर्णांक : 32

संपादक

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

RNI : UPHIN/2009/30450 ISSN : 2319-2178 (P) ISSN : 2582-6603 (O)

संरक्षक परिषद

श्रीमती चित्रा मुद्गल
प्रो. गिरीश्वर मिश्र
प्रो. अशोक सिंह
प्रो. हितेंद्र मिश्र
डॉ. कृष्णा खत्री
डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय
डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

संपादक परिषद

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री (संपादक)
डॉ. प्रशांत द्विवेदी (सह-संपादक)
श्री पंकज पाण्डेय (उप-संपादक)
श्रीमती शालिनी सिंह (उप-संपादक)
डॉ. चुकी भूटिया (उप-संपादक)
डॉ. ऋचा द्विवेदी (उप-संपादक)
डॉ. आरती वर्मा (उप-संपादक)

परामर्श-विशेषज्ञ परिषद

डॉ. दमयंती सैनी
डॉ. दीपक त्रिपाठी
श्री मनस्वी तिवारी
श्री राम सुभाष
श्री जयकेश पाण्डेय
श्री महेशचंद्र त्रिपाठी
डॉ. शैलेष गुप्त 'वीर'
श्री मृत्यंजय पाण्डेय
श्री जयेन्द्र वर्मा

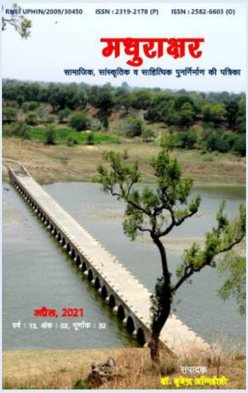

आवरण : **बंशीलाल परमार**

संस्थापक–प्रकाशक–संपादक
डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

मधुराक्षर

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

अप्रैल, 2021
वर्ष : 13, अंक : 02, पूर्णांक : 32

पूर्णतः अव्यावसायिक एवं अवैतनिक प्रकाशन

ई-संस्करण

मूल्य

एक प्रति	: 30 रुपये

व्यक्तियों के लिए

वार्षिक	: 110 रुपये
त्रैवार्षिक	: 300 रुपये
आजीवन	: 2500 रुपये

संस्थाओं के लिए

वार्षिक	: 150 रुपये
त्रैवार्षिक	: 450 रुपये
आजीवन	: 5000 रुपये

विदेशों के लिए (हवाई डाक)

एक अंक	: 6 $
वार्षिक	: 24 $
आजीवन	: 300 $

सदस्यता शुल्क का भुगतान भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में खाता क्रमांक- **10946443013** (IFS Code- SBIN0000076, MICR Code - 212002002) या 'मधुराक्षर' के बैंक खाता क्रमांक **31807644508** (IFS Code- SBIN0005396, MICR Code- 212002004) में करें।

मधुराक्षर में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री की सत्यता व मौलिकता हेतु लेखक स्वयं जिम्मेदार है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके विरुद्ध कार्यवाही केवल फतेहपुर न्यायालय में होगी।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी
बृजेन्द्र अग्निहोत्री द्वारा स्विफ्ट प्रिन्टर्स, 259, कटरा अब्दुलगनी, चौक, फतेहपुर से मुद्रित कराकर जिला कारागार, मनोहर नगर फतेहपुर (उ.प्र.) 212601 से प्रकाशित।

सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनर्निर्माण की पत्रिका

मधुराक्षर

अप्रैल, 2021

संपादक
डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

संपादकीय कार्यालय
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर, फतेहपुर (उ.प्र.) 212 601

E-Mail : madhurakshar@gmail.com

Visit us :
www.madhurakshar.com
www.madhurakshar.blogspot.com

www.facebook.com/agniakshar

चलित वार्ता
+91 9918695656

एक नज़र में...

संपादकीय

अपनी बात

बृजेन्द्र अग्निहोत्री .06

कथा–साहित्य

दूसरी औरत

महेश शर्मा . 07

जन्मदिन

ऊषा कुशवाहा . *18*

ट्रेन का सफर

रोहित यादव . 23

खाली कोना

रीटा मक्कड़ . 25

झुग्गी के चूहे

मनीष कुमार सिंह . 28

साल वनों के साये

उर्मिला शुक्ल . 30

खूंटा

डॉ. गोपाल निर्दोष . 38

कथेतर गद्य

कोरोना बनाम शादी

डॉ. रंजना जायसवाल . 43

मियां महंगू का मज़मा

अंकुश्री . 58

ज्योतिषशास्त्र – सर्वकल्याणकारक शास्त्र

डॉ. नीलाचल मिश्र . 60

लोक भाषा और लोक संस्कृति – अवधी के विशेष संदर्भ में

डॉ. शैलेश शुक्ला . 64

जीवन से झाँकती कहानियां – यात्रीगण कृपया ध्यान दें!

डॉ. हरेन्द्र कुमार . 73

मानवता का संदेशवाहक– बलिदानी राजपूत

डॉ. अनीता पंडा . 76

लैंगिक असमानता का बेनकाब चेहरा

सत्य प्रकाश सिंह . 86

बुजुर्गों की अक्षमता

सलिल सरोज . 88
जिनावर का जिन्न
डॉ. सम्राट् सुधा . 92
नमन–स्मरण
जीवन के महत्वपूर्ण अध्याय का पटाक्षेप
डॉ.अश्विनीकुमार शुक्ल . 95
काव्य–सुरसरि
कल शिवरात्रि थी
राज महाजन . 98
पुस्तकें
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' . 100
फौजी ऐसे ही होते हैं
नफे सिंह योगी . 101
ग़ज़ल
धर्मेन्द्र गुप्त . 102
ग़ज़ल
डॉ. शैलेश शुक्ला . 103
खोया–खोया सा रहता हूँ
अंकुर सिंह . 104
विरक्ति
शैलेन्द्र चौहान . 105
लक्ष्य जीवन का स्वयं को जानना
डॉ. केवलकृष्ण पाठक . 106
घोषणाएं
महेश कुमार केशरी . 108
खरा विकास
सूर्य प्रकाश मिश्र . 109
शीत की रात
रूणा रश्मि 'दीप्ति' . 110
बसंत तुम मत इठलाना
व्यग्र पांडे . 111
बेटियां
प्रेमप्रकाश उपाध्याय 'नेचुरल' . 112
साहित्य समाचार
साहित्य अकादमी पुरस्कार

अपनी बात

नूतन को पुरातन से हमेशा शिकायत रही है, आज भी है। इसके बावजूद कि पुरातन से ही नूतन का उद्भव हुआ है। मजेदार बात यह है कि नूतन को यह बात पता है, इसके बावजूद भी..। बात अगर केवल शिकायत तक सीमित रहती तो भी ठीक था, बात अब दोषारोपण तक पहुंच चुकी है। दोषारोपण इसलिए क्योंकि पुरातन – परंपराओं की, सौहार्दता की, मानवता की, और न जाने कितनी अनमोल थातियां सौंपना चाहता है अथवा इसलिए कि उसने नूतन को अस्तित्व दिया। ध्यान देने वाली बात यह है कि नूतन का प्रतिरोध तभी प्रारंभ होता है, जब वह पुरातन का उपभोग कर चुका होता है। नूतन–पुरातन की इस लड़ाई से साहित्य भी अछूता नहीं है। अनेक शहरों, प्रांतों के साहित्यकारों से रूबरू होने का अवसर मिल रहा है। हर जगह गुटबाजी–खेमेबाजी। अपने को श्रेष्ठ दिखाने की प्रतिस्पर्द्धा। हम सीखतें हैं वयोवृद्ध वरिष्ठ साहित्यकारों से, फिर उनसे कैसी प्रतिस्पर्द्धा। प्रेम से उनके सान्निध्य में रहो देखो, सब तुम्हारे लिए ही है। यह सच है कि कुछ लेखक (उन्हें साहित्यकार नहीं कहा जा सकता, जो दुराभाव की भावना से इस खाई को और गहरा करते हैं) नवोदित रचनाकारों का शोषण करते हैं, लेकिन अगर हम गौर करें तो ऐसे लोगों के द्वारा ही हमारे अंदर आदमी को पहचानने की क्षमता विकास होता है।

कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जिन्हें यह भी नहीं पता होता कि 'साहित्य' किस चिड़िया का नाम है, फिर भी अपनी गंदी टांग से गंदगी फैलाने की कुचेष्टा करते रहते हैं। प्रायः ऐसे लोग नवोदित प्रतिभाओं को दिग्भ्रमित करते देखे जा सकते हैं। सृजनकार के अंदर विनम्रता का होना पहली शर्त है, क्योंकि विनम्रता के अभाव में उसकी ग्राह्य क्षमता स्वमेव नष्ट हो जाती है। और उस पर अगर उसके अंदर अहम् ने घर कर लिया, तो सोने पर सोहागा। फिर तो उसकी रचनाधर्मिता का नष्ट होना तय है, क्योंकि रचनाकार के अंदर का अहम उसके विवेक का नाश कर देगा, फिर कैसे बचेगी उसकी रचनाधर्मिता। आज का युवा रचनाकार, जो अभी 'साहित्य' का क ख ग ..... भी नहीं जानता, उन साहित्यकारों की बुराइयां करता दिखेगा, जिनकी सद्यः रचनायें भी शायद उसने न पढ़ी हों। बुराई करना उसकी दिनचर्या का एक हिस्सा बन जाता है, और इसके द्वारा वह समाज में दस्त करता रहता है। उसको इस बात का अंदाज़ा नहीं होता कि दस्त के बाद कितनी कमजोरी आती है। जाने–अनजाने वह अपना ही नुकसान कर रहा होता है, ऐसा नुकसान जिसकी भरपाई संभव नहीं होती। अनुरोध है आज के रचनाकारों से कि सृजनधर्मिता के दायित्व का निर्वहन करें, सम्मान देंगे तो सम्मान मिलेगा। नहीं तो अस्तित्व बचाना भी संभव हो जायेगा।

-बृजेन्द्र अग्निहोत्री

कहानी

महेश शर्मा
224, सिल्वर हील कालोनी धार
जिला धार मध्य प्रदेश
sharma.mahesh46@yahoo.com

दूसरी औरत

सुबह के आठ बजते बजते जेल का पुराना केदी जगदिश चाय का तपेला चोक में रख कर आवाज लगा रहा था बैरक नम्बर एक के कैदी चाय ले जाओ अपनी अपनी। सभी केदी दोड पडे वेसे भी ठण्ड का मौसम था सभी ठिठुर रहे थे कोने में उदास खड़ा चम्पालाल भी आगे बढा चाय लेने लाइन में लगे उसकी नजर चाय के तपेले पर पडी चाय के नाम पर काला–काला गरम पानी था, जिसे लेने को कैदियों में धक्कामुक्की मच रही थी। अपने ग्लास में चाय नाम का काला पानी लेकर चम्पालाल मन्दिर के ओटले पर बैठा। चाय का पहला घुंट भरते ही मुंह कडवा हो गया और दिमाग में पिछले चार पांच महीने की सारी बातें घुमने लगी।

पुराने बस स्टैंड पर चम्पालाल का चाय का ठेला हमेशा ग्राहकों से घिरा रहता था, चाय जो बढिया बनाता था वो लोग–बाग चाय के साथ उसकी बातों के भी मजे लेते थे। चम्पालाल था भी रसिया दिन भर चाय का ठेला लगाता हँसी मजाक करता। शाम को अपने घर जो वहीं बस स्टैंड के पीछे बना दो कमरों का कच्चा–पक्का मकान के रूप में था वहीं ठेला भी खड़ा कर देता था।

दिन भर की दुकानदारी के बाद देसी दारू का एक अद्धा रोजाना हलक के नीचे उतारता फिर खाना खाके सो जाता। सुबह वापस आठ बजे ठेला लगा के चाय की दुकानदारी शुरू। घर में औरत रामली और छः

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

साल का मदन। परिवार का खर्चा–पानी अच्छी तरहे से चल जाता था। पास के गांव में चार बीघा जमीन थी जो बटइ से दे रखी थी।

चम्पालाल के जीवन में वैसे तो कुछ भी समस्या नहीं थी, यदि थी तो बस एक मन की भटकन और वो ये कि एक औरत और करना है। रामली है पर जिन्दगी का मजा नहीं है। वो अपने दोस्त नाथू से अक्सर कहता रहता था कि 'कुछ भी हो एक नातरा जरूर करना है।'

'तो क्या रामली को छोड़ेगा ?' नाथू पुछता तो चम्पालाल मुस्कराकर कहता भले ही रामली को छोड़ना पड़े पर जिन्दगी के मजे तो लूंगा यार। और बात इतने पर ही आई गई हो जाती।

रामली एक सीधी–सादी अनपढ सांवली सी औरत थी। चेहरे पर चेचक के दाग, सामान्य–सा बदन लिये एक बच्चे की मां होकर भी काफी ढली हुई लगती थी। लेकिन आदमी का पूरा ध्यान रखती थी। चम्पालाल को टाइम पर खाना, बेटे मदन का ख्याल रखना, घर के सारे काम के अलावा चाय के ठेले की भी सुबह की तैयारी में हाथ बंटाती थी। रामली समझती थी कि उसके आदमी का मन उसमें कम है, पर क्या कर सकती थी वो। जीवन इसी तरह चल रहा था। तभी गांव में एक भूचाल आया।

बस स्टैंड के आगे नदी किनारे वाले मोहल्ले के कीसना बा की बड़ी बेटी को उसके घरवाले ने छोड़ दिया। दोनों परिवार वालों में खूब झगड़े हुए। कीसना बा के दामाद का कहना था कि तुम्हारी बेटी का चालचलन ठीक नहीं है, वो घर में रखने लायक नहीं है। और कीसना बा का कहना था कि दामाद के मन में खोट है इसलिये बेटी को छोड़ना चाहता है। पंचायत बैठी 12000 रूपये में झगड़ा टूटा और जोहार बाई बाप के घर वापस आ गई। 23–24 साल की जोहार बाई औलाद तो कोई हुई नहीं थी, चेहरे का नूर अभी बाकी था, बदन में अभी भी कसावट थी। पर क्या करे आदमी से बनी नहीं। कीसना बा बोले– 'भगवान की लीला बेटी घर मे ही सही, कोई अच्छा सा घर मिला तो नातरे दे दूंगा।'

जिस दिन से जोहर बाई अपने बाप के घर वापस आई तब से ही चम्पालाल के दोस्त नाथू का एक चक्कर रोजाना कीसना बा के यहां जरूर लग जाता था। महीना होते ना होते कीसना बा के यहां चम्पालाल की सम्पन्नता के उसके अच्छे स्वभाव के और दिल फरियादी के किस्से छोड़ने में नाथू कामयाब हो चुका था। कीसना बा भी रस लेता था नाथु की बातों में, और जोहरा बाई भी दोनों की बातें कान लगाकर सुनती रहती थी।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

इधर नाथु ने चम्पालाल से ये पक्का करार कर लिया था कि जोहरा बाइ से गोटी फिट कराने की जवाबदारी पूरी–पूरी नाथू की है, पर बदले में चम्पालाल नाथू को अगली फसल तक के लिये 7000 रूपपे बिना ब्याज के देगा। नाथू को भी अपनी जमीन छुड़ाना था, जो सेठ के यहां गिरवी रखी हुई थी। चम्पालाल जानता था कि ये 7000 रूपपे कभी वापस आने वाले नहीं हैं, पर यदि जोहराबाई से कनेक्शन जुड़ जाये तो ये सौदा महंगा नहीं है, जिन्दगी के मजे आ जायेंगे। चम्पालाल के दिमाग में जोहराबाई का बदन घूम गया।

एक दिन नाथू की सलाह पर चम्पालाल पाव भर मिठाई और नमकीन लेकर कीसना बा के घर पहुंच ही गया। कीसना बा तो चम्पालाल को जानते ही थे। आवभगत के साथ जोहराबाई के हाथ की चाय पिलवाई। आधा घंटा बैठ कर चम्पालाल वापस आ गया। इस बीच शिकार करने वाले और शिकार होने वाले दोनों ने एक–दूसरे को भांप लिया था। खास बात ये थी कि यहां शिकार कौन हो रहा था और शिकारी कौन था, ये बात बड़ी पेचीदा थी, जो अभी तो किसी को भी समझ में नहीं आनी थी।

कुछ दिन तक तो एक–दो दिन छोड़–छोड़ कर, और फिर लगभग रोजाना ही दोपहर का एक–दो घंटा चम्पालाल कीसना बा के यहां बिताने लगा। बीच में कई बार कीसना बा इसी टाइम जरूरी काम से गांव में भी चले जाते थे, और एक–दो घंटे बिता कर ही आते थे।

रामली बडा ताज्जुब करती कि आजकल उसका आदमी बहुत खुश रहता है। घर पर मिठाई भी लाता है। पर वो परेशान भी थी कि दोपहर में नदी पर जाने के कारण चाय की दुकान पर ग्राहकी कम हो जाती थी, और कमाई भी कुछ कम पड़ने लगी थी। कई बार चम्पालाल गुस्सा भी करने लगा था। एक–दो बार तो दिन में ही दारू पीकर आ गया था और ज्यादा पी ली थी तो शाम तक चाय का ठेला भी नहीं लगा पाया। आज तक चम्पालाल ने कभी दिन में दारू नहीं पी थी। और जिस दिन रामली घर के कपड़े–लत्ते इकट्ठे करके नदी पर धोने गई, उसी दिन उसे सारा किस्सा समझ में आ गया। आधी रामायण तो नदी पर आई उस मोहल्ले वालियों ने बता दी और बाकी जब वो नदी से घर के लिये चली तो सारा नजारा जीता–जागता सामने आ गया। कीसन ाबा के घर के कुछ दुर से ही रामली को दिखने लगा। कीसना बा के आंगन में पड़ी खाट पर लेटा उसका भरतार और ओसारे से बाहर आती जोहराबाई जो थाली में कुछ

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

लाई थी। दोनों के बीच कुछ हँसी–ठिठोली होती रही, फिर अचानक चम्पालाल उठकर जोहराबाई के साथ घर के अन्दर चला गया।

रामली अनपढ जरूर थी, पर औरत मर्द के बीच के अच्छे बुरे रिशते समझने के लिये दुनिया की किसी पढाई की जरूरत नहीं पडती है। सो रामली का चेहरा काले से और ज्यादा काला हो गया, चाल तेज हो गई और घर पहुँचते ही रोना–पीटना शुरू हो गया। रामली बेसब्री से चम्पालाल का रास्ता देखने लगी।

रोज की तरह चम्पालाल दारू चढाकर झूमता मस्त होता घर आया। भूखी शेरनी की तरह रामली टूट पड़ी। चम्पालाल के होश फाख्ता हो गये। नशा गायब पहले तो हँसते हुए विरोध किया, फिर सारे प्रमाण जब रामली ने सामने रख दिये तो वो भी खुलकर सामने आ गया। दहाडते हुए उसने खुला एलान कर दिया– 'मरद हुं कमाता हुं उसको रखुंगा नातरा लाउंगा। तेरे पीछे जिन्दगी बरबाद थोडे ही करूंगा। जो करना हे कर ले।'

रात भर घर में कलह मचती रही। सुबह होते–होते चम्पालाल रामली को उसकी बूढी मां के घर जो वहां से 10–15 किलोमीटर दूर था, छोड आया– स'म्हालो तुम्हारी बेटी को, काम–धाम कुछ करती नहीं, खाना बनाना आता नहीं।' ये कहकर पलटकर भी नहीं देखा रामली की तरफ चम्पालाल ने। बेटा मदन भी डरा–डरा बाप के इस नये रूप को देखता रहा।

अब जंगल के आजाद शेर की तरह चम्पालाल घर पहुंचा। नाथू घर के आंगन में तैयार बैठा था। सबसे पहले तो पूरी बोतल बुलवाई और दोनों ने छक के पी। नाथू ने 8–10 दिन में काम पक्का हो जाने का भरोसा जताया और अपने 7000 की याद दिलाई। पूरी दोपहर से शाम तक चम्पालाल कीसना बा का मेहमान रहा। शाम को कीसनाबा ने लोकलाज के डर से उसको रवाना किया।

जोहराबाई अब तक पूरी तरह से चम्पालाल की मुरीद हो गई थी, और उतावली थी उसके घर बैठने के लिये। रोजाना बाजार का नाश्ता–पानी, नगदी–पैसा, जान लुटाने वाला मरद, मकान भी, जमीन भी.. . और क्या चाहिये एक ओरत को दुनिया में। बाप–बेटी में इशारों–इशारों मे बात हुई, और अगले दो–चार दिन में समाज में सुरसुरी छोड दी। नाथू बिचवान तैयार था ही। अचानक कीसना बा ने रंग पलटा चम्पालाल और नाथू के सामने। उनका एक ही राग था– 'में बुढा आदमी एकला जमीन

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

जायदाद कुछ भी नी किसके भरोसे ? मेरी जिन्दगी केसे कटे ? कुछ तो इन्तजाम करना पड़ेगा।'

पांच—दस समाज के लोगों की पंचायत बैठी। पीना—पिलाना हुआ। बीस हजार नगद कीसना बा को देना तय हुआ। अब बीस हजार की व्यवस्था तत्काल तो मुश्किल... फसल आने में चार महीने की देर। कीसना बा मानने को तैयार नहीं।

जोहराबाई का दिल पसीजा। उसका सच्चा प्रेमी मरद जो था। उसने कीसना बा को मनाया। ये तय हुआ कि पांच हजार अभी बाकी चार महीने बाद। कीसना बा मान गये, पर नाथु नहीं माना। मजबूरन चम्पालाल ने सेठ के यहां मकान की लिखा—पढ़ी कर दस हजार लिये। पांच हजार कीसना बा को और पांच हजार नाथु को सौंप दिये। अब नाथू खुश था। फोकट के पांच हजार पके, जो वो कभी भी लोटाने वाला नहीं था। कीसना बा खुश था, बेटी ने बेटे जैसे कमाई दी थी, और अभी तो पंद्रह हजार और मिलेंगे। चम्पालाल खुश था कि इस उमर में फिर एक जवान जोरू जो मिल गई थी। और जोहर बाई वो तो खुश थी ही एक नया आदमी मिला जोशखरोश वाला, पैसे वाला, उसके नखरे उठाने वाला, और उसकी हर जरूरत पूरी करने वाला। इस पूरे काण्ड से दुखी थी तो बस एक रामली। दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि एक आदमी खुद की खुशी के लिये ना जाने कितनों को दुखी कर देता है। मगर यहां मामला ये था कि एक रामली के दुख की कीमत पर इतने लोग खुश हो गये थे।

खैर, चार—आठ दिन तक तो चम्पालाल का कीसना बा के यहां वैसे ही आना—जाना रहा। दोपहर को जाना, फिर कीसना बा का जरूरी काम से घर से बाहर निकल जाना और शाम तक आना। तब तक घर पर चम्पालाल और जोहराबाई, जोहराबाई और चम्पालाल... बस इसके सिवा कुछ नहीं।

रामली और उसके गरीब परिवार की तरफ से कोई विरोध अभी तक चम्पालाल को नहीं मिला था। इसी को देखते हुए इस प्रेमकहानी का अगला एपीसोड भी शीघ्र ही सामने आ गया। आठवें दिन शाम के अन्धेरे में जोहारबाई चम्पालाल के दो कमरे वाले शीशमहल मे आ गई, हमेशा के लिये। कीसना बा खुश थे बेटी का रास्ता लगा, बीस हजार की कमाई हुई। लोग जरूर बातें करेंगे, तो करते रहें.. लोग और क्या कर सकते हैं।

चम्पालाल तो मानो स्वर्ग में आ गया था। कहां रामली और कहां जोहारबाई! कहां बासी जलेबी और कहां ताजा गरम रस से भरी इमरती।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि एक आदमी खुद की खुशी के लिये ना जाने कितनों को दुखी कर देता है। मगर यहां मामला ये था कि एक रामली के दुख की कीमत पर इतने लोग खुश हो गये थे।

अगले 10–15 दिन तो दोनों के ऐसे मजे में गुजरे कि रात–दिन का भी होश नहीं रहा फिर कहीं जाके कुछ तृप्ति हुई तो काम धंधे की सूझी। चम्पालाल ने वापस अपने चाय ठेले पे ध्यान देना शुरू किया। पिछले दो महीने से चल रहे जोहराबाई को फतह अभियान के कारण चाय की दुकान बिलकुल ठप्प हो गई थी। एक नया ठेला और लगने लगा था। बचत आधी हो गइ थी, फिर दस हजार की उधारी वाला भी रोजाना ब्याज के पैसे लेने आ जाता था।

इधर जोहराबाइ बडे जतन से अपने नये घर को सजाने सवांरने में लगी थी। साफ सफाई करती, नये–नये सामान लाने की योजना बनाती। एक दिन दोपहर में उसे कुछ भूख लगी तो बाजार का चरपरा खाने की मन में आई और तभी उसे याद आया पिछले आठ–दस दिन से चम्पालाल घर पर कुछ नाश्ता भी नहीं लाया है, और तो और कई बार तो वो दोपहर में घर भी नहीं आया था। बस, फिर क्या था शाम को ही अपना रौद्र रूप दिखाया। खाना बनाना तो दूर जो गुस्सा कर के बैठी की दो घण्टे में मानी। चम्पालाल रात को ही मिठाई लाया, चरपरा लाया और खाने का सामान भी लाया। साथ में खुद की दारू भी लाया और वो रात बढ़िया कटी।

दूसरे दिन चम्पालाल ने फिर एक साहूकार से दो हजार रूपये उधार लिये और जोहारबाई के लिये साड़ी–ब्लाउज, पायजेब, नई चप्पलें और घर का भी कुछ सामान लेकर शाम को घर पहुँचा। जोहारबाई धन्य हो गई। खूब लाड लड़ाया। मालपुए बनाये। उस रात तो बहुत मजे किये ही अगला एक महीना भी अच्छा गुजरा।

रामली के गांव से एक उसका रिश्तेदार बीच में आया था, कह रहा था कि उसको वापस रख ले, पर चम्पालाल ने पूरी दादागिरी से उसे भगा दिया। उसी शाम चम्पालाल जब अपने धंधे का महीने का हिसाब मिलाने बैठा तो चकरा गया। कुछ समझ नहीं आ रहा था। बचत कुछ नजर नहीं आ रही थी। दूध वाले के भी पैसे चढ़ते जा रहे थे। पुराना

कर्जा कुछ भी नहीं चुका पा रहा था। और घर का खर्च ? बाप रे पिछले दिनों से दुगना होता जा रहा था। उसे पुराने दिन याद आये। रामली के टाइम बहुत बरकत थी धंदे मे, ना जाने क्या हो गया है आजकल। खैर, पहला काम उसने ये किया कि साहुकार को रोजाना ब्याज देने से साफ मना कर दिया– 'इकट्ठा ब्याज फसल पर ही दूंगा।'

साहुकार बोला– 'फिर ब्याज पर भी ब्याज लगेगा।'

चम्पालाल ने मंजूर किया। फसल आने में अभी दो महीने की देर थी चम्पालाल को समझ नहीं आ रहा था कि गाडी कैसे पटरी पर लाऊं।

चम्पालाल तो मानो स्वर्ग में आ गया था। कहां रामली और कहां जोहारबाई! कहां बासी जलेबी और कहां ताजा गरम रस से भरी इमरती।

आखिर उसने निर्णय लिया।जोहराबाइ को समझाना पड़ेगा कि घर का खर्चा कम करे।

रात को अपनी महारानी को खूब प्यार जताते हुए चम्पालाल ने कहा– 'जोहार, इस महिने हमें तेल–घी का और बाजार का खर्चा कम करना पड़ेगा। दुकान में बहुत मद्धीवाडा है। फसल भी कमजोर है। इस साल गाड़ी बेलेन हो रही है।'

सुनकर पहले तो जोहारबाइ बिफरी, दुहाई देने लगी– 'मैं तो कुछ भी खर्च नहीं करती।' फिर अचानक कुछ सो कर यकायक चुप हो गई।

अगले कुछ दिन थोडे ठण्डे–ठण्डे, रूखे–रूखे गुजरे। नोन तेल लकडी के फेर में तो बाजबहादुर भी अपनी मोहब्बत भूल जाता, चम्पालाल कौन से खेत की मूली था। अचानक एक दिन जोहराबाई बापू के घर जाने की जिद करने लगी। चम्पालाल ने भी खुशी–खुशी भेज दिया, कहा– 'शाम को आ जाना।' जोहराबाइ दूसरे दिन का कहकर चली गई।

उस रात चम्पालाल अकेला होने से कुछ परेशान भी रहा और खुद को कुछ आजाद भी महसूस किया। रामली की भी याद आई। चम्पालाल समझ ही नहीं पा रहा था कि वो सुखी है या दुखी! वो पहले अच्छा था या अब अच्छा है। इसी दुविधा में रात बिताई।

दूसरे दिन जोहार बाई आ गई। कीसना बा भी साथ में आये थे। वो केवल याद दिलाने आये थे कि 'फसल आने वाली है, रूपयों की सख्त

जरूरत है, कब तक हो जायेंगे, जल्दी इन्तजाम करो।' चम्पालाल ने उनकी आवभगत करी विश्वास दिलाया कि काम हो जायेगा।

अब चम्पालाल फिर दुकान में मेहनत करने लगा, ताकि घर खर्च और कुछ ब्याज इतना तो दुकान में से निकल जाये, ताकि फसल आये तो कीसना बा को बाकी पंद्रह हजार चुका सके। चम्पालाल के दिलो दिमाग से इश्क का भूत पूरी तरह निकल चुका था। रात को घर आता। जोहारबाई पर नजर पड़ती तो पंद्रह हजार पहले याद आते, ना खाना अच्छा लगता ना रात को नींद आती। जोहारबाई कुछ लाड भी लड़ाती तो ऐसे लगता जैसे कोई भूतनी लिपट रही हो।

अब तो दिन में कई छोटी–मोटी बातों पे झगड़े भी होने लगे। हर बात पर खिंचातानी होना अब आम बात हो गई थी। चम्पालाल फसल का रास्ता देख रहा था। 'पंद्रह हजार चुका दूं फिर साली को सुधार दूंगा।'

आज का दिन चम्पालाल के लिये बड़ा बुरा निकला। जमीन की बटाई वाला आया था, पूरा हिसाब जोड़कर लाया था। फसलों में कीड़ा लगने से दवाइयों का खर्चा ज्यादा हो गया था, फसल भी कमजोर थी, सब खर्चा काटते बीस हजार की कमाई हुई। चम्पालाल के हिस्से के दस हजार लेके आया था वो। जबकि चम्पालाल को पूरा भरोसा था कि तीस चालीस हजार की फसल होगी, कीसना बा से पिंड छूट जायेगा। अब क्या होगा ? कीसना बा के पंद्रह हजार सेठ के दस हजार और ब्याज दोनों को देना जरूरी है। रात को ही जोहराबाइ ने अल्टीमेटम दे दिया था कि मेरे बापू के पूरे पंद्रह हजार दो–चार दिन में दे ही देना। क्या फिर कोई नया साहूकार ढुंढना पडेगा ? तभी शान्तु सेठ, पुराना साहुकार दस हजार मूल ओर दो हजार ब्याज कुल बारह हजार की चिट्ठी लेकर आ गया– 'आज ही देने पड़ेंगे।'

चम्पालाल ने समझाया कि पांच हजार तो नाथू से दिलवायेगा। लेकिन सेठ ने उसके कान के जाले साफ कर दिये। 'नाथू तो पिछले दो महीने से गांव से बाहर है। खुद की फसल पेटे परबारे किसी दूसरे से पहले ही उधार ले जा चुका है। नाथू से तेरे को कुछ नहीं मिलने का।'

चम्पालाल तो आसमान से गिरा और ऐसा कि नीचे टिकने को जमीन भी नहीं मिली और मिली भी तो सामने आंखे फाडे... घूरती हुई जोहराबाई– 'मेरे बापू के पैसे ना दिये तो देखना नासपीटे मैं तेरा क्या करूंगी।'

चम्पालाल भी गुस्से में था, बोल पड़ा– 'जो तेरे से बने वो कर लेना। जब पैसे आयेंगे तब दूंगा। ना तू तो मेरी घरवाली है...।'

'जब तक बापू के पूरे पैसे ना देगा, तब तक हक मत जताना मेरे ऊपर तेरी गुलाम नी हूँ। चार महीने से मजे ले रहा है मेरे। फोकट की समझ रखी है क्या।' और चिल्लाती–दहाड़ती जोहराबाइ शाम होते–होते छाती–माथा कूटते अपने घर जा चुकी थी। रात को कीसना बा भी आकर चेतावनी दे गये थे कि 'सुबह आठ बजे तक बाकी पैसे ला देना तो जोहरा आ जायेगी वरना...समझ लेना!'

रात भर चम्पालाल परेशान रहा। बिलकुल नींद नहीं आई। पैसों की जुगाड़ का कोई रास्ता ना दिखा। सोचते–सोचते आंखों में आंसू जरूर आ गये और उन आंसुओं में झिलमिल करती रामली और मदन की तस्वीर दिखी मन में पछतावा भी शुरू हुआ।

किस्मत का कुछ खेल अभी बाकी था। दूसरे दिन सुबह तो कुछ नहीं हुआ, लेकिन दोपहर में अचानक चाय के ठेले के सामने पुलिस की जीप आकर रुकी। पुलिस उतरी ओर उसे साथ ले गई। थाने जाकर पता चला कि उसने गांव की एक जवान औरत को अपने घर में जबरदस्ती बन्द कर के रखा, डरा–धमकाकर उसके साथ बलात्कार करता रहा। और इसी जुर्म में पुलिस ने उसे अरेस्ट किया है।

चकराता हुआ चम्पालाल हाथ जोड़े गिड़गिड़ाता रहा– 'साब, वो तो मेरी नातरे वाली लुगाई है। मैंने उसको रखा है।'

'ये सब गवाह–सबूत बाद में देना। अभी तो वो जोहारबाइ और उसका बाप रिर्पोट लिखवा के गये हैं।' थानेदार ने बड़ी बेरूखी से जवाब दिया।

'पर साब, वो पीछले चार महीने से मेरे घर में रह रही थी। सारे गांव को मालूम है। आप पता कर लो। और साब, आप भी तो आते थे मेरी चाय की दुकान पर आपने भी देखा होगा ?'

'अरे तो साले... हम आते थे तो क्या तेरे घर में झांकने आते थे ?' थानेदार ने झिडका– 'देखना सुनना अलग बात है, कागज पर प्रमाण अलग बात। तेरे पास कोई प्रूफ है कि वो तेरी घरवाली है ? हेडसाब बन्द करो साले को।'

चम्पालाल सकते में आ गया। दो दिन हवालात में रख के सीधा जेल भेज दिया गया। धारा 376, बलात्कार, गम्भीर अपराध। ओह .... एकदम

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

चम्पालाल की विचार यात्रा रुकी। हाथ की चाय वैसे की वैसी थी सामने रामसिहं हेडसाब खड़ा था।

'क्यों बे, अब पछता रहा है। खूब जवानी चढी थी बेटा, हो गया ढीला।' हँसते–हँसते हेडसाब तो चल दिया, पर चम्पालाल रो पड़ा आंख में आंसू आ गये।

आज सात दिन हो गये जेल में। रोते–रोते दिन निकल रहे हैं। ना तो जेल की रोटी अच्छी लगती है, ना ही रात को नींद आती है। घर याद आ रहा है, रामली याद आ रही है, मदन याद आ रहा है। खुद की बेवकूफी पर पछताना और रोना... यही कर रहा है वो... रोज। जेल वाले हेडसाब बता रहे थे कि '376 में जमानत भी मुश्किल से होती है, अभी भी मौका है, समझौता हो सकता हो तो कर ले, वरना मर जायेगा बेमौत।'

'क्या करूं ?' इसी सोच में था कि चौंक गया उसके नाम की आवाज लगी थी। उसने कान दिये, जगदीश की आवाज थी– 'चम्पालाल गांव बडगोंदा ...चलो मुलाकात आई है।'

कौन होगा ? चम्पालाल सोचने लगा। पिछले सात दिन में तीन चार खास दोस्त ही मिलने आये थे। आज कौन होगा ? सोचता हुआ चम्पालाल बाहर बडे गेट की तरफ बढ़ा और उसने गेट की जाली से जो देखा, भरोसा नहीं हुआ, उसकी आंखो में आंसू आने लगे। बाहर रामली और मदन दोनों खड़े थे रामली के हाथों में रोटी की पोटली। चम्पालाल को लगा, जैसे देवदूत आये हैं उसके दिल में रामली के लिये छुपा हुआ प्यार और मदन के प्रति स्नेह उछाले मारने लगा।

चम्पालाल की झुकी हुई गरदन और भींगती आंखे देखकर उस देहाती अनपढ कुरूप औरत का हाथ अपने आप बढकर उसे सहलाने लगा। चम्पालाल रो पड़ा। उसे लगा ये तो भगवान का हाथ है। वो गेट पर रुक ना सका। अन्दर आकर खूब रोया। किसी के चुप कराने से भी चुप ना हुआ। जैसे–तैसे शाम हुई। चम्पालाल का दिमाग एक ही बात सोच रहा था कि कैसे मुक्ति मिलेगी इस नरक से। वो रह–रहकर भगवान से माफी मांग रहा था। अचानक गेट से फिर आवाज आई– चम्पालाल बडगोंदा वाला .....मुलाकाती है ...।

अब कौन है ? क्या रामली अभी तक यहीं बैठी है। चम्पालाल असमजंस में गेट की ओर चला। बाहर देखा, नाथू था। एक क्षण तो गुस्सा आया फिर गुस्से को व्यर्थ जानकर कौतुहल से बोला– 'क्या हुआ नाथू, कहां था तू अभी तक ?

ताने–उलाहने के बाद नाथू ने बताया कि वो जोहारबाई से मिलकर आ रहा हे बहुत नाराज है वो। उसको तूने चार महीने तक वापरी ओर कीसना बा को टेम पे पैसा नही दिया । अब उनकी नीयत में खोट आ गई है, इसी लिये रिपोर्ट डाली है।

चम्पालाल नाथू के हाथ जोड़ने लगा– 'मेरे को बचा ले यार नाथू! मेरे को छुडा ले यहां से। तू मेरा दोस्त है यार!'

नाथु ने तुरन्त उपाय बताया– 'देख कीसना बा और जोहारबाई दोनो का गुस्सा बहुत तेज है। दोनों पैसों के दास हैं। तू बोले तो मैं राजीनामे की बात करूं, पर अब खर्चा ज्यादा लग जायेगा। पचास हजार से कम में कीसना बा मानने वाला नहीं है, और कुछ पुलीसवालों को भी देना पड़ेगा। कोरट मे बयान होने के पहले केस खतम हो जायेगा।'

'पर इतने पैसे मेरे पास कहां हैं यार, तुझे तो मालूम है ?'

'तू सोच ले, पैसे की व्यवस्था कर या फिर ये मान ले कि चार बीघा जमीन थी ही नहीं तेरे पास। जोहराबाई के नाम कर दे जमीन, और छुट्टी सब बात से। कल तक सोच ले, कल मैं फिर आऊंगा। और देख यार इतनी मेहनत कर रहा हूं तेरे लिये, मेरी दाडकी मत भूल जाना।'

चम्पालाल वापस अन्दर आया। वही असमंजस, वही क्या करना, क्या नहीं करना। किंकर्तव्यविमुढ।

साथी कैदी पुछ रहे थे– 'आज तो चम्पालाल की दो–दो मुलाकात आई। कौन–कौन था ?'

किसी जानकार कैदी ने चुटकी ली– 'सुबह पहली वाली औरत थी, और अब शाम को दूसरी वाली।'

रात भर चम्पालाल सोचता रहा– चार बीघा जमीन बड़ी या घर का सुख ? जेल से छुटकारा... रामली ओर मदन के साथ फिर सुखी जीवन ? आंखों में आंसू लिये चम्पालाल भगवान को धन्यवाद दे रहा था वो मान गया कि उसने गलती की रामली ओर मदन का दिल दुखाया तो भगवान ने उसे सजा दी अब जमीन जाती है तो जाये। चार बीघा जमीन जाती दिखी चम्पालाल को, पर तभी दिखा स्वर्गलोक जैसा वो दो कमरे का अपना घर जिसमें रामली ओर मदन दोनों उसका इन्तजार कर रहे थे। वो निर्णय पर पहुंच गया। उसका सारा असमंजस दूर हो गया था। उसने तय किया कि नाथू को आते ही राजीनामे के लिये बोल दूंगा और ये भी तय किया कि दूसरी औरत का चक्कर बहुत खराब होता है। औरत एक ही भली।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कहानी

ऊषा कुशवाहा
जमशेदपुर (झारखंड)
kushwahausha64@gmail.com

जन्मदिन

बसंती अपने सात वर्षीय बेटे सोनू को लेकर ऑटो में बैठी तो वह बिल्कुल निढ़ाल सा हो रहा था। बस... रस–रहकर कभी–कभी करांह उठता। उसकी करांह बसंती के हृदय में हूक सी पैदा कर रही थी।

सोनू बसंती का सबसे छोटा और इकलौता पुत्र है। इससे बड़ी दो बेटियाँ ही हैं। बसंती खन्ना साहब के बंगले में काम करती है तथा उन्ही के बंगले में बने सर्वेंट क्वार्टर में अपने परिवार सहित रहती भी है। उसका पति दिहाड़ी मजदूर है। अक्सर दिन भर हाड़तोड़ मेहनत के बाद शाम को पैसा हाथ में आते ही, थकान मिटाने शराबखाना मे जा बैठता है। खन्ना साहब का एक ही बेटा है जो अमेरिका में नौकरी करता है और परिवार संहित वही रहता है। ऐसे में खन्ना दंपत्ति के अकेलेपन का साथी है रॉकी, उनका पालतू कुत्ता। उनके लाड–प्यार का अकेला हकदार! मिसेज खन्ना का तो बहुत ही चहेता है। बसंती को जितनी सेवा खन्ना दंपत्ति की करनी पड़ती हैं, उससे कुछ कम काम रॉकी का नही करना पड़ता। वक्त पर दूध गर्म करना, मासं पकाना, उसके जूठे बर्तन मांजना वगैरह। उसे

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नहलाने–खिलाने का काम मिसेज खन्ना स्वयं किया करती है। रॉकी के कामों को करने के लिए बसंती को कोई अतिरिक्त पैसे नही मिलतेय पर उसने इन कामों करने मे कभी बुरा नहीं माना पर आज जो हुआ...!

रॉकी का जन्म किस दिन हुआ इसकी सही जानकारी तो किसी को नही, पर जिस दिन वह खरीद कर इस घर में लाया गया, उस दिन को उसके जन्मदिन के रूप मे मनाया जाता है। रॉकी का जन्मदिन करीब था, तैयारी जोर–शोर से चल रही थी। इस मौके पर मेहमान तो अधिक नहीं होते, बस कुछ खास लोगों को ही बुलाया जाता, किन्तु जश्न का इंतजाम बढ़ियां होता। इन दिनों बसंती का काम भी बढ़ जाता।

एक दिन शाम को बसंती जब घर पहुंची, उसका बेटा सोनू दरवाजे पर बैठा गुब्बारा फूला रहा था। उसे देखते ही उसकी ओर दौड़ा। बसंती ने जैसे ही उसे गोद मे उठाया, उसकी गालों को प्यार से सहलाते हुए बोला, ‘माँ! मेरा जन्मदिन कब आएगा...?’

थकावट के कारण बसंती ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

सोनू ने मचलते हुए अपना सवाल फिर दोहराया, ‘बोलो न माँ! मेरा जन्मदिन कब आएगा ?’

‘क्या करना है तुझे जानकर ?’, बसंती ने झुंझलाते हुए कहा।

‘मुझे भी अपना जन्मदिन मनाना है। आज दीपक का जन्मदिन है। उसने मुझे बुलाया था। वहाँ राजू, सूरज और आकाश भी थे। उसने हमें केक खिलाया, खीर खिलाई और देखो, यह गुब्बारा भी दिया।’ सोनू ने प्रसन्नता से गुब्बारा दिखाते हुए कहा। थोड़ी देर बाद चहकता हुआ फिर बोला, ‘जानती हो माँ, दीपक ने नये कपड़े पहन रखे थे। हम सबने मिलकर उसके लिए हैप्पी बर्थ डे गाना भी गाया। कितना खुश था दीपक। हमें भी बड़ा मजा आया। बोलो न माँ मेरा भी जन्मदिन मनाएंगे न? मैं भी अपने सब दोस्तों को बुलाऊंगा आहा३. कितना मजा आएगा !’

दीपक पड़ोसवाले सर्वेंट क्वार्टर मे रहता है। उसकी माँ भी बंगले में काम करती है तथा पिता किसी जुते के दुकान में काम करते हैं। बंधी–बंधाई तनख्वाह है। बसंती बेटे को क्या कहे यह सोच ही रही थी कि रमेश आ गया। सोनू अपने पिता को आया देख उसकी ओर लपका। रमेश ने आज शराब नही पी थी। शायद कहीं काम ही न मिला हो३ उसने सोनू को गोद मे उठा लिया। अब सोनू पिता से अपनी बात मनवाने की कोशिश

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

करने लगा। वह उसे गोद में लिए बसंती के पास आ बैठा, ष्सुना तुमने सोनू क्या कह रहा है ?'

'हाँ सुन रही हूँ पर यह सब बड़े लोगों की बातें हैं, हमारे पास इतना पैसा कहां है ?' बसंती ने मायूसी भरे स्वर में कहा।

'हूँ... वैसे सोनू का जन्मदिन है कब ?' कुछ सोचते हुए रमेश ने पूछा।

'बस आज से चार दिन बाद ही तो है।'

'चार दिन बाद! यानी दस तारीख को... उस दिन तो मुझे एक जगह से मजदूरी मिलने वाली है।'

'क्या फायदा ? सारे पैसे तो तुम शराबखाने में दे आओगे।'

'नहीं! उस दिन मैं पैसे लेकर सीधे घर आऊंगा! तू तैयारी कर, हम अपने बेटे का जन्मदिन अवश्य मनाएंगे।' रमेश ने दृढ़ स्वर मे कहा।

पिता कि बात सुन सोनू गोद से उतर कर खुशी से उछलने लगा।

बसंती को रमेश की बातों पर कोई भरोसा न था, पर उसे याद आया उसी दिन रॉकी का भी जन्मदिन हैं। उस दिन मिसेज खन्ना बख्शीश देती है। वह इतनी अच्छी तरह से काम करेगी कि वे खुश होकर अच्छी बख्शीश दें। केक मिठाइयां तो देंगी ही, बख्शीश के पैसे से एक शर्ट और कुछ गुब्बारे ले लुंगी बच्चे का मन रह जाएगा।

दूसरे दिन से बसंती जी–जान लगा कर बंगले में काम करने लगी। इधर घर मे दोनों बेटियां पूरे उत्साह से तैयारी में जुट गई। कोठरी का एक–एक कोना, एक–एक सामान झाड़–पोंछ कर चमकाया जा रहा था। घर मे पहली बार किसी का जन्मदिन मनाया जाने वाला था। सभी के मन में उत्साह था। रात मे जब सब इकट्ठे होते, उस दिन की तैयारी की चर्चा घंटों होती। सोनू खुशी से चहकता–इतराता अपने दोस्तों को अपने जन्मदिन पर आने का निमंत्रण कई–कई बार दे चुका था।

दस तारीख को बसंती बेटियों को सारे काम समझा, शाम को जल्दी लौटने का वादा कर बंगले पर चली गई। दिन भर उसने पूरे मनोयोग से काम किया। बख्शीश भी उसे अपेक्षा के अनुरूप ही मिली। उसने मन ही मन हिसाब लगाया इतने मे एक शर्ट और कुछ गुब्बारे तो आ ही जाएंगे। कुछ पैसे बचे तो थोड़ी और मीठाई भी ले लुंगी, मीठाई के लिए बच्चे कितना मचलते है।

शाम को मिसेज खन्ना ने रॉकी के गले मे नई घुघंरदार पट्टा पहना, माथे पर जन्मदिन की टोपी पहनाई। कुछ ही देर में मेहमान आने लगे। जो आता रॉकी के सामने रंग–बिरंगा उपहार का पैकेट रख उसे छूने–सहलाने का प्रयास करता। एक तो माथे पर पहने टोप से उसे उलझन हो रही थी, ऊपर से उसके इर्द–गिर्द इतने लोगों की हलचल, चारों ओर रंग–बिरंगे पैकेटों का भरमार! रॉकी कभी मिसेज खन्ना के गोद मे दुबक जाता तो कभी भय मिश्रित खीझ से भर कर कमरे में चक्कर काटने लगता।

सभी मेहमान आ चुके थे। बसंती को बस केक कटने का इंतजार था। उसके बाद वह इजाजत ले लेगी, उसे अभी बाजार भी जाना है। रमेश का क्या भरोसा एक बार शराबखाने में बैठा तो सब भूल, खाली जेब लिए आधी रात के बाद ही घर लौटेगा। मेरा बच्चा कितना खुश है आज३ अब हम हर वर्ष उसका जन्मदिन मनाएंगे, थोड़े पैसे पहले से बचा कर रखुगीं तो हो जाएगा। इसी बहाने बेटियां भी खुश हो लेगीं, घर मे थोड़ी रौनक आ जाएगी, वरना हमारा क्या... पूरे साल एक ही मौसम!

रमेश के हाथ में मजदुरी के पैसे आते ही उसके कदम बहकने लगे। तभी सुबह सोनू द्वारा कहे शब्द उसके कानों मे गूंज उठे 'पापा आज मेरा जन्मदिन है, जल्दी घर आना, भूलाना नहीं।' उसने होठों पर जीभ फेरते हुए बाजार का रूख किया। उसने केक खरीदा, कुछ मिठाईयाँ ली, फिर सोनू के लिए एक शर्ट–पैंट देखने लगा। तभी बगल मे खिलौने की दुकान पर टगीं, प्लास्टिक की बैट पर उसकी नजर पड़ी। उसे याद आया, सोनू एक लकड़ी के तख्ते से दिन भर क्रिकेट खेलता रहता है। रमेश ने एक बैट भी खरीद ली। घर पहुंचा तो इतने सारे सामान एक साथ देख सोनू खुशी से उछल पड़ा। नये कपड़े पहन बैट को लहराता, घुमाता वह बेसब्री से माँ का इंतजार करने लगा। कुछ ही देर में उसके मित्र भी आ गए। अब सोनू से और इंतजार नही हो सका। वह हाथ मे बैट थामे खुशी से उछलता हुआ माँ को बुलाने बंगले की ओर चल दिया।

बंगले मे इतने सारे लोगों को देख सोनू घबरा गया, वह सबकी नजरों से बचता–बचाता धीरे–धीरे अंदर की ओर सरकने लगा। किन्तु रॉकी ने उसे ऐसा करते देख लिया। वह भौंकता हुआ उसकी ओर दौड़ा। रॉकी को यूं अपनी ओर आता देख सोनू डर गया। उसने घबरा कर हाथ में पकड़ा बैट रॉकी की ओर फेंका... बैट सीधे रॉकी को जा लगी, वह को।

कों३ करता मिसेज खन्ना की ओर दौड़ा। यह देख मिस्टर खन्ना ने सोनू के गाल पर एक जोरदार तमाचा जड़ दिया। मिसेज खन्ना बिल्कुल आपे से बाहर हो उठी। उन्हें मिस्टर खन्ना द्वारा जड़े गये तमाचे से सोनू की गलती कहीं अधिक लगी, सो उन्होंने गाल पकड़ भय से कांपते सोनू को बाहर की ओर धक्का दे दिया। उसका सिर दरवाजे की कुंडी से टकराया और खून बह निकला। शोर सुन बसंती हॉल मे आई, वहाँ का दृश्य देख उसकी चीख निकल गयी। उसने सोनू को गोद मे उठाया और बदहवास सी डाक्टर के पास भागी। जख्म गहरा था टांके लगाने पड़े। डाक्टर ने दो–तीन घटें लीटा कर रखने के बाद ही घर ले जाने की इजाजत दी।

बसंती घर पहुंची तो देखा, रमेश बाहर ही लुढ़का पड़ा था। दरअसल जब बसंती और सोनू काफी देर तक नहीं आए तो वह बंगले की ओर गया था। वहां घटना की जानकारी मिलने पर सीधे सरकारी अस्पताल गया। वहां उन्हें न पाकर कुछ देर यूँ ही सड़क पर इधर–उधर भटकता रहा। फिर क्रोध से भरकर शराबखाने में जा बैठा। जमकर शराब पीने के बाद लौटा और बंगले के गेट पर खड़े होकर गालियाँ बकने लगा। अंदर बज रहे संगीत के कारण मालिकों तक उसकी आवाज नहीं पहुंच पाई। चौकीदार ने देखा तो कोठरी तक छोड़ गया। कोठरी के बाहर बैठा कुछ देर तो वह कभी सोनू का नाम ले–लेकर रोता... तो कभी मालिकों को गाली बकता रहा, फिर वहीं लुढ़क गया।

अंदर कोठरी में नंगे फर्श पर पड़ी दोनों बेटियां सो रही थी। जिनके गालों पर आँसुओं के बह कर सुख जाने के निशान साफ नजर आ रहे थे। एक कोने में कुछ फुलाए हुए गुब्बारे पड़े थे। कमरे में चालीस वाट् के बल्ब की पीली सी रौशनी पसरी हुई थी। एक अजीब सा सन्नाटा व्याप्त था, बस बीच–बीच में रमेश कुछ अस्पष्ट सा बड़बड़ा उठता, जिसमें अब सोनू के कराहने की आवाज भी शामिल हो गई थी। सोनू की नई कमीज उसके रक्त से भिंगी हुई थी। बसंती ने घड़ी देखी, रात के एक बज चुके थे। उसके गले से एक आह! सी निकल गई। सोनू का जन्मदिन बीत चुका था! बंगले से संगीत के साथ बीच–बीच में ठहाके की आवाजें अब भी आ रही थी।

***

लघुकथा

रोहित यादव
ग्राम व पोस्ट : पतिला गौसपुर
जिला : आजमगढ़, उत्तर प्रदेश 276 121
rohityadav01071992@gmail.com

ट्रेन का सफर

जब कभी पीछे मुड़कर देखता हूँ तो ऐसा लगता है मानो अभी कल ही की तो बात है,मित्र सुनील जी के कमरे से शाम करीब सवा सात बजे निकला टिकट कन्फर्म नहीं था। मन में संशय, आखिर कैसे जाऊंगा, ऊहापोह की स्थिति थी। ऐसी परिस्थिति में कैण्ट रेलवे स्टेशन पहुंचा। अब तो टिकट काउंटर भी खुलने लगा था काउंटर पर मैंने पूछा– 'सर, पौने नौ की ट्रेन है... टिकट मिलेगा क्या ?'

वह बोला नहीं। इतने में एक यात्री मिला और वह मुझे टिकट काउंटर पर देख बोला, 'क्या ? आपके पास टिकट नहीं है ?'

मैंने कहा– 'जी नहीं, परंतु मुझे तो जाना ही है, चाहे जैसे भी।' क्योंकि कार्यस्थल पर उस दिन का आकस्मिक अवकाश लग चुका था और अगले दिन भी अवकाश लगे यह मैं कतई नहीं चाहता था।

तत्काल उसने भी जवाब दिया– 'जाना तो मुझे भी है, तो आओ साथ में चलते हैं। यदि टीटी मिलता है तो कुछ ले दे के मसला सुलझा लिया जाएगा।' यही सब बातें करते हुए हम दोनों ने स्टेशन में प्रवेश किया।

स्टेशन पर भीड़ थी। दोनों का साथ बस इतने ही समय का था, क्योंकि प्लेटफॉर्म पर चढ़ते समय वे भाई साहब किसी और डिब्बे में चढ़

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

गए और मैं दूसरे डिब्बे में चढ़ गया। देर तक सीट की तलाश में इधर–उधर भटकता रहा। कुछ समय बाद मुझे सीट मिल ही गई।बैग सीट पर रखा, चादर निकाला और लेट गया।

नींद नहीं आ रही थी डर से। क्योंकि टिकट नहीं था, परंतु सोने का नाटक कर रहा था। यही कोई दो या तीन स्टेशन बीते थे। जिसका डर था वही हुआ। टीटी सबका टिकट चेक कर रहा था। अपर बर्थ पर मैं लेटा था। मुझे भी आवाज दिया– 'चल टिकट दिखा।'

'साहब, मेरा टिकट कन्फर्म नहीं है।' मैंने मोबाइल में मैसेज दिखाते हुए बोला, और झट पॉकेट से सौ की नोट निकालकर उसके हाथ में पकड़ाने लगा।

वह बोला– 'इतने से नहीं होगा।' और दो उंगलियों का इशारा करके चला गया, और दूसरे वाले को भेज दिया।

मैंने तो इशारा समझ लिया था। फिर उसने भी वही शब्द दोहराया तत्क्षण मैंने सौ की नोट के साथ पचास का नोट और थमा दिया।

'बस साहब, मेरे पास इतना ही है।'

वह मान गया और चला गया।

इधर यात्रियों ने उथल–पुथल मचाना शुरू किया– 'आपने ऐसे कैसे दे दिया, उसने कुछ लिखित भी नहीं दिया, आगे कोई और आ गया तो क्या जवाब दोगे... फिर वह भी वही इशारा करेगा।'

सभी यात्री अनेकानेक प्रकार से मुझ पर बरस रहे थे। मैं चुपचाप सुन रहा था, परंतु इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। इन सब बातों से ऊबकर अपनी सीट पर सो गया और नींद खुली तो देखा की ट्रेन उस स्टेशन पर खड़ी है, जहां मुझे उतरना था।

***

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

रीटा मक्कड़
rita.sandeep.makkar@gmail.com

खाली कोना

आज नीरजा की आंखों से नींद कोसों दूर भाग गई थी।दिमाग को विचारों की उथल पुथल ने घेर रखा था। उसको खुद को ही समझ नही आ रहा था कि वो अंदर से खुश है या उदास है। एक बार कहीं पढ़ा था कि जिन्दगी एक किताब है जिसमे हर दिन हम नए पन्ने पलटते हैं और पढ़ते हैं ज्यों ज्यों इसमें हम नए पन्ने पढ़ते जाते हैं पुराने शायद धुँधले पड़ते जाते हैं। लेकिन कुछ पन्ने या शायद कुछ यादें ऐसी अवश्य होती हैं जो उम्र भर इंसान के साथ चलती रहती हैं। फिर चाहे वो कड़वी हों या मीठी। जिन्दगी में चाहे सब कुछ मिल जाये वो यादें मन के एक खाली कोने में हमेशां अपनी जगह बना कर रखती हैं और कभी न कभी किसी अकेले पन के पलों में या तो वो चेहरे पर मुस्कान लाती हैं या फिर आंखों को भिगो जाती हैं। लेकिन आज तो .... आज का दिन तो समझ से परे था। जब उमर के इस पड़ाव पर वो उस किताब के जिन पन्नो की स्याही ही मिटा चुकी थी। वो फिर से उसके सामने इस तरह दोबारा जाग्रत होंगे ये तो उसने कभी सोचा भी नही था।

आज अचानक से वो नाम जो कभी उसके दिल मे बसा करता था इस तरह से उसके सामने आ गया था कि वो तो हक्की बक्की ही रह गयी थी। नाम के साथ फोन नम्बर, और जब उसने उस नाम को 2..3 बार पढ़ा तो उसका दिल धक धक करने लगा कि हो न हो ये वही होगा। क्योंकि उसको पता था कि उसने कॉलेज की पढ़ाई करने के बाद अपने पापा का बिजनेस जॉइन कर लिया था। लेकिन साथ साथ उसने एस्ट्रोलॉजर और वास्तु की पढ़ाई भी शौकिया तौर पर की थी और इस काम से लोगों की मदद करके उसे बहुत खुशी मिलती थी।

उसकी एक दोस्त ने जब उसको बताया कि उसने अपना घर बनाने के लिए किसी की वास्तु में मदद ली है और वो बहुत अच्छा एस्ट्रोलॉजर भी है तो उसने भी अपनी दोस्त को उसका नम्बर भेजने के लिए कहा। जब

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

उसने अपनी समस्या के लिए या यूं कहिये कि अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए फोन लगाया तो वो एक ही बार मे उस आवाज को पहचान गयी । फिर बातों का ऐसा सिलसिला शुरू हुआ कि दोनों को ही समय का पता ही नही चला। वो कहते हैं ना कि किसी–किसी की जिंदगी मे काश ...काश ही रह जाता है।काश उस समय दोनो में से किसी ने पहल की होती। काश दोनो ये ना सोचते कि पता नहीं वो मुझसे प्यार करता है या करती है या नही तो आज जिन्दगी की तस्वीर कुछ और ही होती। और आज उम्र के इस पड़ाव पे आकर पता चला कि वो भी उससे उतना ही प्यार करता था जितना वो करती थी। लेकिन तीस साल पहले समय ही ऐसा था कि माँ बाप ने जब नीरजा की शादी कहीं और कर दी तो उसने भी माँ बाप की मर्जी से ही शादी कर ली और दोनो ने ही अपने अधूरे प्यार को अपने दिल के एक कोने में दबा दिया और अपनी जिंदगी मे आगे बढ़ गए।

अब जब सामने आए भी तो उस समय जब जिन्दगी में एक ठहराव सा आ जाता है। किसी से कोई शिकवा, शिकायत नही रहती। दोनो ने अपनी अपनी बातें करके अंत मे यही फैसला किया कि वो कभी भी सामने आएंगे तो किसी पर जाहिर नही होने देंगे कि वो एक दूसरे को जानते हैं और इन यादों को बाकी की जिंदगी फिर से दिल के उसी कोने में वापिस दबा देंगे। सारी रात नीरजा कभी उन मीठे पलों को याद करके मुस्कुराने लगती और कभी उदासी से उसकी आंखें भीग जाती कि काश हम कह पाते। विचारों के इन्ही उतार चढ़ाव में कब सुबह हो गयी पता ही नही चला। खिड़की से जब भोर के उजाले की किरणें उसके कमरे में आई तो उसने पास में सोए हुए अपने पति का चेहरा देखा कितना शांत और बेफिक्र। उसने हाथ जोड़ कर भगवान का शुक्रिया अदा किया और चल पड़ी अपने रोज के कामों की शुरुआत करने, लेकिन आज मन मे एक सकून था। नहीं तो सारी जिंदगी मन में ये उलझन तो रह ही जाती कि जिससे वो इतना प्यार करती थी उसके मन मे भी उसके लिए कुछ था भी कि नहीं।

अब मौत भी आ जाए तो कोई गम नही...!!! कम से कम मरने से पहले दिल का कोई कोना खाली तो नही रहेगा।

***

फार्म – 4

स्माचार–पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून 1956 के आठवें नियम के अन्तर्गत **'मधुराक्षर' त्रैमासिक पत्रिका** से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का आवश्यक विवरण–

1. **प्रकाशन का स्थान : जिला कारागार के पीछे,**
   9 ब, मनोहर नगर,
   फतेहपुर (उ.प्र.) 212601
2. **प्रकाशन की आवर्तिता : त्रैमासिक**
3. **प्रकाशक/मुद्रक का नाम : बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
4. **राष्ट्रीयता : भारतीय**
5. **सम्पादक का नाम : बृजेन्द्र अग्निहोत्री**
6. **राष्ट्रीयता : भारतीय**
7. **पूरा पता : जिला कारागार के पीछे,**
   9 ब, मनोहर नगर,
   फतेहपुर (उ.प्र.) 212601
8. **कुल पूंजी का 1 प्रतिशत**
   से अधिक शेयर वाले
   भागीदारों का नाम व पता : स्वत्वाधिकारी बृजेन्द्र अग्निहोत्री

*"मैं **बृजेन्द्र अग्निहोत्री** घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।"*

–बृजेन्द्र अग्निहोत्री

लघुकथा

मनीष कुमार सिंह
एफ–2, 4/273, वैशाली,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 201 010
manishkumarsingh513@gmail.com

झुग्गी के चूहे

नवरात्र में हर बार की तरह बच्चे झुण्ड़ में निकले। रंग–बिरंगी पोशाक पहनने के बाद भी शक्ल–सूरत और बोलचाल से वे आसानी से झुग्गी वालों की औलाद के रुप में पहचाने जा सकते थे। फ्लैट वालो का आपस में मेलजोल कम था। सुरक्षा गार्ड कुछ बच्चियों को इकट्ठा कर पाया। छुट्टी के दिन देर से उठने वाले बच्चे बुलाने पर भी नहीं आए।

''चप्पल बाहर उतार कर आना।'' तराशी हुई भौंहों वाली मेमसाहबनुमा स्त्री ने पेशानी पर तनिक बल लाकर भीतर घुसते बच्चों से कहा। लड़कियों के साथ उनके एकाध छोटे भाई भी अन्दर आ गए। चटाई पर बैठकर सभी पूड़ी–चना खाने लगे। वे उन बच्चों की तरह नहीं थे जो बहुत जोर देने पर भी एकाध कौर से ज्यादा नहीं खाते थे। निम्मी अपनी छोटी बहन सोना से मजाक में बोली। ''अपनी जीभ बचाते हुए चबाना चाहिए।'' जब सभी सीढ़ियों पर शोर मचाते हुए उतर रहे थे तो वह अपनी बहन का हाथ पकड़कर सावधानी से उतर रही थी। मेमसाहब ने कहा। ''शी इज वेल बिहेव्ड़।''

बीमार बापू की दवा के लिए डिस्पेंसरी की लाइन में मॉ उसे खड़ा करके चौका–बर्तन करने चली जाती। वह जिम्मेवारी के एहसास से देर तक खड़ी रहती। बस पैरों में झनझनाहट होने पर ही वह हिलती। जागरण वाले भण्डारे में बाकी कतारों जैसा खड़ा होने में बोरियत नहीं होती थी। पूरे घर के लिए दोनों हाथों में खाने का सामान लाने का गुरुत्तर भार उस पर है।

फर्श पर चूहों की हरकतों से बापू का ध्यान आकृष्ट हुआ। ''यहॉ बस्ती बसने से पहले लुटेरे चले आते हैं। परसों चूहों ने रोटी कुतर दी थी। दरवाजा बंद करके रखा कर।''

''बापू इनके बिल जमीन में हैं। वे वहॉ से आते हैं।'' उसने कहा। चूहों के लिए दरवाजे से आना जरुरी नहीं है। निम्मी ने चूहेदानी में फँसे एक चूहे की कातर ऑखे देखी थी। वह बिना किसी से कहे फौरन चूहेदानी उठाकर ले गयी और दूर जाकर उसका दरवाजा खोल दिया।

आज सुबह से बस पूड़ी–चना खाने को मिला था। निम्मी ने सबकी नजरों से बचाकर दो पूड़ियॉ कागज में लपेट कर ताक पर छिपा दी। रात में खाने का इरादा था। मॉ के आने में पता नहीं कितनी देर लगेगी। कहते हैं कि भूखे पेट नींद नहीं आती है लेकिन उसकी ऑख लग गयी। नींद में उसे लगा कि वह खूब भूखी है। भूख से बेहाल यूँ ही मुँह चला रही है। अचानक न जाने कहॉ से जबड़ों के बीच एक पूड़ी आ गयी। उसकी नींद खुल गयी। सपना ही था। पूड़ी नदारद थी। बहते ऑसूओं को बिना पोछे वह सोने की कोशिश करने लगी।

अंधेरा होते ही खटपट की आवाज होने लगी। बापू ने बेचैनी से करवट बदलते हुए कहा। ''अरी निम्मी जरा देख चूहे क्या कुतर रहे हैं। पिछले हफ्ते मेरा कुरता की जेब के साथ बीड़ी का बंडल भी कुतर डाला था। आजकल चूहे तम्बाकू के शौकीन हो गए हैं।''

निम्मी ने अंधेरे में टटोलते हुए माचिस ढूँढ़कर डिबरी जलायी। एक कोने में सोना कागज में लिपटी पूड़ी को खोलकर खा रही थी। खाने की बजाए कुतरना कहा जाए तो ज्यादा दुरुस्त होगा। ''अरे तू...!'' अपनी पूड़ी चट करता देखकर वह चिल्लाना चाहती थी लेकिन छोटी बहन की कातर ऑखें देखकर किसी अनजान शक्ति के द्वारा खामोश हो गयी। ''चूहे थे बापू। रोशनी देखकर भाग गए।'' वह डिबरी को दूर ले गयी। अंधेरे में सोना ज्यादा सहज रहेगा।

कसक

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-0-3

संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

लघुकथा

साल वनों के साये

उर्मिला शुक्ल
urmilashukla20@gmail.com

उसकी जीप ने जैसे ही उस वन खंड में प्रवेश किया यसब कुछ बदला बदला सा नजर आने लगा था। तपती गर्मी से राहत देती साल की हरीतिमा और उसके फूलों की लालिमा मन मोहने लगी थी। पतली सी सड़क के दोनों ओर लगे साल के वृक्षों के साथ –साथ आम, इमली और जामुन के वृक्ष और उनके गले में गलबहियाँ डाले बाँसों के झुरमुट। लग रहा था जैसे हरियाली का एक वितान–सा तन गया हो। जीप से बाहर निहारती उसकी आँखों को एक सुकून सा मिला यवरना अब तक का सफर तो गर्रा–धूँका से उलझते हुये ही कटा था। जीप अब सर्पीले रास्ते पर बढ़ रही थी। यहाँ हिमालय की तरह ऊँची –ऊँची चोटियाँ तो नहीं थीं और न ही उन पर बर्फीले सौंदर्य की आब थीय मगर फिर भी सतपुड़ा की ये ऊँची–नीची पहाड़ियाँ मन को बाँधे ले रही थीं। ऐसे में उसे भवानी प्रसाद मिश्र की कविता याद हो आयी –

'सतपुड़ा के घने जंगल
ऊँघते अनमने जंगल।'

वह जब भी इस कविता को पढ़ती, उसका मन करता वो सतपुड़ा के उन वनों में जा पहुँचे, उसकी सघनता को अपनी आँखों से महसूसे। सतपुड़ा के जंगल ही नहीं, वहाँ का जन जीवन भी उसे अपनी ओर खींचता रहा है। इसीलिये तो जब उसके विश्व विद्यालय में 'जनजातीय समाज और संस्कृति' विषय पर शोध की योजना बनी, तो उसने अपने शोध के लिये हिमालयीन क्षेत्र को न चुनकर, इस क्षेत्र को चुना और चल पड़ी, इस जंगल की ओर। दिल्ली से बिलासपुर और फिर इस वन प्रांत का सफर।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

वह जानती थी इस काम के लिये बहुत भटकना पड़ेगा य मगर यह भटकाव मंजूर था उसे। शोध की इस योजना के लिए पाँच गाँवों का अध्ययन करना जरूरी है, मगर मैं अपने को इस संख्या तक ही सीमित नहीं रखूँगी।

बैगा! सतपुड़ा की इस जनजाति के विषय में अधिक से अधिक जानकारी जुटानी है मुझे।' वह देर तक अपने प्रोजेक्ट के विषय में सोचती रही। अपनी सोच से उबरी, तो गौर किया य वनों की सघनता कुछ कम हो चली थी। अब साल और बाँस की जगह मोटे तने वाले पेड़ नजर आने लगे थे। सभी पेड़ लगभग पत्र विहीन हो चुके थे। फिर भी यह पतझरी सौंदर्य भी मोहक था। उसके बाद तो जो हुआ उसकी उसने कल्पना ही नहीं की थी। हवा का एक तेज झोंका आया और उसे एक मादक गंध से सराबोर कर गया। फिर कुछ आगे बढ़ते ही पूरी फिजा में वही गंध पसर गयी।

'ये किस चीज की सुगंध है।' उसने जीप चालक से पूछा।

'मैडम ये कच्चे महुये की सुगंध है। इस समय हम महुये के जंगल से गुजर रहे हैं। देखिये न सड़क के दोनों ओर महुये ही महुये बिखरे हुये हैं।'

उसने बाहर देखा हल्की सी हरीतिमा लिये हुये महुये के सफेद फूलों से पूरी सड़क अटी पड़ी थी और मंद–मंद चलती हवा उसकी मादकता का पैगाम बाँट रही थी। महुए के पेड़ तो उसने पहले भी देखे थे य मगर महुये का जंगल ? मीलों तक सिर्फ महुआ ही महुआ ! यह मंजर तो कल्पना से भी परे था। उसका मन किया कि वो महुआ बीन कर खाये। सो–

'जरा जीप रोकिये न ?' उसने चालक से कहा तो उसने साइड लेकर जीप रोक दी।

'आप मत उतरिये। मैं ले आता हूँ।'

'नहीं मुझे खुद बीन कर खाना है।' वो जीप से उत्तर पड़ी और सड़क पर पड़े महुये में से ताजे ताजे महुये चुनने लगी।

'अरे ये सड़क पर पड़ा महुआ मत उठाइये। दिन भर की धूप से इसका रस सूख गया होगा। उधर कुछ भीतर जाकर, पत्तों पर पड़े महुये बीनिये उनमें अभी भी रस भरा होगा य मगर जंगल के बहुत भीतर मत

जाइयेगा। इस मौसम में भालू का खतरा रहता है यहाँ और औरतों से तो जैसे बैर ही है उन्हें।'

उसने कहा तो उसे लगा कि वो यूँ ही डरा रहा है और वो सड़क से कुछ दूर जंगल में भीतर की ओर चली गयी। पत्तों के नीचे छुपे महुये वास्तव में ताजे थे। उसने एक महुआ उठाकर मुँह डाला, तो मिठास भीतर तक उतरती चली गयी। फिर तो उसे याद ही नहीं रहा कि उसे बहुत भीतर नहीं जाना है। अपने स्कार्फ की ओली बनाये वह महुआ चुनती हुई दूर निकल गयी थी। तभी किसी ने पीछे से आकर उसे जकड़ लिया, तो डर से उसकी चीख निकली और जंगल में फैल गयी। वो उसकी गिरफ्त में छटपटा रही थी यमगर उसकी जकड़ से निकल नहीं पा रही थी। उसे लगा जैसे किसी पुरुष की ताकतवर बाँहों ने उसे जकड़ लिया हो, तभी उसकी नजर उसके रोंयेदार हाथों पर पड़ी और वो फिर और जोर से चीख पड़ी, मगर उसकी जकड़ कम नहीं हुई। अब भालू उसे खींचते हुये जंगल के भीतर ले जा रहा था और वह लगातार चीखती जा रही थी। उसकी चीख सुनकर जीप चालक दौड़कर आया और पीछे से टार्च की रोशनी मारी। रोशनी से उसकी आँखे चुँधियायीं तो जकड़ भी ढीली हुई। फिर तो उसने भी कस कर जोर लगाया और उसकी जकड़न से छूट भागी, मगर भालू अपना खाद्य यूँ ही कैसे छोड़ देता, सो अपनी आँखें मलते हुये उसने एक लम्बी छलाँग मारी और फिर उसके करीब जा पहुँचा। फिर तो उसे लगा कि अब वह बच ही नहीं पायेगी।

तभी चालक चिल्लाया– 'आप अपनी ओली का सारा महुआ एक जगह पर उलट दीजिये, महुये के कारण ही ये आपको दौड़ा रहा है।'

उसने झट से अपने स्कार्फ का सारा महुआ एक जगह पर डाल दिया। फिर और तेजी से दौड़ पड़ी। अब वो उसके पीछे नहीं था। फिर भी जीप के पास पहुँचकर भी उसकी हँफनी रुक ही नहीं रही थी।

'अब डरने की कोई बात नहीं है। वो अब नहीं आयेगा। आपने ओली में महुआ रखा था न, इसीलिये उसने आपको पकड़ा था। महुआ बहुत पसंद है इन्हें। इसी के कारण ये लोगों पर आक्रमण करते हैं। देखिये अब वो कितनी शांति से महुआ खा रहा है।'

मगर, उसका डर इतना हावी था कि उसने उधर पलटकर भी नहीं देखा और जीप में जा बैठी। जब हाथों में कुछ जलन सी महसूस

हुई, तो उसने देखा उसके हाथों पर खरोच के निशान उभर आये थे।

'अभी तो मैं सड़क के पास ही थी, तब ये हाल हुआ। मुझे तो अभी जंगल के और भीतर जाना है। तब ? तब क्या होगा ? तब तो बाघ और तेंदुआ भी मिल सकते हैं। डॉक्टर नेताम ने भी तो चेताया था मुझे– सुदीप्ति जी आपने अपने रिसर्च के लिये, जो इलाका चुना है, वह खतरे से खाली नहीं है। कदम–कदम पर खतरा है वहाँ।'

'सर आप मुझे डरा हैं ?'

'नहीं। मैं डरा नहीं रहा। चेता रहा हूँ। बहुत सावधान रहना होगा।' फिर उन्होंने इस इलाके से जुडी बहुत सी बातें बतायी थीं। वे इसी इलाके से हैं, पर अब वे यहाँ नहीं रहते। दिल्ली के आकर्षण में बँधा उनका परिवार यहाँ लौटना ही नहीं चाहता, मगर वे आते रहते यहाँ। यहाँ उनका पैतृक गाँव है। उसके साथ उन्हें भी आना था, मगर एक जरूरी कांफ्रेंस के चलते आ नहीं पाए। फिर भी उनका भरपूर सहयोग रहा। उन्हीं के जरिये गाँव के गौंटिया के यहाँ ठहरने की व्यवस्था हो पायी थी।

शाम होते–होते वह अपनी मंजिल के करीब जा पहुँची थी। यहाँ से आगे का सफर पैदल ही तय करना था। डॉ. नेताम ने बताया था कि गाड़ी गाँव तक नहीं जा पायेगी, मगर वहाँ से कोई लेने आ जायेगा, मगर वहाँ तो कोई नहीं था। आसपास न कोई घर, न ही कोई मानुस जात।

यह विकट समस्या थी। शाम उतर चली, तो उसकी व्याकुलता बढ़ने चली। किधर जाय ? किससे राह पूछे ? उसके मोबाइल का नेटवर्क भी नहीं था, पर जीप वाला भला आदमी था, सो वापस न जाकर अभी भी वहीं खड़ा था। उसने उसके मोबाइल से सरपंच को फोन किया, तो मालूम हुआ उन्होंने अपने आदमी को भेज दिया है। उसने एक बार फिर राह की ओर देखा। दूर दूर तक कोई नहीं था। जैसे जैसे शाम गहरा रही थी, उसका भय और भी गहरा रहा था। ऐसे में वह भालू वाली घटना को और याद नहीं करना चाहती थी, मगर वह बार बार याद आने लगी थी। बस तसल्ली की बात यह थी कि जीप वाला अभी भी उसके साथ था। बहुत देर के बाद दूर से आती एक मानव आकृति नजर आयी, तो उसकी जान में जान आयी।

'बेलापानी जायेगी न ?' उसने आते ही कहा, और उसके हाँ कहते ही उसका बैग उठाया और चल पड़ा।

उसे आश्चर्य हुआ। यह कैसा व्यवहार है! न दुआ–सलाम किया, न हाल चाल पूछा और न ही साथ चलने को कहा!

सोचती वह कुछ देर तो अकचकायी सी खड़ी रही। फिर जीप वाले को धन्यवाद दिया और उसके पीछे चल पड़ी। एक सँकरी सी पगडंडी थी, जिस पर बहुत मुश्किल से चल पा रही थी वह। बहुत दूर तक चलते चले जाने के बाद भी जब गाँव नजर नहीं आया, तब उसने पूछा– 'भैया और कितनी दूर है ?'

'अब ये कोई सहर तो है नहीं। पहाड़ी रस्ता है। जेतना जल्दी रेंगेंगे वोतना जल्दी हबरेंगे। वो डोंगरी उपर जो गाँव दिखई देता है न ? हमको उदर जाना है।' उसने कहा, तो उसकी इंगित दिशा की ओर देखा, मगर उस पहाड़ पर उसे कुछ भी नजर नहीं आया। फिर भी चलना तो था ही।

दूर तक चढ़ाई के बाद उतार आया। अब वे उस नदी के किनारे जा पहुँचे थे। नदी उस पहाड़ के नीचे से होकर बह रही थी, मगर उस पर कोई पुल नहीं था। न ही कोई नाव थी। अब ये नदी कैसे पार होगी ?सोच ही रही थी कि

'ये नद्दी बहुत गहरा नइ है। आप धीरे–धीरे चलके पार कर लेव।'

उसने नदी की धार को देखा। पानी गहरा तो नहीं था, मगर प्रवाह बहुत तेज था। उसे देखकर भय सा लगा था– 'कहीं पैर फिसल गया तो ? फिर भी पार तो जाना ही है। सोचा और पहला कदम बढ़ाया, पर पैर जमा नहीं पायी और लड़खड़ा गयी।

'पिकनिक समझ के चला आया यहाँ ?' उसके शब्दों में हिकारत सी उभरी, मगर उसने उसका हाथ पकड़ लिया था। फिर तो चट्टानों पर अपने पैर जमाती हुई वह उसके पीछे–पीछे चलने लगी थी, मगर उस पौछल पौछल पानी में भी इतना वेग था कि वह कई बार लड़खड़ायी थी। फिर भी उसमें चलना अच्छा लग रहा था उसे। इस तरह पैदल चलकर नदी पार करने का पहला अवसर था। सो एक अलग से कुतूहल मिश्रित आनंद की अनुभूति हो रही थी। नदी पार करते ही एक पथरीली सी पगडंडी मिली, जो आगे चलकर खड़ी चढ़ाई में बदल गयी। वो आदमी तो आसानी से आगे बढ़ता जा रहा था, मगर उसके लिये ये आसान नहीं

था। कुछ दूर चलकर ही उसका दम फूलने लगा और वो रुक गयी। उसने उसे रुके हुये देखा तो

'जब चल नई सकते तो काय को आ जाते ?' उसके स्वर में कुछ चिढ़ सी झलक आयी थी। फिर जाने क्या सोचा और– 'वो देख जिंहा अँजोर दिखता है न। बस वहाँ तक जाना है।'

उसने इंगित दिशा को देखा, मगर उसे कोई रोशनी नजर नहीं आयी। वह समझ गयी कि गाँव अभी बहुत दूर है। उस क्षण अपने निर्णय पर पछतावा भी हुआ था। काश औरों की तरह मैंने भी मैदानी गाँव चुने होते, मगर अब तो और कोई उपाय ही नहीं है। सो चलना तो पड़ेगा। सोचकर वह कुछ देर को थिरायी, फिर चल पड़ी। जल्दी शाम गहरा गयी थी। समय बहुत नहीं हुआ था, मगर अँधियारे ने पूरी तरह से अपने पँख पसार लिये थे। बहुत देर बाद दूर पहाड़ी पर क्षीण सी रोशनी नजर आयी, तो तसल्ली हुई, मगर वह जितना आगे बढ़ती, रोशनी और पीछे खिसक लेती। राम–राम करते किसी तरह गाँव पहुँची ।

गौंटिया का घर गाँव के बाहर ही था। फूस के छाजन वाले उनके घर के बाहर छोटी–छोटी कई छोपड़ियाँ थीं। उनमें से एक में उसके ठहरने का इंतजाम था। जमीन में बाँस के चार खूँटे गाड़कर उसपर बाँस की कमचिल इस तरह बिछाई गई थी यजिससे वो एक सुंदर पलंगिया सी नजर आ रही थी। दूसरे किनारे पर इसी तरह से बाँस से बनी छोटी छोटी दो चौकियाँ रखी थीं। कुल मिलाकर व्यवस्था बहुत अच्छी थी। उसने तो इतनी अच्छी व्यवस्था की कल्पना भी नहीं की थी। सब कुछ अच्छा था य मगर एक बात उसे खटक रही थी। गौंटिया ने उसकी व्यवस्था की जिम्मेदारी जिस व्यक्ति को सौंपी थी, उसके चेहरे पर एक अजीब सी कठोरता थी। उसके हर कार्य में एक निस्पृहता सी नजर आ रही थी। गाँव में आने के बाद से वह उसके साथ था। उसकी आवश्यकताओं का धयान भी रख रहा था, मगर उससे बात तो दूर, उसने उसकी ओर देखा तक नहीं रहा था। उसके हाव भाव से उसे इतना तो अंदाज लग गया था कि उसकी उस चुप्पी में संकोच तो नहीं ही है। अगर संकोच होता तो नजरें बचाकर ही सही, एक बार तो उसकी ओर देखता, मगर उसने तो जैसे अपनी नजरों को बरज ही रखा था। पर क्यों ? फिर उसे याद आया उसे लेने गये व्यक्ति ने भी उससे बात करने में पहल नहीं की थी। नदी

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पार करने में लड़खड़ाने पर बेमन से मदद की और गौंटिया! उन्होंने तो बिना हाल चाल पूछे, इसके साथ इस कोठरी में भिजवा दिया।

सोचते हुये पहले तो उसे लगा शायद भाषा की समस्या के कारण संकोच से ऐसा ..मगर फिर उसे समझ आ गया कि यह भाषा का संकोच नहीं य कुछ और ही है। मगर क्या ? वह क्या है जिसने यहाँ के लोगों का वो भोलापन ही निगल लिया, जिसके लिए ये जाने जाते थे। तो क्या हमारे महानगरों की तरह ये लोग भी... ! गौंटिया ने तो कहा है कि ये मेरी मदद करेगा। मुझे जहाँ भी जाना होगा, ये मेरे साथ जायेगा! पर ऐसे अबोलेपन से कैसे काम चलेगा। मुझे पहल करनी चाहिये। मगर कैसे ?

वह अभी सोच ही रही थी, तभी वहाँ एक लड़की आयी और उसके आते ही–

'तू फिर आ गिया इहाँ ? तेरे को मना किया था न। इदर नइ आना ?'

उस व्यक्ति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे तत्काल बाहर ले गया । वह अकचकाई सी देखती रह गयी! क्या हुआ है इन्हें ? मुझसे ये दूरी क्यों ? मेरी जगह कोई पुरुष होता, तो ऐसी एहतियात जायज होती, मगर मुझसे! मैं भी तो लड़की हूँ ! फिर भी उस लड़की को ऐसे दूर ले गया जैसे मैं उसे .... ? ये लोग तो ऐसे नहीं थे। इनके यहाँ तो स्त्रियों के लिये कोई बंधन था ही नहीं। बहुत खुलापन था इनके समाज में। इतना खुलापन कि इनके यहाँ कभी सेक्स भी गोपन नहीं रहा। फिर आज ये.... .. ?

इन्हीं सोचों में घिरी वह देर तक जागती रही, फिर अपने को नींद के हवाले कर दिया ।

सुबह पौ फटते ही उसकी नींद खुल गयी। रोज सूरज चढ़ते तक सोने वाली सुदीप्ति इतनी जल्दी उठ जायेगी, ये तो कोई सोच भी नहीं सकता था। घर पर भी मम्मी उसे उठा–उठाकर थक जाती थीं, मगर दस बजे से पहले उसकी नींद टूटती ही नहीं थी और हॉस्टल में ? उसकी रुम पार्टनर ? वो तो अलार्म बजने के समय मोबाईल का स्पीकर ऑन करके उसके कान के पास ही रख देती, तब कहीं जाकर वो बिस्तर छोड़ती थी यमगर आज तो कमाल ही हो गया था, किसी के उठाये बिना ही वह उठ गयी थी।

उसने बाहर निकल कर देखा, तो सामने की पहाड़ियों पर बादल झुके चले आ रहे थे। कभी वे सघन हो कर पहाड़ियों को ढँक लेते, तो कभी हवा उन्हें अपने साथ उड़ा ले जाती। फिर कुछ ही देर में पूरब में सुरमई उजाले की एक फाँक सी नजर आयी और साल के झुरमुट में बैठी किसी चिड़िया ने कहा– 'टीयूँ।' कुछ अंतराल पर फिर उसकी आवाज गूँजी टीयूँ। तब तक पूरब के आकाश में एक लाल रेखा उभर आयी थी। फिर तो एक से दो, दो से तीन, फिर अनगिन चिड़ियों के समवेत स्वर गूँज उठे थे। अब उसे सुमित्रानंदन पंत याद हो आये थे। ऐसे ही किसी पल में तो रची गयी होगी उनकी यह कविता– 'प्रथम रश्मि का आना रंगणि तूने कैसे पहचाना.... ।' सचमुच कितना चकित करता है ये सब। पक्षियों के पास न तो कोई अलार्म है और न ही कोई जगाने वाला। फिर भी! कैसे जान लेती हैं ये कि अब भोर होने वाली है! सोचती हुई वह प्रकृति के उस सौंदर्य खोयी हुई थी कि –

'चहा।' आवाज इतनी रठ्ठ थी कि उसे लगा, मानो सौंदर्य की नदी में बहते बहते, कोई शिला टकरा गयी हो। पलटकर देखा तो चाय का गिलास लिये रात वाला व्यक्ति खड़ा था। उससे बोला गया उसका यह पहला शब्द था। रात के अँधेरे में तो, वह जो देख नहीं पायी थी, मगर अब वह प्रत्यक्ष था। उसने देखा उसका चेहरा किसी शिला–सा सख्त था और आँखें निस्पृह सी लग रही थीं, मगर गौर किया तो उनमें दबा–दबा आक्रोश सा नजर आया। उसने उस आक्रोश को ऐसे दबा रखा था, जैसे गोरसी में आग दबा दी जाती है।

अपनी कृतियों के प्रकाशन हेतु संपर्क करें...

लागत आपकी, श्रम हमारा!
75 फीसदी प्रतियाँ आपकी, 25 प्रतिशत हमारी!!

विशेष : आपकी कृतियों व उन पर विद्वानों द्वारा लिखित समीक्षाओं द्वारा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में व्यापक प्रचार।

मधुराक्षर प्रकाशन
जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर फतेहपुर (उ0प्र0) 212 601
madhurakshar@gmail.com +91 9918695656

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

लघुकथा

डॉ. गोपाल निर्दोष
'सी. पी. निवास', मालगोदाम, नवादा 805 110
dr.gopalnirdosh@gmail.com

खूँटा

जेल की सलाखों के अंदर तीनों कैदी–साथी एक–दूसरे से अपनी–अपनी जिंदगी के अनुभव साझा करने के बाद नीरव की ओर मुखातिब हुए और उससे भी अपनी जिंदगी के बारे सुनाने की जिद करने लगे ताकि सारे साथी एक–दूसरे से सहज हो सकें।

नीरव कुछ देर तक शांत रहा, फिर बड़े अनमने ढंग से उठा और कोने में पड़े अपने थैले में से एक पुरानी–सी पुस्तक निकाल कर अपने साथियों के सामने फैला दी ये कहते हुए कि, "यह पुस्तक 'आ मेरे साथ रह' मेरे बाबूजी के द्वारा लिखी हुई है। इसमें एक कहानी है–'खूँटा'। इस कहानी को मेरे बाबूजी ने तब लिखा था, जब मेरी उम्र मात्र पाँच साल की थी। तब मैं इसे अपनी बाल्यावस्था के कारण नहीं पढ़ सका था और जब इस कहानी–संग्रह का प्रकाशन हुआ, तब मैं इस कहानी को अपनी उद्दंडता के कारण नहीं पढ़ सका। आज, जब मैं अपने घर का खूँटा पूरी तरह से तोड़ कर इन सलाखों के पीछे आ चुका हूँ...तब, इस कहानी का मर्म समझ सका हूँ। तुम लोगों को मेरे बारे में जो कुछ भी जानना है...इस कहानी को पढ़ लो, मेरे बारे में सबकुछ जान जाओगे। बस, इस कहानी के वीर या

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

वीरू बैल की जगह मुझे रख कर पढ़ना...” इतना कह कर नीरव दीवार से लग कर थोड़ा पसर गया और अपनी आँखें बंद कर ली जबकि उसके तीनों साथी पंक्ति–दर–पंक्ति ‘खूँटा’ नामक कहानी में उतरते चले गए।

गोपालक किशन के इकलौते बैल वीर को गाँव के लोग प्यार से वीरू के नाम से बुलाते थे। वीरू था भी वास्तव में बहुत ही वीर...भरे–भरे पुट्ठे, हृष्ट–पुष्ट शरीर, लंबी–नुकीली सींग, काली–कजरारी ऑखें, दप–दप उजला रंग और लंबी–झब्बेदार पूँछवाला वीर पूरे गाँव–जँवार का दुलारा था। कार्तिक पूर्णिमा के मेले में जब बैलों की दौड़ होती थी, तब पूरे इलाके के लोग परिणाम की घोषणा पहले ही कर देते थे और उनकी इस घोषणा की पुष्टि वीरू भी कर देता था दृ दौड़ में प्रथम आकर। वीरू के खान–पान और भोजन–विश्राम से लेकर उसकी घंटी, पगहा, गिराँव आदि संबंधी साज–सज्जा के लिए किशन की पत्नी अक्सर अपने पति के साथ झगड़ा करती रहती जबकि किशन भी अपनी पत्नी से अक्सर नाराज रहता कि उसने ही अपने प्यार में वीरू को बिगाड़ कर रख दिया है... ...और, कुछ–कुछ सच भी यही था। खूँटे में बँधा–बँधा वीरू जब कभी चुहल कर बैठता। वह कभी किसी बुजुर्ग को अपनी सींग से डरा देता तो कभी किसी महिला को अपनी पूँछ से झटक कर परेशान कर देता...कभी किसी लड़के को फुँफकार कर डरा देता तो कभी किसी राहगीर को धक्का दे देता। वीरू की इन तमाम बदमाशियों के बावजूद गाँव के लोग वीरू को अपना समझते और उसे बहुत प्यार करते थे।

गाँव के छोटे किसानों की माली हालत ऐसी नहीं होती है कि वह अपने खेतों की जुताई के लिए अपने दरवाजे पर जोड़ा बैल बाँध सकें और मात्र दो फसलों के दो–दो चास के लिए बाकी सालों–भर उन्हें बिठा कर उनके गौत (जानवरों का सानी यानी चारा) का प्रबंध और सेवा–सुश्रुषा करें। इसके लिए वे एकमात्र इसी उपाय पर काम करते थे कि अधिकांश किसान एक–एक बैल की खरीद करते और फिर अपने खेतों की जुताई के लिए दूसरे किसी से दूसरा बैल माँग लाते। इस तरह, वे हरसज–विधि से अपने–अपने खेतों की जुताई कर लेते। गाँववालों के दिलो–दिमाग में वीरू के प्रति अपनेपन का सबसे बड़ा कारण ये भी था कि वह जब कभी अपने–आपको हरसज में जोत कर जिस किसी के खेतों की जुताई कर देता और इस प्रकार हर किसी के मुँह में निवाला जा सके, इसका वह

इंतजाम कर देता था। अपनी सारी अच्छाइयों और थोड़ी–बहुत बदमाशियों के साथ–साथ वीरू में एक सबसे बड़ी खूबी या खामी ये थी कि उसे अपना 'खूँटा' बिल्कुल नापसंद था। खूबी इस मामले में कि जिसमें स्वाभिमान हो और पौरुष अपने चरम पर हो, वह भला किसी प्रकार का बंधन क्यों बर्दाश्त करेगा...? हालाँकि, खामी इस मामले में कही जा सकती है कि एक बेजुबान एवं निरीह प्राणी के लिए उसके मालिक के द्वारा उसे खूँटे में बाँधे जाने का मतलब उसे गुलामी की जंजीरों में ही बाँधा जाना नहीं होता है बल्कि जमाने की बुरी नजरों से उसकी सुरक्षा करना भी होता है और इस सुरक्षा के बारे में उस प्राणी से अधिक उसका स्वामी ही जान सकता है जबकि वीरू उस खूँटे को तनिक भी पसंद नहीं करता। अपनी ही सुरक्षा के प्रति अनजान वीरू बार–बार अपने खूँटे उखाड़ देने का आदी था। और, एक दिन जब उसका स्वामी अपनी फसल को बेचने के लिए शहर निकला हुआ था और उसकी मालकिन उसी के गौत के लिए घर के अंदर गयी हुई थी...उसी समय वीरू अपना खूँटा उखाड़ कर सुदूर खेतों की ओर दौड़ पड़ा।

घर की मालकिन अपने हाथ में वीरू के खाने के लिए उसकी मनपसंद चीज लेकर बाहर निकली तो उसने देखा कि वह अपना गिराँव तोड़ कर जाने कहाँ लापता हो चुका है। वह उसे पागलों की भाँति इधर–उधर ढूँढने लगी। वह जिस–तिस से उसके बारे में पूछने लगी। उसके चेहरे पर इस तरस से हवाइयाँ उड़ रही थीं, जैसे उसका बैल नहीं. ..उसका इकलौता अबोध बच्चा अपने घर से पहली बार कहीं दूर निकल गया हो जहाँ ढेर सारी मोटरगाड़ियाँ चलती रहती हों और उसके बच्चे को उनसे खतरा हो... उसकी इस हालत को देख कर कुछ लोग मुस्कुरा भी रहे थे तो कुछ लोग अपने बैल के लिए एक किसइनी के मन में इतना प्यार देख कर उसके प्रति सहानुभूति भी जता रहे थे...तो इसके साथ ही कुछ लोग उसके बैल की खोजबीन में उसकी मदद भी कर रहे थे। काफी खोजबीन के बाद निराश होकर वह बेचारी वीरू के खूँटे के पास बैठ कर रोने लगी। कुछ ही देर में गाँव के बच्चे और महिलाएँ उसे चारों ओर से घेर कर खड़े हो गए। सारे लोग उसके रोने के कई तरह से मतलब भी लगाने लगे थे। कुछ लोग सोच रहे थे कि उसके मन में अपने बैल के प्रति असीम स्नेह है, कुछ लोग सोच रहे थे कि उसका बैल बड़ा ही कीमती

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

था और अगर वह वापस नहीं आया तो इस बेचारी का बड़ा नुकसान हो जाएगा...तो कुछ लोग इस बात के प्रति भी आशंकित थे कि शहर से लौट कर जब किशन वापस आएगा तब अपनी पत्नी की खूब पिटाई करेगा... इसी डर से यह बेचारी रो रही है...कुछ लोग उसे वीरू के वापस आ जाने की सांत्वना भी दे रहे थे...

इधर वीरू तो कुछ देर तक अपनी आजादी का जश्न खूब जम कर मनाया। उसने रास्ते के जाने कितने ही कुत्तों, बकरियों, बैलों आदि को खदेड़ा और सींग से मारा कि सबों के बारे में उसे याद भी नहीं होगा। कुछ देर के बाद जब वह थोड़ा स्थिर हुआ तो उसने कितने ही खेतों में जम कर उत्पात मचाया। उसने देखा कि जिन खेतों में उसने कभी जम कर पसीना बहाया था, आज उनमें उसकी मेहनत के फल लहलहा रहे थे। सारी फसलों पर अपना अधिकार समझ कर उसने एक सिरे से सबको चरना शुरु कर दिया। एक खेत से दूसरे खेत, दूसरे खेत से तीसरे खेत, फिर चौथे, फिर पाँचवें...इस तरह उसने चरने की किसी सीमा का ख्याल नहीं रखा। लेकिन, यह क्या...अभी उसका न पेट भरा था और न ही मन भरा था। इतने में उसने देखा कि लगभग चारों तरफ से मोटे–मोटे लट्ठ लेकर आठ–दस मुस्टंडे बड़े ही बुरे इरादे से उसकी ओर बढ़ रहे हैं। उसने देखा कि ये सारे ही चेहरे उसके लिए अनजान थे। वह समझ गया कि अति उत्साह में वह अपने गाँव की सीमा से काफी दूर निकल आया है... किंतु, अब क्या हो सकता था...?

वह अभी कुछ सोच ही रहा था कि सारे लट्ठबाज उस पर टूट पड़े। उसने महसूस किया कि वे लोग उसके शरीर से अधिक उसकी टाँगों को अपना निशाना बना रहे हैं। वीरू ने निष्कर्ष निकाल लिया कि दूसरे गाँव के इनलोगों को अपनी फसलों के नुकसान से अधिक अपने गाँव की इज्जत की अधिक फिकर है और इसीलिए अगली कार्तिक की पूर्णिमा की दौड़ में मैं प्रथम न आ सकूँ...ये लोग इस योजना से मुझ पर लाठी बरसा रहे हैं... वीरू को अपने पैरों पर बड़ा ही गुमान था। उसे दौड़ में प्रथम आने का बड़ा अभिमान भी था। हालाँकि आज की अपनी दौड़ का उसे काफी दुःख था। उसे इस बात का खेद भी था कि अपनी इस गलती के प्रायश्चित करने का आज उसे कोई मौका भी नहीं मिलनेवाला था। लगातार दो दिनों तक कांजीहाउस में भूखे–प्यासे और अपनी टाँगों के दर्द से

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बिलबिलाते हुए पड़े रहने के बाद वीरू की नजर दरवाजे पर पड़ी तो उसने देखा कि उसका मालिक किशन अपनी पत्नी एवं अपने गाँव के आठ–दस आदमी के साथ अंदर दाखिल हो रहा है। उसे अपने सामने देख कर वीरू की दोनों ऑखें भर आयीं। उसने देखा कि किशन और उसकी पत्नी भी उससे लिपट कर खूब रो रहे हैं। तभी एक गाड़ी अंदर आयी और सबों ने बड़ी सावधानी से उसे किसी तरह उस गाड़ी पर बिठाया और गाँव की ओर चल पड़े।

पूरे रास्ते वीरू को अपने उस खूँटे की याद आ रही थी जो अपनी परिधि में समेट कर उसे सुरक्षित रखता था। उसे अपने उस पतले–से गिराँव की भी याद आ रही थी, जो उसके गले में पड़ कर आज तक उसकी सुरक्षा करता रहा था। वीरू को खूँटे के महत्त्व का आज पता चल गया था। उसने मन ही मन ये प्रण किया कि अब किसी भी हाल में अपने खूँटे से दूर नहीं जाऊँगा...

कहानी का अंत हो गया था। इसके बावजूद तीनों ही पाठकों की नजरें कहानी के अंतिम वाक्य पर टिकी हुई थीं। अर्जुन ने पुस्तक को समेट लिया। तीनों ही पाठक नीरव के बगल में पसर गए। अवधेश के मुँह से अनायास निकल गया– 'हम सब बैल हैं'

"...काश, कि हमसब वीरू होते..." मुकेश ने कहा।

"तुम्हारे पापा ने कितनी अच्छी कहानी लिखी है नीरव..."

"हाँ अर्जुन, काश कि इस कहानी को मैंने पहले ही पढ़ लिया होता..." नीरव ने अपनी डबडबाई आँखें खोली।

अपने अन्य तीनों साथियों से मुखातिब होता हुआ उसने आगे कहा, "दोस्तों, अब, मुझे शुद्ध रूप से बैल नहीं बने रहना है...वीरू बनना है...इस कांजीहाउस से निकल कर घर लौटना है और अपने–आपको घर के खूँटे से बाँधे रखना है क्योंकि उस खूँटे में ही अपनी सुरक्षा है, अपना उज्ज्वल भविष्य है...याद रहे, हमारे माँ–बाप कभी भी हमारा बुरा नहीं सोच सकते...

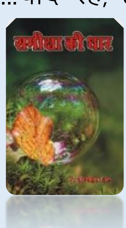

समीक्षा की धार

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

आईएसबीएन : 978-81-929060-3-4 संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

व्यंग्य

डॉ. रंजना जायसवाल
लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश
ranjana1mzp@gmail.com

कोरोना बनाम शादी

वसन्त की गुलाबी ठंड बसंती बयार बह रही थी...खेत–खलिहान से लेकर बाग–बगीचे भी फूलों से लदे पड़े थे। प्रकृति की तरह मन भी पीताम्बरी हो रहा था। इस खुशगवार माहौल में न जाने कितने लड़के और लड़कियों की शादियाँ भी तय हुई।हमारे पड़ोसी मिश्रा जी ने लगे हाथ बसन्त पंचमी के शुभ दिन अपनी बिटिया की शादी तय कर दी। सब कुछ इतना जल्दी–जल्दी हुआ कि मिश्रा जी की बहिन और बहनोई इस शुभ मौके पर भी न पहुँच सके। खैर शादी में बुलाने का लॉलीपॉप दिखाकर किसी तरह उन्हें शान्त किया गया।

इस खुशी के माहौल में कही दूर देश में... लोग विचित्र बीमारी कोरोना से जूझ रहे थे।हमारी जिंदगी में कुछ भी नहीं बदल रहा था पर कुछ था जो जल्दी ही बदलने वाला था।जल्दी ही वो समय आने वाला था कि हम जहाँ थे वही के रह जाने वाले थे। कदमताल तो करेंगे लेकिन एक कदम आगे तो चार कदम पीछे। देखते–देखते चीन के इस कोरोना वायरस ने दबे पाँव हमारे देश में भी अपने पैर पसार लिए...अब होना क्या था शादी–विवाह तो क्या जिंदगी भी ठप।जो जहाँ था वही का होकर रह गया। मिश्रा जी परेशान बिटिया की शादी सर पर है३ अब सब काम कैसे होगा।

दुनिया का हर लड़का और लड़की अपने विवाह को लेकर कुछ सपने संजोता ही है, हजारों ख्वाइशें होती है उनके मन में इस खास दिन के लिए पर.. मिश्रा जी की बिटिया का सपना इस कोरोना वायरस ने चकनाचूर कर दिया।

बिटिया के ससुराल वाले नहा–धोकर पीछे पड़े थे– 'मिश्रा जी! शादी–ब्याह का मामला है देख लीजिए। देर करने से क्या फायदा।'

बिटिया के होने वाली ससुर की बात को सुनकर मिश्राइन भड़क गई– 'अनुरोध कर रहे हैं कि धमका रहे हैं!'

मिश्रा जी ने मिश्राइन को समझाने की कोशिश की– 'अरे भाग्यवान! भाई माना कि शादी सात जन्मों का बंधन है...पर ये जो नौ महीने से बिना बात के हम बन्धन में फँसे पड़े हैं उसका क्या...एक महामारी में दूसरी महामारी।'

मिश्राइन तो पहले से ही भड़की हुई थी। मिश्रा जी की बात सुनकर और भी भड़क गई– 'क्या कह रहे हो मिश्रा जी! तुम तो उम्र से पहले ही बूढ़ा गए हो। शादी दो आत्माओं का मिलन, दो परिवारों का मिलन है और तुम उस मुये कोरोना से तुलना कर रहे हो।'

मामला बिगड़ते देख मिश्रा जी के हाथ–पाँव फूल गए, मिश्राइन जी के तेवर कुछ ठीक नहीं लग रहे थे। मिश्रा जी ने बात संभालते हुए कहा– 'अरे मिश्राइन! काहे अपना बी पी बढ़ा रही हो। तुम ही बताओ शादी कि ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी, अगर एक साल देर से ही हो तो कौन सा आकाशगंगा में से नौ ग्रह में से एक कम हो जायेगा या...कौन सा बच्चों की जिंदगी की पोथी में से एक पुण्य कम लिखने से रह जायेगा। अलबते, बाप के टेलीफोन का बिल जरूर बढ़ने लगा है।'

अब मिश्रा जी बेचारे क्या कहते उनकी लाडली अपने सोना, बेबी, हन्नी से रोज दो–दो घण्टे फोनियाती है। कोरोना के चक्कर में न जाने कितनी पापा की परियों ने घर में आफत जरूर मचा रखी है। ऊपर से कोई न कोई रोना लेकर वो रोज हाजिर ही रहती है– 'डैड देखो न सोच रही था कि अपनी शादी में जीरो फिगर बनाकर अनीश मेहरोत्रा की डिजाइनर गाउन पहनूँगी.. पर मम्मी के चक्कर में सारा फिगर ही बर्बाद हो गया।'

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

मिश्रा जी सोचने लगे, एक तो इन बच्चों का ये समझ में नही आता, जीते जी हँसते–खेलते बाप को मरा घोषित करने का ये कौन सा तरीका है। बेचारी माँ कोरोना के चक्कर में कांता बाई बनी टहल रही थी. ..पर बिटिया ने खड़े–खड़े धुल दिया। मम्मी की भी क्या गलती ...सोची बिटिया चार दिन की मेहमान फिर तो अपने घर ही जाना है पता नहीं क्या मिले क्या नहीं३ ये भारतीय माँओ का समझ नहीं आता बेटी का ब्याह करते वक्त ऐसी परेशान रहती है जैसे बिटिया को ससुराल नहीं सियाचिन बार्डर भेज रही हो। रूठी बिटियों ने मान–मनुव्वल के चक्कर में एक–दो डिजाइनर कपड़े इसी बहाने झटक लिए...

मिश्रा जी एक दिन यूँ ही खलीहर बैठे थे। बैठे–बैठे सोचे चलो भई एलबम ही देखकर पुरानी यादें ताजा कर ली जाए...न जाने क्यों एक फोटो पर आकर उनकी आँखें टिक गई। मिश्राइन के माता–पिता के साथ कि थी जब पूरा परिवार हरिद्वार घूमने गए थे। कोरोना काल और लॉक डाउन सच पूछिए जब भी ये नाम सुनते हैं तो सास–ससुर की जोड़ी सी फीलिंग आने लगती है।मिश्रा जी के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आ गई, मिश्राइन बड़े गर्व से सबको बताती थी कि उनकी अम्मा बारह महीनों चाहे कितना भी जाड़ा हो ,गर्मी पड़े ओला गिरे ...पर उनका नियम आखिरी सांस तक नहीं टूटा। अब मिश्रा जी क्या कहते कि उनका अम्मा कितना पंचायती है। किस की बहू सास को खाना नहीं पूछती, किसी का बेटा बड़ी कम्पनी में नौकरी पा गया...इन सब की जानकारी तो नदी स्नान से पहले, दौरान और बाद कि गम्भीर चर्चा से ही हो सकती थी। पूजा की पूजा और जानकारी की जानकारी...पर इस कोरोना के चक्कर में पूजा स्थल भी बन्द। ग्रहण के समय तो पूजा स्थलों को बंद होते देखा और सुना था पर हमारे पालनहार हमारे तारणहार भी कन्फ्यूजन में थे ...भई ये कौन सा ग्रहण है जो खत्म होने का नाम ही ले रहा।

हमारे नेटवर्क ने अभी–अभी जानकारी दी कि एक दिन सभी धर्मों के माईं –बाप ने उस दौरान एक आकस्मिक बैठक भी कर ली।

‘अचानक से भूलोक पर क्या हो गया ...सबके दुख, इच्छाये,सपने अचानक से मिट गए अब तो हमारे चौखट पर कोई माथा टेकने भी नहीं आता...कोई फरियादी नहीं..कोई दुखियारी नहीं।’

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अब धरतीवासियों के लिए ही कोरोना एक नया शब्द था तो अपने पालनहारों को क्या समझाते।भ ात्तों की राह तकते–तकते उनकी आँखें भी पथरा गई...पर ये मुआ कोरोना नहीं गया।

कहते हैं गम्भीर विषयों पर विचार करना हो...गुसलखाने में घुस लो,कोई डिस्टर्ब करने वाला भी नहीं। मिश्राइन जी के प्रकोप से बचने के लिए मिश्रा जी ने गुसलखाने की राह पकड़ ली।मिश्रा जी सोच में पड़ गए वैसे मिश्राइन कल रात गलत तो नहीं कह रही थी कि गाँव–देहात में न सेनेटाइजर और न ही हाइजीन का चक्कर मास्क तो बहुत दूर की बात है, उनको तो कोरोना–फरोना नहीं पकड़ रहा। क्या कोरोना शहर में सफाई पसन्द सुफेस्टी केटेड लोगो को ही ढूंढ–ढूंढ कर पकड़ रहा है।

हमारे यहाँ एक ग्रामीण अंचलों में मेहमानों के लिए एक कहावत है ...पहले दिन पहुना (मेहमान), दूसरे दिन ठेहुना (घुटना), तीसरे दिन केहुना (कोई नहीं)...पर ये मेहमान न जाने किस श्रेणी का है जो निर्लज्जों की तरह टिक ही गया है, जाने का नाम ही नहीं ले रहा...पर एक बात तो माननी ही पड़ेगी जिस सर्दी–जुखाम को कभी समाज में और बीमारियों की तरह इज्जत नहीं मिली थी ...इस कोरोना ने ऐसी इज्जत दिलायी कि पूछिये मत। कभी भरी महफिल छींक और खाँसकर तो देखिए...लोग रास्ता खुद ही खाली कर देते हैं। बड़ी वी.आई.पी. वाली फीलिंग आती है।

इस दौरान हमारे वो... बड़े वाले नेता जी...वही जो कुर्ते की मैचिंग सदरी पहनते हैं३बिना नागा आते और लॉक डाउन का एक बम गिराकर चल देते। वैसे घर मे हमारी लक्ष्मियाँ समय–समय बड़े स्वादिष्ट पकवान परोस रही थी पर जिन कुल देवताओं और कुल देवियों की इस दौरान शादियाँ होनी थी वो बेचारे त्रिशंकु बनकर रह गए। समधी साहब का बार–बार फोन आ रहा था, मिश्रा जी अजीब असमंजस में थे...करे तो क्या करे।

एक तो इस साल लग्न कम... ऊपर से कोरोना, बची–खुची कसर सरकार ने पूरी कर दी। शादी–विवाह जैसे समारोह में पहले पचास,फिर सौ फिर दो सौ और फिर से सौ की संख्या कर दी। सरकार का भी समझ नहीं आता शादी–विवाह के लिए सौ और धरना प्रदर्शन के लिए नो लिमिट. ..भई वाह। मिश्रा जी एक दिन बड़े दुखी होकर बोले,

'हमारे यहाँ मोहल्ले में अगर कोई जोर से छींक दे तो पचास लोग तो ऐसे ही खड़े हो जाये।'

कह तो सही ही रहे थे। सच बता रहे बड़ी अजीब सी फीलिंग आती थी...पचास वाले में तो हम होंगे नहीं पर कम से कम सौ वाले में तो होंगे ही...पर अब ये पता नहीं कि हम एक नम्बर पर होंगे या निन्यानबे। ये संख्या का सवाल ट्रिग्नोमेट्री के सवाल से भी ज्यादा कठिन हो गया था।

मिश्रा जी का धैर्य की सीमा जवाब देने लगी थी– ''भाभी जी!!!.. अब इस सौ की संख्या में हलवाई, वेटर, नाऊ, पंडित जी साज–सज्जा और बैंड बाजा वाले भी होंगे कि नहीं ...ये पता लगाने के लिए भी आदमी दौड़ाना पड़ता है।'

हम तो पहले से ही दुखी और असमंजस की स्थिति में थे कि मिश्रा जी की बिटिया की शादी में हम को बुलाया भी जाएगा कि नहीं। ऊपर से लोगों ने भी इस मौके पर आग में घी डालने का पूरा काम किया. .. हमारे दूर के मित्र ने सोशल नेटवर्क पर एक सन्देश डाला...ईश्वर की असीम अनुकम्पा जगतजननी माँ विंध्यवासिनी के आशीर्वाद और मेरे पिछले जन्म के पुण्य कर्मों के कारण तीन शादियों के मेहमान सूची में मेरा नाम टॉप पचास में आ गया है। सच बता रहे ऐसी फीलिंग आ रही थी कि बस प्रशासनिक सेवा की प्रवेश परीक्षा का अंतिम चरण में बस हमारा चयन होते–होते रह गया।जिन लोगों को कार्ड मिला वो तो चौड़े हुए घूम रहे थे पर जिन्हें नहीं मिला...सस्ते में निपट लिए३ पैसा बच गया...जैसे संवादो से कोरोना को मन ही मन कोसते रहे।

एक दिन दूध की थालियाँ खरीदते वक्त मिश्रा जी हमारे पतिदेव से टकरा गए। दुआ–सलाम के बाद बिटिया की शादी का भी जिक्र छिड़ गया।

'मिश्रा जी!!!...बिटिया की शादी की तैयारी कैसी चल रही है। अब तो सरकार ने भी लिमिट कर दी है,चलिए अच्छा है एक तो कमाई–धमाई नहीं है, इसी बहाने कुछ पैसा तो बचेगा।'

हमारे पतिदेव भी बोलने से पहले एक बार भी नहीं सोचते, मिश्रा जी तो पहले से ही जले बैठे थे।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

'कितना पैसा बचा ये तो लड़की वाले ही जानते हैं... जानते हैं जायसवाल जी...लड़के वाले भी कम नहीं है बोले– भाईसाहब तीन सौ बाराती की बात हुई, अब तो सरकार भी पाबंदी लगा दी है। बजट तो आपका पहले से ही तय था...ऐसा कीजिए अपनी बिटिया के नाम की एफ डी कर दीजिए।'

बिटिया की विदाई से पहले ही मिश्रा जी की आँखों से आँसू छलक आये। आखिर ये कैसे रिश्तेदार थे जो रिश्ता जुड़ने से पहले ही मोलभाव कर रहे थे, मिश्रा जी का गुस्सा जायज था...पर हमारा गुस्सा किसी को नहीं दिख रहा था।

अंत तक असमंजस की स्थिति बनी ही रही, गुस्सा तो बहुत आ रहा था, बेइज्जती भी बाल्टी भर–भर हो रही थी.. पर कर भी क्या सकते थे। हम तो निन्यानबे तो क्या एक सौ निन्यानबे नम्बर पर भी दूर–दूर तक नहीं थे। लोगोटियाँ यार, चड्डी–बड्डी, खाटी का दोस्त और दूसरा घर जैसी उपाधियों का लॉलीपॉप दिखाने वाले रिश्ते हाथ में लॉलीपॉप की डंडी पकड़ाकर कही गायब हो गए थे।

मिश्रा जी की परेशानी बढ़ती ही जा रही थी। ट्रेन, बस और उड़नखटोला सब बन्द, अब करे तो करे क्या...। मिश्रा जी के दूर के फूफा जी अचानक से कुछ ज्यादा ही दूर नजर आने लगे। फूफा जी मन ही मन कुलबुलाये भी बहुत थे, महीनों से तैयारी कर रखी थी३एक दिन वो मिश्रा जी पर फोन पर ही बिफर पड़े– 'क्या अब बड़े–बूढ़ो के आशीर्वाद के बिना बहू–बेटियाँ विदा होगी।'

पर कर भी क्या सकते थे। मिश्रा जी बीस साल पहले बनवाई उनकी शेरवानी की कल्पना कर–कर मन ही मन मुस्कुरा रहे थे,पहननी तो उनको वही शेरवानी ही थी फिर काहे की तैयारी।

रिश्तेदारों को कार्ड सबसे पहले चाहिए होता है पर काम की उम्मीद उनसे न करो। धेले भर का भी काम उनसे न होगा...और फुला–फुली अलग से।

'अपनी भौजाईयों से हा–हा–ही–ही करने की फुर्सत मिले तब न सेवा–सत्कार करेगी। बुलाने को तो बुला लिया पर बताओ...चाय नौ–नौ बजे तक मिल रही। चाय के बिना प्रेशर नहीं बनता, अब इनको कौन समझाए।'

इस कोरोना ने ऐसे नखरीले रिश्तेदारों से कुछ हद तक बचा भी लिया। लॉक डाउन और शादी...ऐसा लगता है जैसे किसी फिल्म का टाइटल हो– 'मैं अनाड़ी तू खिलाड़ी!' ...मिश्रा जी को इस कोरोना ने कुछ ऐसा ही छकाया था। बिटिया की शादी सर पर कार्ड कैसे छापेंगे और छप भी गए तो बटेंगे कैसे! हाथ में दो किलो मिठाई के साथ बहन–बेटियों के दरवाजे पर कार्ड पहुँचने– पहुंचाने का रिवाज ही खत्म कर दिया इस कोरोना ने, मिश्रा जी का लड़का थोड़ा–थोड़ा यो–यो टाइप था...घर के इस इकलौते कुल दीपक,चिराग का भी क्या कहना ...लंबे और बिखरे हुए बाल हफ्तों से मैली टी शर्ट और बरमूडा लादे... जिनका नहाना, धोना, खाना, पीना सब सोशल नेटवर्किंग पर ही होता है उनकी उंगलियों ने फटाफट एप्प डाऊनलोड किया और फटाफट कार्ड हाजिर...कोरोना काल ने सोशल नेटवर्किंग के नाजुक कंधों पर इतना बोझ लाद दिया कि पूछिये ही मत... मिश्राइन अपने नौनिहाल की बलायें लेती नहीं थक रही थी।

'देख लो जी बार–बार कहते रहते हो ये दिन भर लैपटॉप पर जोक जैसा चिपका रहता है। देखो कितना पैसा बचा लिया आपका...आप तो बस।'

मिश्रा जी का सीना भी गर्व से 32 से 42 इंच का हो जाता ...इस लॉक डाउन में कुछ कमाई –धमाई तो है नहीं चलो कुछ तो बचे पर मिश्रा जी फिर से सोच में पड़ गए कि जिस देश में कार्ड भेज दिया तो किसके हाथ भेजा, स्टाफ आया था कि खुद...स्टाफ आया था तो डायलॉग ये कि नौकर–चाकर के हाथ भेजवायेंगे तब थोड़ी जाएंगे। खुद आये तो कितनी बार मनुहार किया और आने वाले ने गलती से अपनी व्यस्तता का रोना रो दिया तो दाँत निपोर कर कहेंगे– अरे घर की ही बात थी कार्ड–शार्ड की फारमेलटी में क्यों पड़ गए...बस एक बार फोन घुमा दिए होते। इन्हीं लोगों को सिर्फ फोन कर दो तो कहते हैं दस दिन पहले एक बार फोन करके सूचित तो किए थे...बिना कार्ड के भला कौन जायेगा।

अपने बाल–गोपाल द्वारा बनाये गए निमंत्रण पत्र को सो कॉल्ड मेहमानों को मिश्रा जी ने बड़े शान से चिपका तो दिया पर भरम की स्थिति अब भी बनी हुई थी,कि बिना मान–मनुहार और देशी घी की मिठाई के डिब्बों के बिना रेडीमेड कार्ड भेजने भर मात्र से कोई आएगा भी या नहीं..

सच पूछिए कभी–कभी बड़ी दया आती है जिन रिश्तेदारों की संख्या पचास और सौ के बाद आती थी...जीवनभर जो रिश्तेदार फूटी आँख न सुहाते थे उन्हें मजबूरी ही में ही सही निपटाने के चक्कर में ही पचास और सौ की संख्या तो चुटकियों में पार हो जाती है। अब इन्हें बुला भी लिया तो पहले कोरोना की जांच कराओ३ अगर गलती से एक–आध कोरोना पॉजिटिव निकल आये तो हो गई छुट्टी..

कोरोना की डगर इतनी सरल नहीं थी, उड़नखटोले से आये मेहमानों के हाथों पर एक ठप्पा लगा दिया गया और उन्हें अज्ञातवास मेरा मतलब कोरोनटाइन कर दिया गया३ बड़े–बड़े शहरों में डिस्को थेक और पब में घुसने से पहले हर महानुभावों के हाथों पर भी कुछ ऐसे ही ठप्पे लगाए जाते हैं।मिश्रा जी की छोटी बिटिया अपने ताऊ जी की बड़ी लाडली थी। वो तो बस इसी बात पर फैल गई।

'पापा!!!...ताऊ जी के हाथ पर वैसा ही ठप्पे के निशान हैं जैसा भैया के हाथ पर भी कभी–कभी देखने को मिल जाता है। आप ने ताऊ जी को 15 दिन अलग ठहरने की व्यवस्था कर दी है पर भइया के लिए कभी नहीं सोचा!'

अब मुँह छुपाने की बारी घर के चिराग की थी। मिश्रा जी जलती निगाहों से अपने कुल दीपक को देख रहे थे और आँखों ही आँखों मे ये पूछ रहे थे, तो ये हो रही है कंबाइन स्टडी...।

शादियों में जनवासे का चलन तो सुना था पर जनवासे का नया नाम कोरोनटाईन होगा ये नहीं सोचा था...मिश्रा जी भी अब क्या कर सकते थे।सरकार खुद ही कन्फ्यूज हो गई है, रोज कोई न कोई एडवाइजरी जारी हो जाती है और दूसरे दिन अखबारों में मोटी–मोटी लाइनों में लिखा होता है३ सरकार के दिशा–निर्देश... शादी–विवाह के लिए नई गाइडलाइंस जारी शादी–विवाह से जुड़े हुए लोगों के होंगे कोविड टेस्ट...बैंड वालों, कैटरर्स, डेकोरेशन,डी जे और मेहमानों के भी होंगे कोविड टेस्ट।

सरकार तो सरकार लोगों का भी समझ नहीं आ रहा निमंत्रण पत्र पर कुछ ऐसा लिखते हैं कि पूछो ही मत ... श्रीमती एवम श्रीमान प्रकाश चन्द्र, सपरिवार३ नोट–दो के बाद जितने भी आये वो खुद ही देख ले...अरे भाई बुला रहे हो या डरा रहे हो। एक महाशय तो और भी समझदार निकले कार्ड के नीचे एक लाइन और भी चिपका दिए– 'स्टे होम, स्टे

सेफ'..सुरक्षित तो हम पहले भी थे पर आप बुला रहे हो या मना कर रहे, पहले ये तो तय कर लो। शायद ऐसी ही गलतफहमी मिश्रा जी के घनिष्ठ मित्र को भी गई और उन्होंने अपने समस्या के निवारण के लिए मिश्रा जी को फोन घुमा दिए, हम छत पर कपड़े सुखाने गए थे ...मिश्रा जी किसी से जोर–जोर से बतिया रहे थे

'शुक्ला जी!!...बिटिया की शादी में आ रहे हैं न आप?'

'भाई साहब!!!..आने को तो आ जाये पर आपका परिवार ही इतना लंबा–चौड़ा है सौ तो ऐसे ही समा जाएंगे।'

सच बता रहे हैं लोग जेम्स बांड 007 के भी अब्बा हो गये...क्या योजना बना रहे हैं। मिश्रा जी के चेहरे पर एक बार फिर से कुटिल मुस्कान खिल गई– ''भाईसाहब आप ,बिल्कुल चिंता न करिए...सब इंतजाम हो गया ...पुलिस की चौकिंग बड़ी तगड़ी है पर हम भी कोई कम खिलाड़ी थोड़ी है। हमें भी डर और चिंता है कि बिटिया की डोली उठने से पहले पुलिस वाले हमें ही न उठा ले जाये। आप ऐसा कीजिये भाभी जी और एक बच्चे को...पहले भेज दीजिएगा जब तक वो खा–पी कर निपटते है तब तक आप गाड़ी में बैठे रहियेगा...और जब भाभी जी बच्चे के साथ खाकर आ जाये तब आप धावा बोल देना...प्रॉब्लम सॉल्व।'

सच बता रहे मिश्रा जी की योजना को सुनकर उनके चरण स्पर्श करने का मन कर गया। छत से उनका चेहरा तो नहीं दिख रहा था पर उनकी प्रकाशपुंज युक्त अलौकिक छवि आँखों के सामने से गुजर गयी।

कल ही तो मिश्रा जी बड़े व्यथित होकर कह रहे थे– 'भाभी जी!!... शादी की परमिशन लेने जाओ बाबू साहब लोग दुनिया भर के नियम–कानून की दुहाई देने लगते हैं। आखिर उन्हें भी तो ऊपर वाले को मेरा मतलब अपने से बड़े बाबू साहब लोगों को भी तो जवाब देना होता है। कुछ भी कर लो कित्तों सर पटक लो परमिशन तो 100 मेहमानों तक की ही मिलती है.... और इन्हीं बाबू साहब लोग से धरना प्रदर्शन की परमिशन लो तो अनलिमिटेड लोग आ सकते हैं....'

हम तो बचपन से ही बहुत भावुक किस्म के इंसान रहे हैं लोगों का दुःख हमसे देखा नहीं जाता। चलते–चलते मिश्रा जी को एक मशवरा दे डाले– 'भाईसाहब!!...अगर सीधी उंगली से घी न निकले तो उंगली टेढ़ी कर देनी चाहिए.. ये कहावत यूँ ही नहीं बनी। आप एक परमिशन पत्र

लिखिए... और उस परमिशन पत्र में अपने मनभावों को कुछ इस तरह से प्रकट कर लिखे..

सेवा में,
थानेदार साहब महोदय,

विषय : दुल्हन लाने के लिए धरना प्रदर्शन करने की अनुमति के सम्बंध में,

विनम्र निवेदन है कि मेरी सगाई हुए तीन माह बीत चुके हैं, और मेरे होने वाले ससुर मेरी होने वाली पत्नी से दिनांक 20.12.2020 को मिलने को बोल रहे थे। लेकिन अचानक आज चार दिन पहले ही वो अपने वायदे से मुकुर गए। ऐसी परिस्थिति में मुझे अपनी भावी जीवनसंगिनी के लिए धरना प्रदर्शन करना है। इस शुभ कार्य को सम्पादित करने के लिए मैंने 'आनन्दम्' मांगलिक रिसोर्ट स्थान निश्चित किया है।इस अवसर पर वहाँ मैं, मेरे घर वाले तथा कुछ सगे–संबंधी और मित्र भी प्रदर्शन में मेरा साथ देंगे।

अतः आप मुझे दिनांक 20.12.2020 को धरना प्रदर्शन करने की अनुमति प्रदान करें....मैंने इस आवेदन पत्र की एक प्रति तहसीलदार साहब को भी प्रेषित कर दी है।
संभ्रांत नागरिक

उम्मीद करती हूँ इस पत्र से कुछ काम बन जाये।'

पर मिश्रा जी परेशानियां सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती ही जा रही थी– 'क्या बताए भाभी जी!!...कोरोना ने घर–परिवार सब की जान आफत में डाल दी है। कोरोना के चक्कर में हमारी अम्मा तो यही सोच–सोच दुबली हुई जा रही थी घर की पहली शादी है दुनिया भर के लोगों को आज तक व्यवहार दिए हैं ...जब अपने घर की शादी पड़ी, लोगों की व्यवहार लौटाने की बारी आई... तो किसी को बुला ही नहीं सकते। जौनपुर वाली जीजी की लड़की की शादी में दो साड़ी, एक झुमका और पाँव पूजन के समय स्टील का ड्रम दिए थे और खिचड़ी खाने के समय लड़के को पाँच सौ एक का लिफाफा... शादी बीतने के बाद कौन देता...जब पूड़ी नहीं खाये तो काहे का न्योता...कह तो अम्मा सही ही रही थी।'

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

मिश्रा जी भी अपनी जगह ठीक ही थे, एक तो कोरोना काल मे ढेले भर की कमाई नहीं.. ऊपर से शादी। रिश्तेदारों के यहाँ बढ़–बढ़ कर न्योता दिया है किसी के यहाँ अंगूठी,किसी के यहाँ वाशिंग मशीन तो किसी के बक्सा– जब कोई आयेगा ही नहीं तो वो भला क्या देगा...इस महामारी के चक्कर में वापसी मिलने की रही–सही उम्मीद भी जाती रही!

खैर छोड़िए... हमें अभी तक मिश्रा जी की बिटिया की शादी का न्योता नहीं मिला था, पर हमने भी उम्मीद नहीं छोड़ी थी। इन बीते महीनों में हमारे कान बेसुरे ढोल पर दो ढक्कन चढ़ाए नागिन डांस करते जीजा और फूफा लोग के नृत्य कला प्रदर्शन को देखने के लिए बुरी तरह कुलबुला रहे थे...कपड़ों की अलमारी चीख–चीख आवाज दे रही थी ...अम्मा जिंदा हो न कि निकल ली। इतना मजबूर तो हम जीवन में कभी भी न हुए थे। गिनती का महत्व जीवन मे इतना होगा कभी सोचा न था।

शादी खुद एक महामारी से कम है क्या, जिसकी वैक्सीन आज तक नहीं बनी और न बनेगी। खैर जिनकी न हुई वो भी चख ही ले। अकेले हम ही क्यों भुगत–भोगी रहे। वैसे भी हम बचपन से ही उसूलों पर चलने वाले हैं..हमारा तो जीवन का एक ही उसूल है ...हम तो डूबे है सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे।

जिन्दगी भर बी पॉजिटिव का आलाप करने वाले लोग कोरोना पॉजिटिव का नाम सुनते ही गधे का सर से सींग की तरह गायब हो जाते है।हमारे घर की पीछे वाली गली में पोपले मुँह वाली अम्माजी रहती है।मुहल्ले में किसी के घर भी शादी हो अम्मा जी न आये ,हो ही नहीं सकता। कदम–कदम पर नियम कानून बताने वाली पोपले मुँह वाली अम्मा जी भी आजकल मुँह पर ताला मार कर बैठी है। कही पहले की तरह कोई कह न दे– 'अम्मा जी...आप भी चले चलो आखिर कौन बतायेगा ये दुनिया भर के रीति–रिवाज!'

पर अम्मा जी टस से मस न हुई– 'हम कही न जाएंगे...कुछ हो–हवा गया तब...अभी उम्र ही क्या है हमारी...अभी तो दुनिया भी देखनी है।'

अब अम्मा जी को कौन बताए कि– 'अम्मा जी कब्र में पैर लटकाये बैठी हो... दोनों हाथ–पैर की रेखायें भी गिन ले तो भी कम पड़ जाए। खैर भगवान सबकी उम्र लम्बी करें।'

मिश्रा जी की बिटिया की शादी पास आती जा रही थी और हमारी उम्मीद का दामन दूर होता जा रहा था। शादी–विवाह में लड़के–लड़कियों को मैचिंग लहंगा, दुपट्टा, ब्लाउज, जूती, पर्स, पगड़ी, शेरवानी की चिंता करनी पड़ती थी पर अब तो एक और चलन प्रारम्भ हो गया...मैचिंग मास्क। हमारे ड्रेस डिजाइनर भाई लोग भी परेशान, उनकी अनदेखी बचत में भी लोग सेंध लगाने को खड़े हैं३ नाश हो मुये कोरोना का। एक तो मुश्किल से कुछ कमाई–धमाई शुरू हुई तो वहाँ भी!

आखिर वो दिन भी आ ही गया ...जिसका इंतजार हर पिता को होता है। बिजली के बल्ब और फूलों की लड़ियों से मिश्रा जी का घर दूर से ही चमक रहा था। मास्क पहने बराती ऐसे लग रहे थे... मानो वो बरात में नहीं गाँव लूटने आये हो। सच पूछिए तो मास्क भी एक टास्क बन कर रह गया है। बरातियों को थोड़ी–थोड़ी देर में सेनेटाइजर ऐसे दिया जा रहा था...जैसे सेनेटाइजर नहीं पंचामृत बांटा जा रहा है।लोग ऐसे आगे बढ़–बढ़ कर हाथ आगे बढ़ाते हैं जैसे पुण्य की गठरी में एक और जुड़ने से न रह जाये। कुछ बराती तो ऐसे थे कि अपने वाले से एक बार फुच करके ही सेनेटाइजर प्रयोग करते पर मुफ्त में मिला तो फुच–फुच–फुच।

मिश्राइन घबड़ाई–घबड़ाई सी इधर–उधर दौड़ रही थी। हम दूर खड़े तमाशा देख रहे थे ...क्योंकि निमंत्रण पत्र हमे अंत तक नहीं मिला। छत से ही शादी का मजा ले रहे थे। मिलनी की रस्म में तो इतनी गड़बड़ी हुई कि पूछिये ही मत...समधी साहब के फूफा और जीजा जी भी बिल्कुल कम न थे।

कोई काम बता दो तो कोरोना और दो गज दूरी का राग अलापने लगते पर जब मिलनी का वक्त आया तो स्पाइडर मैन की तरह भीड़ को चीरते हुए नकाबपोश जीजा और फूफा... 'हम यहाँ हैं!' कहकर अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी। अब इतनी मंहगाई में जब सोने का दाम आसमान छू रहा है वहाँ अंगूठी न सही ग्यारह–इक्कीस सौ का नकद पुरस्कार मेरा मतलब नकद व्यवहार मिल जाये तो क्या बुरा है।

दरवाजे पर बारातियों के तापमान नापने के चक्कर में समधी साहब के फूफा जी नाराज हो गए– 'बरातियों का स्वागत माथे पर बंदूक तान कर करने का कौन सा रिवाज है।'

मिश्रा जी ने कितनी मुश्किल से समझाया उनको।

इस मास्क के चक्कर में सबसे ज्यादा फजीहत अगर किसी की हुई है तो वो लड़की वालों की हुई। दरवाजे पर मिलनी के समय माननीय लोगों को नेगचार दिया... पर मास्क के चक्कर में मंडप के नीचे स्वागत के समय किसी को तो दो बार तो किसी को एक बार चवन्नी भी न मिल पाई. ..समधी साहब के फुले हुए फूफा जी गुस्से में और भी फुल गए...मिश्रा जी की सारी रात उन्हें मनाने में ही गुजर गई।

मुश्किलें अभी भी मुँह बाएँ खड़ी थी। पंडित जी धोती से मैचिंग मास्क लगाए ...दो गज की दूरी से स्वाहा–स्वाहा कर रहे थे। कोरोना काल मे पंडित जी भी बड़े अपडेट हो गए हैं ...पंडित जी विवाह की शुरुआत में वर–वधू को टीका न लगाएं ऐसे कैसे सम्भव है। मिश्रा जी के बिटिया की शादी में क्वालिफाइड और डिग्रीधारी पंडित जी ने इस का भी तोड़ निकाल लिया। श्री 1008 पंडित जी ने सेल्फी स्टिक में कान खोदने वाले रुई धारी यंत्र को आगे टिका दिया और फिर क्या टीकाकरण शुरू...।

पंडित जी पूरी तरह अस्त्र–शस्त्र से लैस थे...मुँह पर मास्क,हाथ में ग्लव्स और कुर्ते में सेनेटाइजर... जिसे वो थोड़ी–थोड़ी देर में निकालते और जजमान से प्राप्त नकद धनराशि पर फुच–फुच कर छिड़कते और अपने कुर्ते में धीरे से सरका देते। पंडित जी की इस गतिविधि को देख एक शरारती तत्व ने एक प्रश्न उनकी तरफ उछाल दिया–

'पंडित जी!'

'बोलो बच्चा!'

'पडित जी, नोट में भी तो कोरोना वायरस हो सकता है ?'

लड़के की धृष्टता पर पंडित जी को क्रोध तो बहुत आ रहा था पर उन्होंने अपने क्रोध पर नियंत्रण करते हुए कहा– ''पुत्र! नोट जिस स्याही से छापी जाती है उसके सम्पर्क में आकर सारे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और वैसे भी मैं अग्नि के निकट बैठा हूँ जहाँ सारे कुत्सित विचार क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं फिर इस तुच्छ कीटाणु की क्या बिसात!'

धन्य है ऐसे विचार आते कहाँ से है, ये सोचने का विषय है। खैर. ..सदरी वाले सज्जन पुरुष ये कह कर तो निकल लिए...दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी, पर भाई कोई उनसे ये तो पूछे की कथनी और करनी में बड़ा फर्क होता है।

इधर शादी का कार्यक्रम चल रहा था, उधर बराती जीमने के लिए पहुँच गए। दो गज की दूरी ,मास्क है जरूरी३ एक बड़ी समस्या बन चुकी है। आखिर आप ही बताइए...खाना परोसने के लिए मिश्रा जी दो गज का चम्मच, पोंना, कलछुल कहाँ से लाते। ये समस्या पूरी शादी में बनी रही... मिश्रा जी सबसे खाने के लिए लिए मनुहार कर रहे थे। तभी मिश्रा जी के बेटे ने एक व्यक्ति की तरफ इशारा किया। मिश्रा जी सोच में पड़ गए ..ये तो बराती नहीं लग रहा क्योंकि बरात में तो सबने एक जैसी पगड़ी पहन रखी है पर इसने नहीं.... आजकल तो कॉलेज भी बन्द है तो हॉस्टल वाले लड़के भी नहीं हो सकते फिर, जनाब मिश्रा जी की शादी में मास्क पहनकर बिन बुलाए मेहमान बनकर पहुँच गए थे।

इमरती के स्टॉल के सामने खड़े वो तीन इमरती उड़ाने के बाद चौथी की तरफ हाथ बढ़ाने ही वाला थे कि मिश्रा जी ने पीछे से पकड़ लिया और बोले– 'हम तो लड़की वाले हैं और ये लड़के वाले... आप किसकी तरफ से हो ?'

अब जनाब का हुनर तो देखिए, मिश्रा जी की आँखों में आँखें डालकर बड़े बेशर्मी से बोले– 'मिश्रा जी! हम गिनती करने वाले हैं। शादी में काफी अच्छा इंतजाम किए हैं पर आपकी शादी में पच्चीस लोग ज्यादा हैं, चालान कटेगा, नहीं तो दूल्हा–दुल्हन की पहली रात जेल में होगी। भई एक दिन तो गुजारिये हवालात में...!'

मिश्रा जी को ए.सी. कमरे में भी पसीने आ गया। मिश्रा जी ने दूल्हे की कुर्सी पर बैठाकर बिटिया की अम्मा के हाथों से जनाब को खाना खिलवाया और फिर चलते–चलते ग्यारह सौ का लिफाफा दिया सो अलग। मिश्रा जी अब कोई भी गड़बड़ नहीं होने देना चाहते थे। चालान कटने के डर से वो फूंक–फूंक कर कदम रख रहे थे। बिटिया के जयमाल के समय डंडियों के सहारे वर–वधू ने एक–दूसरे को माला पहनाई गई। दूल्हे मियां शायद तीरंदाजी के शौकीन थे ...माला एकदम टारगेट को छूते हुए बस निकलने ही वाली थी कि बड़ी अदा से दुल्हन ने संभाल लिया। बस समझो इज्जत बच गई। वरना माला पड़ोस की गुप्ता जी के बेटी के गले मे पड़ जाती।

मिश्रा जी अब किसी भी तरह का रिस्क नहीं लेना चाहते थे। छायाकार महोदय को उन्होंने पूरी शादी में परेशान करके रख दिया...

दूल्हा–दुल्हन ने दो गज के मंत्र को कुछ इस तरह से घोंट कर पिला दिया कि क्या कहे... कभी दूल्हा फ्रेम से गायब तो कभी दुल्हन। अरे भाई!!.. क्यों बच्चे की जान लिए पड़े हो।

एक तो आजकल लड़कियाँ अपनी विदाई में वैसे भी नहीं रोती, आखिरी मेकअप के नाम पर जो महीनों पहले से ट्रीटमेंट और हजारों रुपये फूंके है, उसे वो यूँ ही जाया नहीं होने दे सकती और अब तो कोरोना का भी बहाना मिल गया...आखिर सदरी वाले सज्जन पुरूष की बात का भी तो मान रखना था। बिटिया अपनी दादी से गले मिलने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि मिश्रा जी ने डपट दिया।

सच बताए तो कोरोना काल में सबसे ज्यादा घाटा अगर किसी का हुआ तो वो उन लड़के–लड़कियों का हुआ, जो शादी में जाते ही इसलिए है कि आई टॉनिक मिल सके ...बहुत सारे लड़के–लड़कियाँ तो इतने बड़े दिल के होते हैं जो अपने माता–पिता को अपने लिए योग्य वर योग्य वधू के ढूढंने के झंझट से भी बचा लेते हैं। यानी एक शादी के साथ दूसरी शादी मुफ्त–मुफ्त...मुफ्त...ये नौजवान आँखों ही आँखों मे मोटा –मोटा उस व्यक्ति का खाका भी खींच लेते हैं। कुछ तो सपनें में स्विट्जरलैंड की हसीन वादियों में एक–आध रोमांटिक गाना भी गाकर आ जाते हैं पर उन्हें मास्क के नीचे कौन है पता ही नहीं चलता कि वो करिश्मा कपूर है या शाहरुख खान या फिर कांता बाई और रामू काका...

सच–सच बताइए इस कोरोना का कोई घर–परिवार, बहन, बेटी, ताऊ, चाचा या दूर के मौसा नहीं है क्या...ऐसा आया है कि जाने का नाम ही नहीं ले रहा। भाइयों और बहनों आप बिल्कुल भी परेशान मत होइए, हम भी आप लोगों की तरह ही न पचास में और न ही सौ की संख्या में गिने गए। सच मानिए, आजकल बस एक ही गाना याद आ रहा है– 'ये दुनिया ये महफिल मेरे काम की नहीं!'

खामोश लम्हें

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-944444-6-6 संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

व्यंग्य

अंकुश्री
8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, रांची (झारखण्ड) 834 010
ankushreehindiwriter@gmail.com

मियां मंहगू का मजमा

''कदरदानों! मेहरबानों!! आइये, आइये, दवा लीजिये!!! ... लेकिन एक बात सभी सुन लें! आप में से यदि कोई भी मंहगाई की दवा लेने आया हो तो उसे आज वह दवा नहीं मिलेगी। देश में अभी गेंहू की चर्चा चल रही है। मैं बता दूं कि मेरे यहां गेंहू नहीं मिलेगा, सिर्फ दवा मिलेगी।'' कुछ रुक कर मियां मंहगू ने फिर बोलना शुरू किया, ''आप सभी एक बात जानते हैं कि चूहे गेंहू बड़े चाव से खाते हैं। घुन देखने में छोटे होते हैं, मगर सरकारी माल पर वे बड़े जोर से और जी–जान लगाकर पड़ जाते हैं। पर लगता है कि हमारे देश के सभी चूहे और घुन शायद कहीं गायब हो गये हैं। नहीं तो करोड़ रुपये के गेंहू गायब हो जाने का दोष खाद्य निगम तथा रेलवे के कर्मठ अधिकारियों और कर्मचारियों पर क्यों मढ़ा जाता ? यह बहुत शर्म और दुख की बात है। समाचार पत्रों में प्रकाशित ऐसे समाचार को सुनने के बाद यदि चूहों और घुनों को थोड़ी भी शर्म आयेगी तो वे गेंहू और चीनी की तरह अण्डरग्राउण्ड हो जायेंगे या भूख से मरने वालों की तरह आत्महत्या कर लेंगे।

...वैसे कहना तो नहीं चाहिये। छोटा मुंह, बड़ी बात हो जायेगी। मगर गलती पदाधिकारियों और कर्मचारियों की भी है। खाद्य निगम और रेलवे के कर्मचारियों को चूहों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये थी और गेंहू खाते समय बिल में भागने का रास्ता बनाये रखना चाहिये था। जिससे पता चलता कि वे पकड़े जाने वाले हैं, वे पहले से तैयार बिल में घुस जाते। इसका लाभ यह होता कि माल खाने के बाद भी उन्हें कोई पकड़ नहीं पाता। विभिन्न मण्डियों से पंजाब जा रहे गेंहू में से एक करोड़ रुपये की घपलाबाजी कर लेना, मैं समझता हूॅं, इस देश के कर्त्तव्यपारायण अधिकारियों और सरकारी सेवकों के लिये एक मामूली–सी बात है। जब अकेले एक मुख्यमंत्री द्वारा एक अरब रुपये अपंगों को कम्बल और वृद्धों को पेन्शन देने में खर्च किया जा सकता है तो बहुत सारे पदाधिकारियों

और कर्मचारियों की मिलीभगत से एक करोड़ का गेंहू खत्म कर देना कोई अहमियत नहीं रखता। खाद्य निगम के 16 वर्ष पूरे होने की बात एक करोड़ रुपये का गेंहू गायब होने की बात के साथ याद किया जाना कहां का इंसाफ है। उस समय ट्रक में ईंट–पत्थर रख कर गेंहू का तौल बढ़ाने और उस वजन के बराबर गेंहू का बंदरबांट करने का आरोप जोर पकड़ रहा था। अखबार वाले इस बात को उछाल–उछाल कर निहाल हो रहे थे। पदाधिकारी हों या कर्मचारी, आखिर हैं तो आदमी ही, गलती हो गयी। वैसे भी गलती आदमी से ही होती है। एक बात और है कि चमन में फूल तो बहुत खिलते हैं, मगर सभी गुलाब नहीं होते। उसी तरह देश में पैदा तो एक से एक तरह के लोग होते हैं, मगर अखबार में नाम सबों का नहीं छपता। अखबार में नाम छपवाने के लिये कितना परेशान होना पड़ता है, कितनों के तलवे चाटने पड़ते हैं, इसे नये लेखकों और नये नेताओं से पूछ कर देखिये, क्योंकि इसे उनसे बेहतर कौन जानता है ?

मैं इतने दिनों से दवा बेच रहा हूॅ, पर मेरा नाम आज तक किसी अखबार वाले ने नहीं छापा। कोई अखबार वाला मेरे पास फटकने की भी कोषिष नहीं किया। जब सोचता हूॅ तो लगता है कि गलती अखबार वालों की नहीं है। मैं आज तक गलत दवा नहीं बेच पाया। इसलिये अखबार वाले मेरा नाम छापे भी तो किस काम के लिये ? अच्छा काम जितना भी कर लिया जाये, लोगों को दिखायी नहीं देता। मगर जहां थोड़ी–सी गलती हुई कि कई लोग पीछे पड़ जाते हैं, चारों तरफ हो–हल्ला हो जाता है।''

दूर–दूर तक खड़े लोग मियां मंहगू की बातें सुन कर उनके निकट आते जा रहे थे। उनका मज़मा जब पूरी तरह जम गया तो वह दवा बेचने लगे।

''आप अब सावधान होकर खड़े हो जायें। मैं अभी अपनी दवा निकालता हूॅ। लीजिये, लीजिये, दवा लीजिये।''

वे फिर चिल्ला–चिल्ला कर कहने लगे, ''कदरदानों! मेहरबानों!! दवा लीजिये!!!....''

शेखर जोशी की कहानियों में
हाशिये का समाज
इबाहुन मॉन
आईएसबीएन : 978-81-945460-6-1
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

ज्योतिष-शास्त्र : सर्वकल्याण-कारक शास्त्र

डॉ. नीलाचल मिश्र

प्राध्यापक (संस्कृत), के. सी.. पी. एन. महाविद्यालय, बंकों, खोरधा उड़ीसा

ज्योतिष एक ऐसी विद्या है जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों से परिचित करती है। ज्योतिष शास्त्र का एक अन्य नाम– ज्योतिः शास्त्र भी है, अर्थात इस शास्त्र के माध्यम से संपूर्ण सृष्टि प्रकाशित होती है। जो शास्त्र सृष्टि के सभी प्राणियों के सुख–दुख, जन्म–मृत्यु और ग्रहों की गतिविधियों से चराचर पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालता है, उसे ज्योतिरू शास्त्र कहा जाता है। दूसरे शब्दों में– जो शास्त्र सूर्य, चंद्र, गृह–मंडल और सृष्टि पर पड़ने वाले उनके प्रभाव की सम्यक जानकारी प्रदान करता है, उसको ज्योतिरू शास्त्र के नाम से जाना जाता है।

'ज्योतिषां सूर्यादि ग्राहणां बोधकम् शास्त्रम्'

अर्थात् जो सूर्य आदि ग्रहों के बारे में ज्ञान (बोध) प्रदान करता है, उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं। ज्योतिष–शास्त्र की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है, तथापि इस शास्त्र की प्राचीनता वैदिक–काल से दृष्टिगोचर होती है। वैदिक–ग्रंथों को प्राचीनतम ग्रंथ के रूप में सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त है। वैदिक–ग्रंथों के छह अंगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक, छंद और ज्योतिष) में से एक अंग 'ज्योतिष' भी है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष की उत्पत्ति वेदों के समान ही अति प्राचीन है।

विफलान्य शास्त्राणि विवादस्तेष केवलम्।
सफल ज्योतिष शास्त्र चंदार्को यत्र साक्षणम्।।

अर्थात् वाद–विवादों से घिरे होने के कारण समस्त शास्त्र विफल हैं, किंतु ज्योतिष–शास्त्र सूर्य, चंद्र आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, इसलिए इसे प्रत्यक्ष प्रमाण–शास्त्र के रूप में सर्व– स्वीकृति प्राप्त है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

ज्योतिष–शास्त्र व्यक्ति को ब्रह्मांड में ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति से अवगत कराता है। इस शास्त्र के माध्यम से निर्मित कुंडली संबंधित व्यक्ति के जन्म के समय ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार उनके प्रभाव की जानकारी प्रदान करती है। अनेक बार ग्रह–नक्षत्रों स्थिति व्यक्ति को कष्ट प्रदान करती है, जिसके निवारण हेतु रत्न–विशेषज्ञ संबंधित व्यक्ति को निश्चित अंग में धातु–विशेष में रत्न या पत्थर धारण करने का परामर्श देते हैं। यह परामर्श ज्योतिष–शास्त्र के ज्ञान के बिना प्रदान करना संभव नहीं है। रत्न या पत्थर की प्रभावी क्षमता को आधुनिक भौतिक विज्ञान में भी स्वीकार्यता प्रदान की गयी है।

सृष्टि का प्रत्येक प्राणी ग्रह–नक्षत्रों के प्रभाव से प्रभावित है। मानव जगत भी इससे अछूता नहीं है। मनुष्य का देश, स्थान, धर्म या जाति विशेष में जन्म लेना, उसका सुंदर–असुंदर रूप का धारण करना, सुख–दुख का न्यून या अधिक मात्रा में भोग करना आदि पूर्व जन्म के कर्मों द्वारा निर्धारित होता है, यह ज्ञान ज्योतिष–शास्त्र तर्कपूर्ण ढंग से प्रदान करता है। इसलिए मानव–जीवन में ज्योतिष की भूमिका को अति महत्वपूर्ण माना जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से ज्योतिष–शास्त्र मनुष्य को बुराईयों से बचाता है, और व्यक्ति को अच्छी तरह से जीवनयापन करने के लिए मार्ग की जानकारी देता है। हिंदू समाज में जन्म से मृत्यु तक समस्त कार्यों का संपादन ज्योतिष–शास्त्र के आधार पर किया जाता है।

ज्योतिष–शास्त्र के प्रकार :

भारतीय ज्योतिष–शास्त्र को मुख्य रूप से दो भागों– 'गणित ज्योतिष' और 'कलित ज्योतिष' में विभक्त किया जा सकता है। प्राचीन ज्योतिष–शास्त्र में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है–

सिद्धांत संहिता होरा रूपं स्कंधम् त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मल चक्षुः ज्योतिशास्त्रम् कल्पवम्।।

ज्योतिष–शास्त्र के जिस भाग में ग्रहों के उदय, अस्त और ग्रहण के विषय का वर्णन मिलता है, उसे ज्योतिष का 'सिद्धांत' भाग कहते हैं। और जिस भाग में ग्रहों के फलाफल, सृष्टि एवं संक्रांति आदि के विषय की जानकारी होती है, 'संहिता' भाग कहते है। जिस भाग में व्यक्ति के सुख–दुख, हानि–लाभ का विवरण होता है, उसे ज्योतिष–शास्त्र का 'होरा' भाग कहता हैं। शकुन–शास्त्र, वास्तु–विद्या, स्वप्न–फल, हस्तरेखा और शरीर के अंगों को लक्ष्य करने के बाद जो भविष्य–कथन कहा जाता है, वे ज्योतिष–शास्त्र के अंतर्गत ही होते हैं।

ज्योतिष–शास्त्र के अनुसार सौरमंडल की उत्पत्ति :

ब्रह्म–पुराण के अनुसार सौर–मंडल की उत्पत्ति का वर्णन इस प्रकार मिलता है–

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

चैत्र मासि जगद ब्रह्मा ससर्वा प्रथमेऽहनि,
शुक्ल पक्षे समग्र तत तदा सूर्योदयो सति।
प्रवर्तया मास तदा कलस्य गणनमपि,
ह्राहन्नागा नूतन्मासान् वसरानवत्स शधि पान्।।

अर्थात् चौत्र शुक्ल प्रतिपक्ष रविवार को सूर्योदय के समय सभी ग्रहों ने आश्विन नक्षत्र एवं मेष राशि में थे, तब ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की थी। उस समय से सभी ग्रहों ने अपने–अपने कार्य को आरंभ कर दिया। उस समय से दिन, रात, तिथि, वार, ऋतु, मास, पक्ष, वर्ष, संवत्सर आदि प्रारंभ हुए।

ग्रह, नक्षत्र एवं राशि :

ब्रह्मांड के अनंत कोटि तारों, ग्रहों और नक्षत्रों से सृष्टि का निर्माण हुआ है। प्रबुद्ध ज्योतिष–मनीषियों ने भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र में सात ग्रहों (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, बृहस्पति), बारह राशियों (मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन) और सत्ताईस नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्दा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, माघ, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती) की रचना की थी। कालांतर में भारतीय गणनाकारों ने ज्योतिष–शास्त्र में राहू और केतु को भी ग्रहों की श्रेणी में सम्मिलित कर लिया।

आकाश–मंडल में सूर्य के भ्रमण मार्ग को 'क्रांति–मार्ग' के नाम से जाना जाता है। इस क्रांति–मार्ग में प्रकाश–पुंज के रूप में बारह तारे दिखाई देते हैं, इसी को राशि–चक्र कहते हैं। प्रत्येक राशि के विशेष गुण एवं स्वरूप के विशिष्ट भाव परिलक्षित होते हैं। बारह राशियों में सत्ताईस नक्षत्र भी विद्यमान होते हैं। नक्षत्र–समूह मिलकर जो आकृति ग्रहण करते हैं, उसी के अनुरूप इन राशियों के नाम होते हैं।

वार :

भारतीय ज्योतिष–शास्त्र के अनुसार– सूर्योदय से आरंभ करके दूसरे दिन सूर्योदय होने तक की अवधि को 'वार' कहा जाता है, यथा– सोमवार के सूर्योदय से एक मिनट पहले तक के समय को रविवार समझा जाता है। अंग्रेजी–सभ्यता के अनुकरण में रात्रि के बारह बजने के बाद दिन व दिनांक, भारतीय ज्योतिष–शास्त्र में स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

योग :

सूर्य और चंद्र दोनों राशियों का योग 13 अंश 20 कला जब इसके गुणक में पूर्ण होता है, तब 'योग' होता है। सूर्य–चंद्र मिलकर जितने समय में 13

अंश 20 कला का समय पूर्ण करते हैं, उतने समय में एक योग स्वीकार किया जाता है, और इसे 'विष्कुंभ आदि योग' कहा जाता है। इनकी संख्या भी 27 है– विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतिपात, वरीयान, परिध, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, इन्द्र और वैधृति।

पंचांग :

किसी समय के संबंध में जानकारी अर्जित करने के लिए पंचांग (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण) के विषय में जानना आवश्यक है। ज्योतिष में पंचांग का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष के प्रति अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति पंचांग का बार–बार अवलोकन–अध्ययन करके ज्योतिष–शास्त्र में पारंगत हो सकते हैं। तिथि क्या है, वार क्या है, नक्षत्र क्या है, तारीख क्या है, तिथि कितने समय तक रहेगी, सूर्योदय–सूर्यास्त का समय क्या है, सूर्य–चंद्र किस–किस राशि में है..... आदि की जानकारी पंचांग के माध्यम से ही संभव है।

उपसंहार :

उपर्युक्त विवेचन से हम ज्योतिष–शास्त्र के संबंध में यह कहने में समर्थ हैं कि ज्योतिष–शास्त्र एक अनुपम और अद्वितीय शास्त्र है। इसके बारे में जानकारी संग्रहित करना, और उनको अपने दैनिक कार्यों में उपयोग करने से व्यक्ति का जीवन सुगम और सुंदर हो जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

संदर्भ :

1. तिलकचंद, तिलक– आओ ज्योतिष सीखो, वो एंड एस पब्लिशर्स, नई दिल्ली
2. आनंद, अरुण सागर– अंक ज्योतिष विज्ञान एवं भविष्य–फल, वो एंड एस पब्लिशर्स, नई दिल्ली
3. सिंह, देवकीनंदन– ज्योतिष रत्नाकर, मोतीलाल बनरसीदास पब्लिशर्स, नई दिल्ली
4. मिश्र, सुरेश चंद्र– ताजिक तोलकंठी, रज्जन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
5. मिश्र, सुरेश चंद्र– मुहूर्त चिंतामणि, रज्जन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
6. पुर्सनाणों, ईश्वर– फलित ज्योतिष ज्ञान, राधा पॉकेट बुक्स, मेरठ, उत्तर प्रदेश

शोध–लेख

लोक भाषा और लोक संस्कृति

अवधी के विशेष संदर्भ में

डॉ. शैलेश शुक्ला
राजभाषा अधिकारी, एनएमडीसी (भारत सरकार का उपक्रम)
दोणिमलै परिसर, बेल्लारी, कर्नाटक 583 118
poetshailesh@gmail.com

शोध सार

लोक मानस की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति लोक भाषा में ही हो पाना अधिक प्रभावकारी होता है। लोकभाषा यद्यपि मिश्रित बोलियों का स्वरूप ग्रहण करती है, किन्तु यहां की लोकभाषा अवधी प्रधान है। लोकभाषा की जितनी निकटता लोक मानस से होती है, उतनी निकटता साहित्यिक भाषा में नहीं होती। साहित्यिक भाषा में एक विशेष प्रकार का अक्खड़पन होता है, जबकि लोकभाषा में हृदय के मर्मस्थल को छूकर प्रभावित करने की क्षमता होती है और सरलता, सहजता, तरलता सहज भी। इसीलिए लोक जीवन और लोक मानस, यदि एक दूसरे से संशलिष्ट हैं तो लोक भाषा उनके संश्लेषण का रसायन है। तात्पर्य यह है कि लोकभाषा में ही लोक जीवन और लोक मानस समाहित होता है। लोकभाषा, लोक जीवन के सन्निकट चेतना का उद्‌गम होती है। समाज की संवेदना को एक दूसरे तक पहुँचाने का माध्यम लोक भाषा तत्सामयिक स्थितियों–परिस्थितियों को भी बिम्बित करती है। इस तरह लोक भाषा समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का उपक्रम करती है। इस उपक्रम प्रक्रिया को सातत्य देने की जो विधा है, वही लोक साहित्य में अनुभूत जन्य चेतना की अभिव्यक्ति होती है। इस शोध लेख में लोक भाषा और लोक संस्कृति के विविण पक्षों को अवधी भाषा के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बीज शब्द

लोक, लोकभाषा, लोक संस्कृति, लोक संग्रह, लोक कला, लोक परंपरा, लोक संस्कार, लोक विश्वास।

लोक

'लोक' शब्द अपने आप में एक व्यापक शब्द है। वृह्द हिंदी कोश में इसे विश्व का एक विशेष भाग माना गया है, जिसमें स्वर्ग, पाताल और पृथ्वी तीनों लोक समाहित है। वस्तुतः 'लोक' शब्द संस्कृति के 'लोक दर्शन' धातु में 'धञ' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ है 'देखना'। लट् लकार में इसके अन्य पुरुष एकवचन का रूप 'लोकते' है। अतः लोक शब्द का अर्थ हुआ 'देखने वाला'। अतः वह समस्त जन समुदाय जो दृष्टि–निक्षेप रूप कार्य को सम्पन्न करता है 'लोक' कहलाता है। लोकशब्द के दो प्रचलित अर्थ है– विश्व अथवा समाज तथा दूसरा जनसाधारण। आधुनिक संदर्भ में 'लोक का अर्थ' 'ग्राम्य' या 'जनपदीय' समझा जाता है। परन्तु डॉ. हजारी प्रसाद का कथन है– '' 'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद' या ग्राम्य नहीं है बाल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई वह संपूर्ण जनता है, जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है। ये लोग नगरों में रहने वाले रूचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत लोगों की अपेक्षा अधिक सरस और कृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते है और परिष्कृत रुचि रखने वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारताओं को जीवित रहने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती है, उनको उत्पन्न करते हैं।''[1] वहीं डॉ. भोलानाथ तिवारी का निष्कर्ष है कि– '' 'लोक' समाज का वह वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीय और पांडित्य की चेतना या उसके अहंकार से शून्य है और जो परम्परा के प्रवाह में जीवित है।''[2]

मूल्य, लोकधर्म, लोकदेवता, लोक अनुष्ठान, लोकभाषाएँ, लोक साहित्य, लोककलाएँ, लोक कौशल और शिल्प–परम्पराओं का विकास हुआ है। आजकल 'लोक' शब्द हिन्दी में अंग्रेजी के 'फोक' शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होने लगा है। अंग्रेजी में 'फोक' शब्द का प्रयोग अशिक्षित, असभ्य, अर्धसत्य आदि वर्ग के लिए प्रयुक्त होता है। किंतु विद्वान लोग 'लोक' शब्द का प्रयोग सरल एवं सहज जीवन के अभ्यस्त ग्रामीणों के लिए करते है। अतः यहां यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में 'लोक' अंग्रेजी के 'फोक' से भिन्न है तथा अधिक समृद्ध, भाव सम्पन्न तथा व्यापक है। इस शब्द का भारतीय परंपरा में बड़ा व्यापक, समृद्ध व बहुरंगी अर्थ है। जिसका विकास भारतीय समाज ने सदियों में किया है। भारतीय साहित्य में 'लोक' शब्द का उपयोग अनेक संदर्भो में किया गया है। ऋग्वेद पुरुष सूक्त में 'लोक' का अभिप्राय 'जीव' तथा 'स्थान' के संदर्भ में है, तो वहीं

पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी', पंतजलि कृत 'महाभाष्य' तथा भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र में' 'लोक' शब्द का प्रयोग शास्त्तेर, वेदेतर, एवं सामान्य जन के लिए किया गया है। भगवत गीता में 'लोक' शब्द का प्रयोग अनेक बार किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने 'लोक संग्रह' पर अधिक बल दिया। वे अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं–

'कर्मणैव हि संसिद्धमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रह मेवापि संपश्यन कर्तुमर्हसि।।'[3]

यहाँ 'लोक संग्रह' का तात्पर्य साधारण जनता के आचरण, व्यवहार एवं आदर्श रूप से लिया जा सकता है। समाट अशोक के शिलालेखों में 'लोक' शब्द 'समस्त प्रजा' के लिए प्रयोग किया गया है। हिंदी साहित्य में 'लोक' शब्द का अभिप्राय पृथक अर्थो में है। हिंदी संत काव्य में लोक का अर्थ 'मृत्युलोक', 'पृथ्वीलोक' तो कहीं संसार के संदर्भ प्रयुक्त किया गया है। भक्ति काव्य में 'लोक' का तात्पर्य 'जन साधारण' है। भारतेन्दु कालीन पद्य साहित्य में 'लोक' शब्द का प्रयोग भरपूर मात्रा में किया गया है। जिसका मुख्य संबंध 'जन सामान्य में प्रचलित रीति' से है। 'लोक' मानव समाज का वह वर्ग है जो बौद्धिक तथा अभिजात्य वर्ग से अलग जवीन जीने में अभ्यस्त है। इस वर्ग का लोक में प्रचलित रीति–रिवाजों, अंधविश्वासों तथा लोक साहित्यिक प्रवृत्ति के प्रति गहरा लगाव होता है। यह वर्ग गाँव या नगर में रहने वाली उस जनता की ओर संकेत करता है जो कृत्रिमता से रहित सरल तथा सहज जीवन यापन करते हुए अपने पूर्वजों द्वारा चलाई गई परंपरा का निर्वहन एवं उसका संरक्षण करती है। इसी तथ्य के समर्थन में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का मत है– '' 'लोक' शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नही बल्कि नगरों व गाँवों में फैली हुई वह समस्त जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नही हैं, ये लोग परिष्कृत रूचि से सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल, अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं''[4] अतः उपरोक्त परिभाषा के अनुसार यह कहा जा सकता है कि 'लोक' एक 'विशेष जनसमूह' है जो आदि से ही अपने समस्त अनुभवों से अर्जित ज्ञान, परंपरा, विश्वास, भाषा, संस्कृति, धर्म एवं आदर्शो को संरक्षित करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते आ रहे है।

लोक भाषा

लोक मानस की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति लोक भाषा में ही हो पाना अधिक प्रभावकारी होता है। लोकभाषा यद्यपि मिश्रित बोलियों का स्वरूप ग्रहण करती है, किन्तु यहां की लोकभाषा अवधी प्रधान है। लोकभाषा की जितनी निकटता लोक मानस से होती है, उतनी निकटता साहित्यिक भाषा में नहीं

होती। साहित्यिक भाषा में एक विशेष प्रकार का अक्खड़पन होता है, जबकि लोकभाषा में हृदय के मर्मस्थल को छूकर प्रभावित करने की क्षमता होती है और सरलता, सहजता, तरलता सहज भी। इसीलिए लोक जीवन और लोक मानस, यदि एक दूसरे से संशलिष्ट हैं तो लोक भाषा उनके संश्लेषण का रसायन है। तात्पर्य यह है कि लोकभाषा में ही लोक जीवन और लोक मानस समाहित होता है। लोकभाषा, लोक जीवन के सन्निकट चेतना का उद्‌गम होती है। समाज की संवेदना को एक दूसरे तक पहुँचाने का माध्यम लोक भाषा तत्सामयिक स्थितियों–परिस्थितियों को भी बिम्बित करती है। इस तरह लोक भाषा समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का उपक्रम करती है। इस उपक्रम प्रक्रिया को सातत्य देने की जो विधा है, वही लोक साहित्य में अनुभूत जन्य चेतना की अभिव्यक्ति होती है। लोक साहित्य के अंतर्गत आने वाले विविध प्रकार के गीतों में कजरी, सावनी, होली (फाग), बारहमासा, छहमासा, चौमासा, धोबिया, विरहा, चमरनचना, जतसार, सोहनी (निराई), कोल्हू के गीत, जन्मगीत, सोहर, बधाई, छठी, मुण्डन, कर्ण वेध, जनेऊ के गीत, कोहबर के गीत, द्वारचार के गीत, बाती के गीत, गालियाँ, जेउनार, परिछन, बनरा–बनरी, नकटा, गौना, मृत्यु संस्कार आदि के गीत लोक गीत और लोक साहित्य की परिधि में आते हैं।

लोक संस्कृति

'संस्कृति' वह है जो लोक से बनती है, उससे प्रेरणा प्राप्त करती है। यह मानव जीवन की अमूल्य निधि है। यह गतिशील एवं परिवर्तनशील है। जिस प्रकार नदी अपने स्रोतों से जल लेकर अपना स्वरूप निर्धारित करती है उसी प्रकार संस्कृति असंख्य लोगों के आचार, विचार, कला, शिल्प आदि को आत्मसात करते हुए निरंतर आगे बढ़ रही है। 'संस्कृति' शब्द वैदिक काल से ही प्रचलित है। 'संस्कृति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख 'वायु पुराण' में मिलता है। जिसमें धर्म, काम, मोक्ष, अर्थ विषयक जैसी मानवीय घटनाओं को संस्कृति के अन्तर्गत माना गया। वास्तव में 'संस्कृति' की अवधारणा इतनी व्यापक है कि इसे एक वाक्य में परिभाषित करना कठिन है इसके उपरांत अनेक विद्वानों में संस्कृति पर अपने विचार प्रकट किए एवं परिभाषाएं दी। मानवशास्त्री विद्धान डॉ. डी. एन. मजूमदार ने संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''संस्कृति के अन्र्तगत मनुष्य की रीति–नीति, लोक विश्वास, आदर्श कलायें तथा मानव द्वारा उपलब्ध समस्त, कौशल एवं योयताओं को लिया जा सकता है।''[5] संस्कृति से किसी देश के आदर्श एवं जीवन मूल्य निर्धारित होते है। यह वर्षो की परंपरा का संरक्षण करते हुए

नवीन मूल्यों को आत्मसात करती है। यह माना जाता है कि किसी भी देश की जैसी संस्कृति होगी वहाँ की सभ्यता उसी के अनुरूप बनती है। इसी भाव को स्पष्ट करते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू का कथन है कि – ''समृद्ध सभ्यता में संस्कृति का विकास होता है उससे दर्शन, साहित्य, नाटक, कला, विज्ञान, गणित, विकसित होती है। मानव मन का बाह्‌य प्रकृति मूलक जो विकास हुआ, उसे सभ्यता कहेगे, मानव की अंर्तमुखी प्रवृत्तियों से जो निर्माण हुआ, वह 'संस्कृति' है।'' [6]

'लोक संस्कृति' लोक जीवन का ही दूसरा नाम है। मानव समाज का कोई भी मानव 'लोक संस्कृति' से अछूता नही रह सकता है। यह मानव के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक मानव जीवन से जुड़ी रहती है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में 'लोक संस्कृति अहम भूमिका निभाती है। यह किसी भी समाज का आधार हाती है। लोक–साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान ए.एन. स्पिनोजा ने लोक–संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''विश्वास, प्रथाये अन्य परंपराएं, लोकोक्तियाँ, पहेलियों, गीत, पुराण कथा, लोक–कथा, विधि विधान, जादू–टोना, आदिम और अशिक्षित जनता के क्रिया–कलाप आदि जीवन शैली से संबंध सब कुछ 'लोक संस्कृति में आता है।''[9] 'लोक' मनुष्य के विश्वास, व्यवहार परंपरा और संकल्पों से जुड़ा होता है तो वहीं संस्कृति समाज के आदर्शो और जीवन मूल्यों से जुड़ी रहती है। 'लोक' की सहजता एवं 'संस्कृति' के परिष्कार से आदर्श संस्कृति का निर्माण होता है। जिसे 'लोक संस्कृति' कहा जा सकता है। 'लोक' से जुड़ने पर यह संस्कृति नागरिक संस्कृति से भिन्न होती है। इसकी अभिव्यक्ति जिस रूप में होती है वह परिष्कृत एवं अलंकृत रचनाओं से भिन्न होती है किन्तु, उस अभिव्यक्ति में सामान्य जन मानस के हृदय की वेदना होती है। यह सामान्य जन मानस के मस्तिष्क की उपज ना होकर उसके हृदय की उपज होती है। यह शास्त्रीय नियमों से दूर सामान्य जन के व्यवहार, शैली, मूल्य एवं आचरण पर आधारित होती है।

लोक परंपराएं और संस्कार

किसी भी भाषा का उत्स उसका लोक और उस लोक में व्याप्त संस्कृति होती है। लोक और संस्कृति की अपनी परम्पराएँ और संस्कार होते हैं। साहित्य और समाज के उन्नयन में जितना योगदान शिक्षित जन–समुदाय का होता है, उतना ही योगदान अशिक्षित जन–समुदाय का होता है। यह अशिक्षित जन–समुदाय अपने स्मृति कोशों में परंपराओं और संस्कारों को 'लोक–स्वर' के रूप में संरक्षित रखता है। यह समुदाय मौखिक–वाचिक परंपरा द्वारा लोक–स्वर का जीवंत और सजग बनाए रखने का गुरुतर दायित्व निर्वहन करता है. लोक–स्वर के भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित

क्षेत्र के सामाजिक–राजनैतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है. जिस तरह वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषी व्यक्ति, हिंदी भाषी व्यक्तियों को हेय–दृष्टि से देखता है, उसी तरह अवधी व अन्य क्षेत्रीय लोक–स्वरों को संबल देने वाले भाषा–भाषी व्यक्तियों को हिंदी–भाषी व्यक्ति हीन–दृष्टि से देखता है। इसी का परिणाम है कि हिंदी परिक्षेत्र से हिंदी को सुदृढ़ आधार प्रदान करने वाले अवधी और ब्रज–भाषियों की संख्या में दिनोंदिन कमी आती जा रही है। अवधी लोक–स्वर की ध्वनि लोकगाथा, लोकनाट्य, लोककथा, लोक–सुभाषित, लोक–प्रहेलिका, लोक–नृत्य और लोक–संस्कृति को परिलक्षित कर सुना जा सकता है। विविध लोक–क्षेत्रों की तरह अवधी लोकगाथाओं का संसार बहुरंगी है. अवधी लोकमानस लोकनायकों की चारित्रिक लीलाओं को गेय कथात्मक धरातल पर प्रस्तुत करके उनको लोकगाथा बना देता है। लोकगाथा की प्रस्तुति में कथा, गीत, और नृत्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती है. जीवन और जगत के प्रेरक–प्रसंग लोकगाथा के उपजीव्य होते हैं. यह दृश्य और श्रव्य विधा का उदात्त समन्वय है। इसी तरह अवधी लोकमानस की भावनाओं, आस्थाओं, मान्यताओं और वर्जनाओं की रंगमंचीय प्रस्तुति 'लोकनाट्य' कहलाती है। अवधी लोकनाटकों में व्यावसायिकता तथा पांडित्य–प्रदर्शन का भाव न होकर लोक–अनुरंजन का प्रयोजन ही प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। अवधी लोकनाटकों में कठपुतली, स्वांग, ख्याल, नौटंकी, बहुरूपिया, भांड–भंडैती और रामलीला आदि प्रमुख हैं। एक **सोहर–गीत** की पंक्तियाँ देखिये–

'सबका तौ तुम सब कुछ दीन्ह्यो हमका बेकार
परदे भीतर जच्चा बोली, सुनु राजा मोरी बात
तुम का तो मैं सब कुछ दीन्हयों
बंस उजागर कीन्ह्यों
बाबाजी को नाम दीन्ह्यों, दीन्ह्यों हौं लाल।' [7]

लोक संस्कृति लोकभाषा में सामाजिक कुरीतियों को उजागर करने में आगे रही है। **पुत्र–जन्म में उत्सव और पुत्री–जन्म में शोक** घाघ की लोकोक्ति के रूप में देखा जा सकता है–

'नसकट खटिया, बतकट जोय,
जो पहिलौठी बिटिया होय.
पातर कृषी बौरहा भाय,
घाघ कहैं दुःख कहाँ समाय।' [8]

पुत्री के जन्म पर न तो किसी में उत्साह दिखाई देता है, और न ही कोई उत्सव मनाया जाता है. यहाँ तक कि सोअहर–सरिया गाने के लिए आई हुई पड़ोस की स्त्रियाँ बिना गाये ही एक–एक कर खिसक जाती हैं। कन्या की माता अकारण ही स्वयं को अपराधिनी मानने लगती है। एक लोकगीत

में देवी से जिस प्रकार विनती की गई है, उससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक मनोवृत्ति कन्या के पक्ष में नहीं थी–

'मांग्यो बड़ा दानु, देवी के मंडीलवा भीतर.
अरी मांग्यो मैं हरी–हरी चुरियाँ सेंदुरा भरी मांग.
अरी मांग्यो मैं पांच–सात भैया, बहिन अकेलि.
अरी मांग्यो मैं पांच–सात देवरा, ननदि अकेलि।'[9]

इसी तरह तत्कालीन परिवेश में व्याप्त अन्य सामाजिक बुराइयों की ध्वनि अवधी लोक–स्वर में सहजता से सुनी जा सकती है. दहेज–प्रथा, सती–प्रथा, बाल–विवाह, जाति व्यवस्था का जीवंत रूप अवधी लोक–स्वरों में उपलब्ध है. अवधी लोक संस्कृति को अभिव्यक्ति प्रदान करती लोकभाषा में अवधी की कुछ कहावतें दृष्टव्य हैं–

- ✓ अब पछताये होत का,
  जब चिड़िया चुग गई खेतु।
- ✓ आठ गाँव के चौधरी, बारह गाँव के राव
  आपन काम न आवें, तौ ऐसी–तैसी मा जाय।
- ✓ उत्तम खेती मध्यम बान,
  निखिद चाकरी भीख निदान।
- ✓ ऊँट हेरान मटुका मा ढूँढें।
- ✓ एकु हाथे तारी नाहीं बाजत।
- ✓ कहे ते धोबी गदहा मा नाहीं चढत।
- ✓ खेती, पाती, बीनती औ घोड़े के तंग,
  आपन हाथ संवारिये, लाख लोग होय संग।
- ✓ गुजरा गावहु औ लौटा बाराती,
  कोऊ नाहीं पूँछत।
- ✓ चारि कौर भीतर, तब देव औ पीतर।
- ✓ जापर जाकर सत्य सनेहू,
  सो तेहि मिलत न कछू संदेहू।

इस तरह हम देखते हैं कि लोक संस्कृति लोक भाषा में जीवन और जगत के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी आवाज प्रदान करके जीवंतता प्रदान करती है। हिंदी साहित्य में ख्यातिलब्ध ग्रंथ 'श्रीरामचरितमानस' के रूप में अवधी लोक संस्कृति अपनी निज भाषा में अपनी महत्ता को स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। अवधी लोक संस्कृति और लोक भाषा की रसात्मकता किसी भी सहृदय को द्रवित करने में समर्थ है। लोकमानस में व्याप्त विविध विषयक अवधी लोक संस्कृति की लोक भाषा में निःसृत स्वर दृष्टव्य हैं–

(क). पुराण विषयक

- पीसे क अकरा,
  गावै क सीता हरन।
- देविन की देह जरे,
  पूत मांगे भोंपा।
- का सरग मा दिया देखे हौ।

(ख). लोकविश्वास विषयक

- अंग फरकै लाग।
- कउआ ब्वालति हवे।
- अहिरै के पड़वा हौ।

(ग) भाग्य विषयक

- कहूं जाव, करमौ साथे जई।
- भीख नाहीं देवौ,
  का त्वांबौ फोरि लेहौ।

(घ) नीति विषयक

- आँखी का पानी मरिगा हवे।
- काल्हि का लीपा गवा बिलाय
  आज का लीपा दयाखौ आय।

(ङ) सामाजिक जीवन विषयक

- भूखन के मारे कंडा होइगे।
- गरीबी मा आटा गीला।
- गगरी मा दाना, सूत उताना।

निष्कर्ष

लोक की संस्कृति और भाषा के माध्यम से हम अपने देश और समाज की जाग्रत परंपराओं और संस्कारों की पहचान करते हैं, जो केवल हिंदी और

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अंग्रेजी के माध्यम से संभव नहीं है। इसके लिए हमें स्थानीय लोक संस्कृति और भाषा के अलिखित साहित्य को प्रकाश में लाना होगा।

संदर्भ :

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'जनपद', वर्ष 1, पृ. 65
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी, निबंध प्रभाकर, 191, पृ. 151
3. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय–3, श्लोक–20
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'जनपद', वर्ष 1, पृ. 67
5. डा. मजूमदार, मदान, 'एन इन्ट्रोडक्शन टु सोशल एन्थ्रेपॉलाजी', पृ. 14
6. नेहरू, पंडित जवाहर लाल, 'भारत एक खोज' पृ. 313
7. नालंदा विशाल शब्द सागर, संपादक नवलजी (देहलीः फूलचंद जैन, 1950) पृ. 1221
8. विद्या चौहान, लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : भोजपुरी व अवधी के संदर्भों में, प्रस्तावना से
9. नालंदा विशाल शब्द सागर, संपादक नवलजी (देहलीः फूलचंद जैन, 1950) पृ. 1227

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

समीक्षा

जीवन से झाँकती कहानियां : यात्रीगण कृपया ध्यान दें!

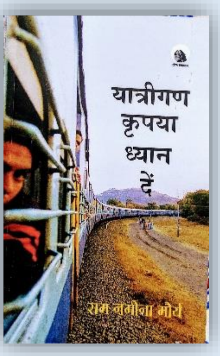

पुस्तक : यात्रीगण कृपया ध्यान दें।, लेखक : राम नगीना मौर्य
प्रकाशन : रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, मूल्य– रूपये 180/–

डॉ. हरेन्द्र कुमार
विष्णु इन्क्लेव, फ्लैट–नं. 105, शिव मंदिर के निकट, दीपुगढ़ा, हजारीबाग 825301

''डा0 विद्यानिवास मिश्र'' पुरस्कार एवं ''यशपाल पुरस्कार'' से सम्मानित कथाकार राम नगीना मौर्य आधुनिक हिंदी कहानी के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। सहज भाषा में जीवन के विभिन्न पक्षों को सहज रूप से कहानी में ढ़ाल देने की कला में ये सिद्धहस्त हैं। 'आखिरी गेंद', 'आप कैमरे की निगाह में हैं', तथा 'सॉफ्ट कॉर्नर' के बाद यह इनका चौथा महत्वपूर्ण संग्रह है। चार वर्षों में चार कहानी संग्रह का आना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इनकी कहानियों में जो कहानीपन है, जो सहज प्रवाह है, वह पाठकों से सीधे संवाद करती है इसलिए पाठकों को इनकी कहानियॉ अपने आस–पास की, अपने परिवेश की और कभी–कभी तो खुद अपनी कहानी प्रतीत होती है। जहॉ तक 'यात्रीगण कृपया ध्यान दें' संग्रह की बात है तो इसमें 10 कहानियॉ हैं, पर इन 10 कहानियों के अतिरिक्त इसमें एक और कहानी भी है– 'अपनी बात'। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि पाठक प्रस्तावना या अपनी बात को पुस्तक का हिस्सा ही नहीं मानते और सीधे

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

विषयवस्तु से पुस्तक की शुरूआत करते हैं। लेकिन अगर इस संग्रह के साथ पाठक यह प्रयोग करेंगे तो एक बड़ी महत्वपूर्ण कहानी के रसास्वादन से उन्हें वंचित होना पड़ेगा। मौर्य जी की 'अपनी बात' अपने आप में एक कहानी है जिसमें इन्होंने बड़े सहज ढंग से न सिर्फ जीवन और कहानियों के संबंध में बात की है बल्कि अपनी रचना प्रक्रिया की बारीकियों से भी परिचय कराया है। इन्होंने लिखा है–''कहानियॉ जहॉ एक तरफ हमारा मनोरंजन करती है, तो वहीं दूसरी तरफ हमारा मार्गदर्शन भी करती हैं। ये कहानी ही तो है जो थोड़े शब्दों में ही हमें जीवन की विडम्बनाओं, विद्रुपताओं, विसंगतियों, सुख–दुख, आशा–निराशा, खट्टे–मीठे पल, उतार–चढ़ाव के क्षण, घटनाओं के अच्छे–बुरे पक्ष को समझने में मदद करती हैं।''

अपने लेखन के संबंध में इन्होंने स्पष्ट किया है–, ''मुझे लगता है कि समय का सार्थक सदुपयोग या खुद को व्यस्त रखना एक बडा कारण हो सकता है। लिखकर मैं अपने आपको ही जानने–बूझने–समझने का प्रयास करता हूॅ।''

लेखक का यह कथन कि लेखक लेखन के जरिए अपने पाठकों से संवाद ही तो करना है, बताता है कि लेखक स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए कितना तत्पर है। उनकी यही उत्सुकता उनकी कहानियों में भी दिखाई देती है तभी तो वे छोटी–छोटी घटनाओं में अपने लिए कहानी का उत्स तलाश लेते हैं। इनकी कहानियॉ पाठकों से मानसिक श्रम नहीं कराती बल्कि उनसे बतियाते–बतियाते अपनी बात कहकर आगे निकल जाती है। ये शब्दों के जाल नहीं बुनते, भाषा की क्लिष्टता से पाठकों पर अपनी विद्वता का रौब नहीं झाड़ते बल्कि उनसे आत्मीयता के साथ संवाद करते हैं और यही एक सफल कहानीकार की निशानी है।

अब ''यात्रीगण कृपया ध्यान दें'' कहानी संग्रह की कुछ कहानियों पर बात करना चाहूॅगा। बात पहली कहानी से ही जो हल्के–फुल्के अंदाज से प्रारंभ होकर एक गंभीर अंत तक पहुॅच जाती है। ट्रेन में सपरिवार यात्रा करते मथुरादास का ध्यान एक नवविवाहिता पर जाता है जो घूॅघट में थी, मथुरादास उसकी एक झलक पाने को बेचैन, मन ही मन न जाने कितनी कल्पनाएं करते हैं पर जब सच से सामना होता है तो पॉवों के नीचे की जमीन खिसक जाती है। 'यात्रीगण कृपया ध्यान दें' उद्घोषणा स्टेशन पर यात्रियों का ध्यान खिंचती है और यह कहानी पाठकों का जिसमें एक एसिड अटैक पीड़िता से विवाह करने वाले युवक का साहसपूर्ण निर्णय निश्चय ही समाज को एक सकारात्मक संदेश देने का काम करता है। जो मथुरादास उस नवविवाहिता के बारे में कपोल–कल्पनाऍ कर रहे थे, सच्चाई जानने

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

पर उस दम्पति की सुख–समृद्धि के लिए दुआ मॉगते वहॉ से विदा होते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण कहानी है'–'रोटेशन सिस्टम से' जिसमें कहानीकार ने घर में रखी छह कुसिर्यो की बातचीत के माध्यम से घर का माहौल और उसमें रहने वाले लोगों की आदतों एवं व्यवहार का बखूबी चित्रण किया है। साथ–ही–साथ रोटेशन न होने से कुसिर्यो का एक दूसरे के प्रति नजरिया देखकर दफ्तर का दृश्य सजीव हो उठता है। यहॉ अमूर्त के माध्यम से लेखक ने मूर्त का जो सटीक चित्रण किया है वह काबिले तारीफ है। एक कहानी है–'बेचारा कीड़ा'। इस कहानी को पढ़ते हुए परसाई का 'केंचुआ' याद आ जाता है। असमंजस की स्थिति और 'रीढ़ की हड्डी' न होने के कारण व्यक्ति की क्या स्थिति हो सकती है उसका जीवंत उदाहरण समर है जो सिवाय हाथ मलने के कुछ नहीं कर पाता। 'तुमने कहा जो था' कहानी पति–पत्नी के बीच मजबूत रिश्ते की दास्तान है। यह कहानी सिखाती है कि पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों को परस्पर एक दूसरे की भावनाओं एवं प्रतिष्ठा की कद्र करनी चाहिए। कहानी 'फिर जहाज पर आयो' भी पति–पत्नी के इसी मजबूत रिश्ते की बानगी है।   'उन्होंने नाम नरेश समथिंग बताया था' कहानी बूढ़े–बुजुर्गो के जीवन के अकेलेपन, उनकी परेशानियॉ, उन्हें न सुन पाने का दर्द और अमानवीय हो चले कार्यप्रणाली पर करारा प्रहार करती है। 'शेष आगामी अंक में' गलतफहमी से एक लेखक से उलझी युवती की कहानी है जो सच्चाई जान लेने पर उनसे मिलकर क्षमा–याचना करती है। उनकी मुलाकात से उलके बीच की गलतफहमियॉ दूर होती है तब जाकर लेखक को मानसिक विश्रांति मिलती है। कुल मिलाकर 'यात्रीगण कृपया ध्यान दें' कहानी संग्रह की कहानियॉ हमें जीवन के विविध प्रसंगों से साक्षात्कार कराती है। यह संग्रह निश्चय ही पठनीय एवं संग्रहणीय है। और उम्मीद है कि इनके अन्य संग्रहों की तरह इस संग्रह को भी पाठक हाथों हाथ लेंगे। पुस्तक के सुंदर प्रकाशन एवं खूबसूरत आवरण के लिए रश्मि प्रकाशन, भी बधाई के पात्र हैं।

मीडिया और स्त्री

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-1-0

संस्करण : 2014, मूल्य : 165/-

मानवता का संदेशवाहक : बलिदानी राजदूत

डॉ. अनीता पंडा
वरिष्ठ शोध कर्ता, आई.सी.एस.एस.आर., दिल्ली
अतिथि प्रवक्ता, मार्टिन लूथर क्रिश्चियन विश्वविद्यालय,शिलांग
aneeta.panda@gmail.com

विश्व स्तर पर संस्कृति मानवीय मूल्य हैं, जिसमें तत्व ज्ञान, दर्शन, धर्म, मान्यता और लोक समाहित है। इसी संस्कृति से मानव के जीवन में अनेक नियम और विधि–विधान बने हुए हैं। खासी समुदाय में पहाड़ियों, पर्वतों, नदियों, जलप्रपातों, फूलों आदि के इर्द–गिर्द कहानियां बुनने और रिकार्ड रखने की मौखिक परम्परा रही है लेकिन इन मिथकों तथा लोककथाओं में समयानुसार परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन आता रहा है। ये कथाएँ अलग–अलग भागों को जोड़ते हुए एक उपसंहार पर पहुँचती हैं। ऐसे में ये कथाएँ वास्तविकता से दूर भी लगती हैं। इनमें विशेष बात यह है कि ये लोक कथाएँ एवं मिथक खासी समुदाय की विचारधारा, धर्म, नैतिकता और सामाजिक तथा उनकी जीवन–शैली पर आधारित है। अतः खासी लोक कथाओं का विश्लेषण और अध्ययन उनके पौराणिकता एक भाग है, जिसने खासी धर्म, रीति–रिवाज और खासी संस्थाओं आदि को प्रभावित किया है। इतने वर्षों के बाद भी आज वे इसे पूरी तरह से मानते आ रहें हैं। ये कथाएँ खासी विचारधारा और उनकी परम्परागत संस्थाओं और जीवन–शैली को समझने में सहायक हैं। इनमें उच्च मानवीय मूल्य निहित हैं, जो त्याग, बलिदान एवं सद्कर्म के लिए प्रेरित करते हैं। यद्यपि तेजी से होते धर्मांतरण के कारण मूल खासी धर्म का निर्वाह करने वालो का प्रतिशत 13 मात्र ही रहा गया है पर सुखद बात यह है कि यह आज भी अपने नैतिक मूल्यों के साथ जीवित है। खासी समुदाय के पूर्वजों के

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अनुसार– आरम्भ में पृथ्वी पर कोई नहीं रहता था। ईश्वर, जो कि जगत का निर्माता है, उसने का रम्यौ (पृथ्वी) और उनके पति उ बासन को बनाया। वे दोनों बहुत सुख पूर्वक रहते थे। उनके सुखी जीवन में उन्हें अकेलापन अक्सर सताता था क्योंकि उनकी कोई संतान नहीं थी। समय बीतता जा रहा था। वे अपने अकेलेपन से ऊब गए। का रम्यौ दिन–रात सृष्टि के निर्माता ईश्वर से प्रार्थना करती कि उसे वारिस चाहिए, जो उसके वंश को आगे बढ़ा सके। का रम्यौ की सच्ची प्रार्थना ईश्वर ने स्वीकार कर ली और उन्हें पांच संतानें प्रदान किया। ये संतानें थीं– सूर्य, चाँद, पानी, हवा और आग। इनमें सूर्य पहली संतान तथा आग आखिरी संतान थी। आग, आखिरी संतान होने के कारण घर के सारे काम करने और देखभाल की जिम्मेदारी उस पर थी। पांच संतानों को पाकर का रम्यौ बहुत खुश थी। उसे अपने फलते–फूलते परिवार पर गर्व था। अब धरती पर सूरज, हवा और पानी था अतः वृक्ष उगे, सुन्दर–सुन्दर फूल खिले, भांति–भांति के फल लगे। सारी प्रकृति ही सुन्दर दिखाई देने लगी। का रम्यौ धरती पर कई मौसम और उनके विभिन्न रंगों को अदि को देखकर प्रफुल्लित थी। यह देखकर कुछ समय बाद का रम्यौ ने ईश्वर से विनती की कि वे दया करके किसी को भेजें, जो संसार पर शासन करे और उसे अनुशासित करे। ईश्वर को का रम्यौ की के अनुरोध में सच्चाई नजर आई और उसने वादा किया किया कि वह उसकी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे। खासी मतानुसार– उस समय स्वर्ग में सोलह परिवार ईश्वर के साथ सुख, शान्ति और भाईचारे के साथ रहते थे।

रम्यौ की इच्छापूर्ति के लिए स्वर्ग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। 'संसार पर शासन करने जिम्मेदारी किसे सौंपी जाए ?' इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि स्वर्ग में ईश्वर के साथ रहने सोलह परिवारों में से सात परिवार, जो 'की ह्यू ट्रेप हन्यू स्कुम या 'सात झोपड़ियाँ और सात घोंसले' कहलाते थे, वे धरती पर जाएँ और खेती करें और उसे आबाद करें। वे ईश्वर के आदेशानुसार धरती पर जाएँ और माँ की तरह की धरती के विकास और उन्नति के लिए कार्य करें। वे प्रशासनिक दृष्टि से हर चीज की देखभाल करें। इस प्रकार ईश्वर ने ह्यू ट्रेप हन्यू स्कुम और पृथ्वी को आशीर्वाद दिया। साथ ही यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि अगर लोग स्वाम सही रस्ते पर चलेंगे, सच्चाई

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

के रास्ते पर रहेंगे तो ईश्वर उनके साथ रहेंगे, उनके और स्वर्ग के बीच बिना किसी व्यवधान के आना–जाना होगा। वे एक पेड़ के द्वारा 'जिन्किंग क्स्येर' अर्थात् सोने की सीढ़ी जो 'उ सोपेथबेनेंग' चोटी पर स्थित है, उसके द्वारा स्वर्ग में आ–जा सकेंगे।

सात झोपड़ियाँ अपना वचन निभाते हुए सही तरीके से शांति और भाईचारे के साथ स्वर्ण युग में रहने लगी। उस समय स्वर्ग में निवास करने वाले नौ परिवारों और पृथ्वी के सात परिवारों के बीच सम्पर्क था और ईश्वर भी धरती पर अक्सर आते–जाते थे। वे उनसे मानव भाषा में बात करते थे। धीरे–धीरे कुछ समय बाद जीवन की हर दिन की व्यस्तता के कारण ये सात परिवार अपने दिए गए वचनों से दूर होते गए और उन पर कम ध्यान देने लगे। एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति ने इस स्थिति का लाभ उठाया क्योंकि उसे मानव के ऊपर ईश्वर और सच्चाई का राज करने अच्छा नहीं लगता था। अतः वह पृथ्वी और स्वर्ग से जोड़ने वाली सीढ़ी को काटने में सफल हो गया। परिणामस्वरूप धरती पर रहने वाले सात परिवार हमेशा के लिए बिछड़ गए। इस प्रकार ईश्वर के प्रभाव से हमेशा के लिए दूर हो गए। ईश्वर ने उनसे मानव–भाषा में कभी बात नहीं की। ईश्वर को अपनी रचना अर्थात् मनुष्यों पर बहुत दया आई। यद्यपि वह उनसे इंसानी भाषा में बात नहीं कर सकते थे, परन्तु वे उसे अपने संकेतों आदि द्वारा बात करते थे। वे सातों परिवार इस विषय में कुछ नहीं किया, केवल ईश्वर की आज्ञा का पालन करते रहे, वे बस टालमटोल करते रहे। कुछ समय बाद सोह्पेतबेनेन्ग (पर्वत की चोटी) से पांच किलोमीटर दूर डेंगेई पीक–चोटी पर एक पेड़ उग गया। वह पेड़ कुछ समय में तेजी से बढ़ गया। उसकी शाखाएँ चारो ओर फैल गईं और इसकी पत्तियों ने पूरी धरती को ढक लिया। ऐसा लगाने लगा कि दूसरी बनस्पतियाँ उसकी छाया में नहीं पनप सकेंगी। उस समय सारमो और सोराफिन नामक दो जिम्मेदार व्यक्ति डेंगेई चोटी की ढाल पर खेती कर रहे थे। उन्होंने इस घटना की जानकारी दरबार को देने का निश्चय किया, जिससे लोगों का भला हो। उनकी बात सुनकर दरबार ने निर्णय लिया कि पेड़ को तुरंत कटवा दिया जाए क्योंकि अगर देर हो जाएगी, तो उस पेड़ की जड़ें और भी मजबूत हो जाएँगी और उसकी शाखाएँ इतनी फैल जाएँगी कि काटना मुश्किल हो जायेगा। उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी और दराती धार की और पेड़ काटना शुरू किया। दिनभर

कठोर परिश्रम करने ने बावजूद वे उस पेड़ का छोटा हिस्सा ही काट पाए। यह देखकर दरबार ने यह निर्णय लिया कि हर परिवार से कम से कम एक आदमी आएँगे और पेड़ काटने में मदद करेंगे फिर अपने–अपने घर चले जाएँगे। दूसरे दिन हर घर से एक–एक व्यक्ति पेड़ काटने चल पड़ा। जब वे उस स्थान पर पहुँचे, तो आश्चर्यचकित हो गए क्योंकि उस पेड़ पर कटने के कोई निशान नहीं थे इसके बाद भी उन्होंने पूरे दिन काम किया परन्तु अगले दिन भी वैसा ही हुआ। वे परेशान और भयभीत हो गए।

जब वे आपस में बातचीत कर रहे थे कि दूसरे दिन क्या किया जाए, तो उस समय एक छोटा पक्षी 'रेन बर्ड' (चीतमपज) वहाँ आया। सबका उदास चेहरा देखकर उसने एक वृध्द व्यक्ति से उनकी उदासी का कारण पूछा। पूरी बात जानकर रेन बर्ड ने कहा– मैंने टाइगर से सुना है कि जब डेंगेई बड़ा हो जाएगा और इसकी शाखाएँ चारो ओर फैल जाएँगी, इसकी पत्तियाँ और मोटी हो जाएँगी, तब चारो ओर गहरा अँधेरा छा जाएगा। तब मैं चारो ओर घूम सकूँगा और इन्सानों को कह सकूँगा। अतः रात में टाइगर इस पेड़ पर पड़े कटने के निशान को चाट लेता है, जिससे यह पेड़ फिर से वैसा का वैसा हो जाता है। इसलिए तुम लोग कितनी भी कोशिश कर लो, इसे नहीं काट सकते। अगर तुम लोग मेरे ऊपर विश्वास करते हो, तो तुम लोग अपना काम करते रहो और घर जाने से पहले अपनी कुल्हाड़ी और दराती को कटे हुए भाग पर उल्टा करके रखना। उसकी धार सामने की ओर होनी चाहिए। जब टाइगर उसे चाटने की कोशिश करेगा, तो उसकी जीभ कट जाएगी और वह फिर से चाटने की कोशिश नहीं कर सकेगा। रेन बर्ड की सलाह से लोगों ने फिर से पेड़ काटना आरम्भ किया। उस रात हमेशा की तरह टाइगर आया और उसने कटे हुए निशान को चाटना आरम्भ किया, तो उसकी जीभ धारदार हथियार से कट गई और वह दर्द से चिल्लाता हुआ जंगल की ओर चला गया परन्तु उस समय से उसने मनुष्य से बदला लेने की प्रतिज्ञा की। इस घटना के बाद उसे जब भी मौका मिलता है, वह उस पर आक्रमण करता है।

लगातार कई दिनों तक पेड़ काटते और रात में धारदार हथियार को कटी हुई जगह पर रखते हुए उन्होंने पेड़ को पूरी तरह नीचा कर लिया। डेंगेई चोटी में क्रेटर की तरह एक गढ्ढा बना हुआ है। मिथक के अनुसार यह वही जगह है जहाँ पर पेड़ खड़ा था। इस प्रकार मनुष्य को

अपनी युक्ति से पेड़ को सफलतापूर्वक नीचे अपने ऊपर बहुत गर्व हुआ परन्तु यह काम बिना सृष्टिकर्ता के सम्भव नहीं हो सकता था। अतः उसने उनका आभार प्रकट करने के लिए पृथ्वी के सभी प्राणियों के लिए नृत्य का आयोजित किया। नृत्य से संबंधित मिथक इस प्रकार है–

एक समय की बात है कि कई वर्ष पहले सभी जानवर, पक्षी और जीवित प्राणी मनुष्यों की भाषा बोलते थे। उन्होंने उस समय तक इन्सानों की प्रभुता भी स्वीकार कर ली थी। उस समय मनुष्य ने सभी प्राणियों को सन्देश भेजा कि निर्धारित समय पर रंगभूमि में सभी का नृत्य होगा। निधारित समय पर सभी प्राणी रंगभूमि पहुँच गए। सभी ने नृत्य करना आरम्भ कर दिय। पूरे कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलने का भार सूरज पर था। उसे यह भी देखना था कि कहीं कोई गड़बड़ी न हो। अतः वह नृत्य में देर से पहुंचा। सूरज सभी प्राणियों के बीच में था। जब वह अपने भाई चाँद के साथ नृत्य कर रहा था, तो उस समय छछूंदर, उल्लू, मेढक, बन्दर और दूसरे प्राणी भाई –बहन के अनैतिक सम्बन्ध को लेकर दोषारोपण करने लगे। उनके ऐसे व्यहवार ने सूर्य को बहुत दुखी किया उसने अपने आपको बहुत अपमानित और हीन महसूस किया। उन प्राणियों की इतनी हिम्मत कैसे हुई कि जो सम्पूर्ण प्रकृति का केंद्र है और इस पृथ्वी पर सभी जीवित जीव–जंतुओं का संचालन करता है, उसके साथ ऐसा व्यवहार ? अतः वह गुस्से एवं शर्म से नृत्य को बीच में ही छोड़ कर चला गया और अपने आपको एक गुफा "का क्रेम लमेट क्रेम लतांग" में छिपा लिया। इसके बाद पूरी धरती पर अँधेरा छ गया। हर कोई डर गया। उन्हें धक्का–सा लगा। वे सोचने लगे कि अचानक यह क्या हुआ ? चारो ओर हलचल मच गई। लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय ? इसलिए मनुष्य ने चारो ओर सन्देश भेजा और सभा बुलाई। जिसमें सूर्य को वापस बुलाने के बारे में चर्चा हुई। सभा में मनुष्य ने पूछा– यहाँ कोई ऐसा है, जो खुद सूर्य को "का क्रेम लमेट क्रेम लतांग" से बाहर लेकर आएगा ? कोई सामने नहीं आया। पूरी सभा में शांति छा गई ।कुछ देर के बाद एक हाथी सामने आया और बोला– सभी लोग सुने, जैसा कि आप सभी जानते हैं कि मैं आकर में बहुत बड़ा हूँ और बलवान भी हूँ परन्तु "का क्रेम लमेट क्रेम लतांग" की ओर जाने से डरता हूँ क्योंकि मुझे डर है कि विशाल होने के कारण सागर और नदियाँ पार करते हुए डूब सकता हूँ। तेज ढलान में

चढ़ते समय गिर सकता हूँ और संकरे रास्ते में नहीं चल सकता। अतः मुझे डर है कि मैं बिना अपनी मंजिल प्राप्त किये और अपना काम पूरा किये ही मर जाऊँगा। जिस काम के लिए हम लोग कोशिश कर रहे हैं, वह पूरा नहीं हो पायेगा। यद्यपि मैं इस कार्य को पूरा करने की दृढ़ इच्छा रखता हूँ पर मैं नहीं कर पाऊँगा। इसलिए अगर कोई इस कार्य को पूरा कर सकता है, तो मैं वादा करता हूँ कि मैं मानव जाति की सेवा करूँगा और जीवन भर उनका भर ढोऊंगा। इसके बाद एक के बाद एक आए और हर एक ने कार्य पूरा करने में असमर्थता प्रकट की।

उसी समय धनेश (hornbill), जिसे अपनी शक्ति और सुन्दरता पर बहुत घमंड था, वह आगे आया। वह कार्य पूरा करने के लिए तैयार हो गया। उसने कहा– जो पक्षी आकाश में उड़ सकते हैं और जो प्राणी जमीन में रेंग सकते हैं, वे सुने कि मैं इस कार्य को पूरा करने स्वयं जाऊँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी बातों और सुन्दरता से प्रभावित होकर सूर्य जरूर वापिस आ जाएगी। अतः आपलोग चिंता न करें, मैं खुद ही इस समस्या समाधान कर लूँगा। यह सुनकर सभी बहुत खुश हुए क्योंकि आखिर में कोई तो ऐसा आगे आया, जो कार्य पूरा करने के लिए तैयार हो गया। सबलोग आशावान हो गए कि कुछ दिन बाद चाँद और सूरज फिर से अपनी जगह पर आ जाएँगे।

इस प्रकार धनेश अपनी यात्रा पर चला गया। वह सूरज के घर पहुँचा। उसने सूरज को वहाँ आने का कारण बताया। सूरज ने घर आये अतिथि का सम्मान किया और उसे घर में स्वादिष्ट खाना खिलाया। सूरज के अच्छे व्यहवार और दयालुता के कारण धनेश को गलतफहमी हो गई। उसने सोचा कि उसके सुन्दर रूप के कारण सूरज उसके प्रति आकर्षित हो गया है। उसने अपना प्रेम सूरज के सामने प्रकट किया। जब सूरज उसके मन की बात पता चली, तो हक्का–बक्का रह गया। उसे धक्का–सा लगा। उसे विश्वास नहीं हुआ कि जो इतना महत्वपूर्ण कार्य करने आया है, वह ऐसा कैसे कर सकता है ? उसे बहुत गुस्सा आया और उसने बैठने वाला एक पत्थर धनेश पर फेंका, जो उसकी पीठ पर चिपक गया। वह धनेश को शाप देते हुए बोला– तुम निर्ल्लज, घमण्डी, आडम्बरी जीव हो। तुम इस सीट को हमेशा ढोते रहोगे और तुम्हें हमेशा राज खाँसी सताएगी। आज से तुम अपना चेहरा दुबारा दिखाने की हिम्मत नहीं करोगे। शर्मसार

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

धनेश सूरज के निवास स्थान से वापिस आ गया। उसकी प्रतीक्षा में बैठे अन्य प्राणियों ने उसे खाँसते हुए सुना। जब वह वहाँ पहुँचा तो उन्होंने उसके उद्देश्य के बारे में पूछा। लाचर होकर धनेश को सूरज के घर घटी शर्मनाक घटना को सबके सामने बताना पड़ा। कहा जाता है कि उस समय से धनेश सूरज की ओर नहीं उड़ पाता।

यह सनुकर सभी लोग फिर दुखी हो गए। वे चिन्तित और भयभीत भी हो गए। तब मनुष्य ने पूछा कि और कोई ऐसा है, जो सूरज को वापिस लेन की कोशिश करेगा ? इस समय कोई सामने नहीं आया। काफी देर इन्तजार और थक कर मनुष्य ने पूछा– क्या कोई ऐसा भी है, जो इस सभा में उपस्थित नहीं है ? वहाँ उपस्थित प्राणियों की गिनती करने के बाद पता चला कि सभा में मुर्गा नहीं है। तब मनुष्य ने चील को मुर्गे को लेन भेजा, जिसे वे 'गंदे कपड़े पहनने वाला' (Malyngkhoit) कहकर पुकारते थे। कुछ देर बाद चील मुर्गे को लेकर सभा में आई। मुर्गे ने वहाँ उपस्थित लोगो से कहा– मैं सबको आदर सहित तथा जो बुजुर्ग हैं, उन्हें अति सम्मान के साथ कहता हूँ कि मैं यहाँ निमंत्रित किया गया हूँ इसलिए मैं यहाँ आया हूँ। मैं पहले यहाँ इसलिए नहीं आया क्योंकि मैं गरीब और बदसूरत हूँ। मुझे आप लोगो के सामने आने में शर्म आती है। मैं आपका आभारी हूँ कि आपने इस सभा में मुझे बुलाया।

मुर्गे से मनुष्य ने कहा– तुम्हें चील ने यहाँ लाने का उद्देश्य तो पूरी तरह से बताया होगा। सबकी सहमति से मैं इस काम को पूरा करने के लिए तुमसे अनुरोध करता हूँ। अगर तुम सहमत हो, तो तुम हमारे संदेशवाहक या दूत होगे। तुम सूरज के पास हमारा सन्देश ले कर जाओगे और हमारी ओर से क्षमा–याचना भी करोगे। तुम सूरज से कहना कि जो कुछ हुआ, उसमें मेरी गलती थी। मैं पूरी घटना के लिए खेद प्रकट करता हूँ। जो कुछ भी हुआ गलत हुआ। मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में ऐसा कभी नहीं होगा। कृपया उन्हें निवेदन करना कि मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें माफ कर दें और वापिस आ जाएँ। तुम्हें इस काम को पूरे दिल से करना होगा। इसके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है और सूरज तक पहुँचना जरूरी है। मैं तुम्हें इस कार्य को पूरा करने का अवसर दे रहा हूँ। हे मुर्गे! अगर तुम्हें मेरा प्रस्ताव स्वीकार है, तो तुम्हें एक पोशाक दी जाएगी, जो कि उच्च वर्ग के लोग

पहनते हैं। तुम्हें गहने भी दिए जाएँगे, जिससे तुम अपना श्रृंगार कर सकोगे। तुम्हें एक वस्त्र दिए जाएगा और गोलाकर पूँछ भी, इससे तुम्हारा पूरा व्यक्तित्व और भी निखर जाएगा। तुम्हें तकनीक और बांग देने की शक्ति दी जाएगी, जिससे तुम सुबह–शाम होने पर बांग दे सकोगे।

यह सुनकर मुर्गे ने कहा– मैं क्या कहूँ ? मैं सूरज से कैसे बात कर सकता हूँ ? मैं तो ठीक से बात भी नहीं कर सकता हूँ। मैं तो बहुत बद्सूरत हूँ। मैं यह सोच–सोचकर घबरा रहा हूँ कि सूर्य के साम्राज्य में मेरा कैसा आतिथ्य होगा। चाहे जो हो, मेरे अनुसार आप लोगो का सन्देश सूर्य तक पहुँचाना मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। अगर आप अनुमति दे, तो मैं इस कार्य को पूरा करने के लिए तैयार हूँ। मैं वहाँ पहुँचने की कोशिश करूँगा और आपका सन्देश सूरज को देकर उन्हें लाने की कोशिश करूँगा या सूर्य जो सन्देश देंगी उसे आप तक पहुँचाऊँगा।

मान्यता यह भी है कि हर जगह दुःख था और सब ईश्वर से माफी रहे थे। इस कारण ईश्वर को उन पर दया आ गई। उन्होंने सबको स्वर्ग की सभा में पेश होने का आदेश दिया। इधर मनुष्य के गलत कार्यों के कारण दूसरे प्राणी भी प्रभावित हो रहे थे। उस सभा में ईश्वर ने मनुष्य को एक तरफ और अन्य प्राणियों दूसरी तरफ खड़े होने आदेश दिया। दोनों स्वर्ग की सभा में ईश्वर के न्याय की प्रतीक्षा कर रहे थे। ईश्वर ने पूछा कि यहाँ उपस्थित सभी प्राणियों में ऐसा कौन है, जो इस विषय की जाँच करने का दायित्व स्वयं ही अपने ऊपर ले सके। सभी जानवरों ने पवित्र होने का दावा किया कार्य पूरा करने के लिए तैयार हो गए, परन्तु जब उनसे पूछा गया कि क्या वे अपने प्राण त्यागने के लिए तैयार हैं, क्योंकि इस कार्य के लिए उनको अपना पेट खोलना पड़ेगा, जिससे उनके दिल की जाँच की जा सके कि वे सचमुच पवित्र हैं। यह सुनकर सभी डर गए और उनमें बलिदान करने का साहस नहीं रहा।

जब कोई सामने नहीं आया, तो सभा में सवाल उठा कि क्या कोई ऐसा भी है, जो सभा में उपस्थित नहीं है। खोजने के बाद पता चला कि केवल वहाँ मुर्गा मौजूद नहीं है। क्योंकि वह अपनी गरीबी और बदसूरती के कारण शर्म से छिप कर रहता था। उसे बुलाया गया। वह स्वयं ही अपना बलिदान देने के लिए तैयार हो गया। उसका पेट खोल दिया गया और उसका दिल तथा आँतें सभा में बाहर निकाली गईं। उसमें कोई दोष

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नहीं था। उसने मानव जाति के लिए अपना बलिदान कर दिया। जब उसे बुलाया गया, तो जितने भी उड़ने या रेंगने या तैरने वाले प्राणी थे, उनके आगे खड़े होने का आदेश दिया गया। उसकी पवित्रता के गवाह सभी प्राणी थे। सभी सहमत हो गए कि मुर्गे को ही "राजदूत" होना चाहिए। वह पुनः इस संसार में नियम और रोशनी लायेगा, जिससे सभी प्राणी शांति और सुख से रह सकेंगे। पूरी सभा ने यह स्वीकार किया कि वह ईश्वर और मनुष्य के बीच सबसे उपयुक्त दूत है। इसके लिए उसे एक पूँछ और एक सुंदर कलगी दी गई।

मुर्गा जोखिम भरे सफर में चल पड़ा। जब वह सूरज के साम्राज्य में पहुँचा, तो सूर्य ने उससे पूछा कि वह इतनी दूर से उससे मिलने क्यों आया है ? मुर्गे ने अपने आने का कारण उसे बाते तथा मानव जाति का सन्देश उसे दिया। सूरज ने उसकी बात बड़े ध्यान से सुनी और उसका आदर–सत्कार किया। सूरज ने उसे अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया, जिसे मुर्गे ने बड़ी विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया और उनसे अनुरोध किया कि वे अपने आँगन में चावल के कुछ टूटे दाने दे दें। सूरज ने चावल दाने अपने आँगन में डाल दिया, जिसे उसने रेतीले फर्श से उठाकर आसानी से खा लिया। खाने के बाद मुर्गे ने आदर से कहा– माँ सूर्य! पूरी पृथ्वी पर अँधेरा छा गया है और सभी प्राणी भयभीत और चिंतित हैं। मनुष्य भी घबराया हुआ है। उसने अपनी भूल स्वीकार कर ली है। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया है, क्योंकि उसने बिना उच्च सत्ता से अनुमति लिए नृत्य का आयोजन के लिए स्वम् ही आज्ञा दिया, जो आपके अपमान का कारण बना। उसने सारी जम्मेदारी अपने ऊपर ली है और प्रतिज्ञा किया है कि ऐसी गलती भविष्य में कभी भी नहीं होगी। उसने आपसे क्षमा करने की प्रार्थना भी किया है। साथ ही निवेदन किया है कि आप दया करके लौट आएँ। अगर आप दिल से उसे माफ कर सकती हैं, तो मैं यह सन्देश लेकर वापस चला जाऊँगा। मैं वादा करता हूँ कि इस उत्सव में मैं अपने पंखों से तालियाँ बजाऊंगा और तीन बार बांग दूँगा। जिससे सबको आपके आने की सूचना मिल जाएगी। यह मेरी पवित्र प्रतिज्ञा है, जो मैं आपके सामने कर रहा हूँ।

मुर्गे की बिनम्रता से प्रभावित होकर सूर्य ने कहा– सम्मानीय अतिथि! मैं तुम्हारे व्यवहार की प्रशंसा करती हूँ और तुम्हारे नेक इरादे का

आदर करती हूँ। तुम्हारी प्रतिज्ञा का सम्मान करते हुए वापिस धरती की ओर जाऊँगी। मैं तुम्हारे सिग्नल "का क्रेम लमेट क्रेम लतांग" का इंतजार करुँगी। जैसे ही मैं इसे सुनूँगी, वैसे ही शीघ्र प्रकट हो जाऊँगी।

जब मनुष्य को यह सन्देश प्राप्त हुआ कि सूर्य वापिस आ रही है, तो इस शुभ समाचार से चारो ओर खुशी की लहर दौड़ गई। तुरन्त मुर्गे ने सूर्य का दिया हुआ सिग्नल (बांग) तीन बार दिया। यह सुनकर सूर्य एक बार पुनः वापिस आ गया और सारी धरती पर प्रकाश फैल गया।

मुर्गे ने सम्पूर्ण प्राणियों की रक्षा हेतु अपना बलिदान दे दिया तथा "सदा–जीवन उच्च विचार" की विचारधारा को सार्थक कर गया। उसके इस निःस्वार्थ त्याग के कारण वह पूरे मूल खासी समुदाय का प्रतीक चिन्ह यानि राजदूत बन गया। इस समुदाय के ध्वज, स्मारकों आदि में इसे उच्च स्थान प्राप्त है।

संदर्भ :

1. The philosophy and essence of Naim Khasiß by Mr- J- Kerrsing Tariang :2012:Re Khasi Enerprises] Shillong-
2. The Khasi Canvasß by J-N- Chowdhury: 1993
3. Golden vine of Ri Hynniewtrep The Khasi heritageß by Sumer Sing Sawian :2011: Vivekanand Kendra institute of culter
4. "खासी दर्शन, संस्कृति एवं मान्यताएँ", डॉ अनीता पंडा, 2019, यश प्रकाशन, दिल्ली
5. साक्षात्कार : श्रीमती सिल्बी पसाह, (खासी–पनार), राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान, मेघालय राज्य की प्रथम हिन्दी सेविका, प्रतिष्ठित पद सेंग खासी संस्था

ख़्वाहिशें

आईएसबीएन : 978-81-929060-4-1 संस्करण : 2015, मूल्य : 300/-

टिप्पणी

लैंगिक असमानता का बेनकाब चेहरा

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

सत्य प्रकाश सिंह
केसर विद्यापीठ इंटर कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
aloksingh591985@gmail.com

लैंगिक असमानता का दलदली विचार नारीवादी विचारकों के वैश्विक नीतियों के दिल में निहित है। निरभ्र स्नेह का ममतामई चादर ओढ़े नारीवाद के प्रति संवेदनशील मानव समुदाय लैंगिक असमानता के लंबे इतिहास को समाप्त करने की बात तो करता है परंतु लैंगिक असमानता को दूर करने का सार्थक प्रयास, महिला सशक्तिकरण के झूठे दावों की बात करना, नारीवाद के वैश्विक मानदंडों पर खरा नहीं उतरता है। अंतर्राष्ट्रीय नारीवाद पुरुष शक्तिपुंज के वास्तुकला का शोषण का अभेद्य किला बनकर रह गया है। नारीवादी पुरुष विद्वान तो अक्सर यह सवाल उठाते हैं ष्महिलाएं कहां हैष ? यदि इन्हीं पुरुष विद्वानों से पूछा जाए कि – महिला प्रतिनिधित्व का अनुपात प्रत्येक क्षेत्र में क्या है ? । तो इसका स्पष्ट एकमात्र उत्तर सिर्फ यही है 'शायद नारी होना ही सबसे बड़ी समस्या है।' अब नारियों को 5000 वर्षों के पितृसत्तात्मक आदेश को चुनौती देना चाहिए कि अब हम यहां हैं।

सार्वजनिक या व्यक्तिगत जगह पर प्रतिपल यौन हिंसा का शिकार होना अक्सर भेदभाव का यह प्रत्यक्ष प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ता है। स्त्रियों की पराधीनता, पराजयता के लिए पुरुषों का वर्चस्व ही जिम्मेदार है। नारीवादी संस्कृति लचीलेपन, अपने अनुकूलन स्वभाव के कारण, अपने को पारंपरिक भूमिकाओं में रहना, पुरुषों के आदर्श व मूल्यों को अंतर्मन में संजोए रखना, उनके तन के भूगोल के शोषण का प्रमुख कारण है। नारीवाद

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

की एक प्रमुख और समस्या पितृसत्तात्मक समाज के भीतर कुंठित वर्चस्व की विशिष्ट संस्कृति भी एक प्रमुख कारण रही है। शादी के बाद ससुराल में महिलाओं के साथ निष्पक्ष व्यवहार पर हमें ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लिंग चयनात्मक गर्भपात की प्रवृत्ति के खिलाफ एक स्वर में हमें संघर्ष करना चाहिए। नारीवाद की समस्या पर कोई बहस करना बेशर्मी की बेईमानी है। नारी समस्याओं पर मुंह मोड़ना उनका झूठा महिमामंडन करने से नारी उत्थान नहीं होगा। रोजमर्रा के जीवन में पितृसत्तात्मक ढांचा ही महिला गुलामी की प्रमुख जड़ है। विश्व में अश्वेत स्त्रियों यथास्थिति ज्यादा जटिल है। पूरे विश्व व्यवस्था में नारियों की बेहतर दुनिया बनाने के लिए जेंडर पर तटस्थ नहीं होना चाहिए हमें उनके उत्थान के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। 'वी द पीपुल' को छोड़कर हमें 'शी द पीपुल' में विश्वास करना चाहिए।

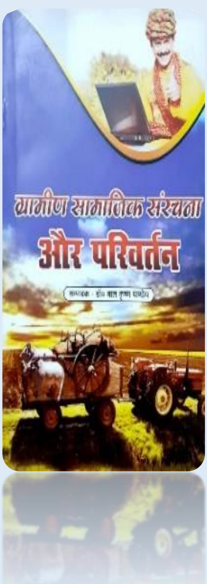

ग्रामीण सामाजिक संरचना
और
परिवर्तन

डॉ. बालकृष्ण पाण्डेय (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-6-5

संस्करण : 2015, मूल्य : 200/-

टिप्पणी

बुजुर्गों की अक्षमता

सलिल सरोज
salilmumtaz@gmail.com

महामारी के मीडिया कवरेज ने बड़े वयस्कों पर कोविड–19 के दुखद प्रभावों को रेखांकित किया है। भीड़भाड़ वाले अस्पताल हॉलवे में व्हीलचेयर में फंसी हुई ऑक्टोजेरियन लोगों की टेलीविजन छवियां, उनकी पीड़ा की गहराई से अवगत कराते हैं। महामारी का प्रभाव अमिट और निर्विवाद रहा है, फिर भी इसने महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है जो कि ष्कोरोनावायरसष शब्द हमारी सामूहिक शब्दावली में प्रवेश करने से बहुत पहले मौजूद थे। महामारी द्वारा तीन लगातार चुनौतियों को उजागर किया गया है और तीव्र किया गया हैरू मृत्यु दर में सामाजिक आर्थिक और नस्लीय असमानताय दीर्घकालिक देखभाल श्रमिकों की सख्त कमी, और जीवन के निर्णय लेने के लिए तैयारी की कमी।

यह सच है कि पुराने वयस्कों में प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है, जो उन्हें वायरस के प्रति संवेदनशील बनाती है। कमजोर वृद्ध लोग भी नर्सिंग होम या सहायक रहने की तरह समूह की सेटिंग में रहते हैं, जिसमें बीमारी आसानी से फैल सकती है। लेकिन वृद्धावस्था अकेले किसी को जोखिम में नहीं डालती हैय लाखों स्वस्थ पुराने वयस्कों को वायरस द्वारा पूरी तरह से बख्श दिया गया है। कोविड–19 के संकुचन और मरने का जोखिम अन्य हास्य स्थितियों वाले लोगों के लिए अधिक है, जैसे हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, टाइप –2 मधुमेह, और क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिसऑर्डर, ऐसी स्थितियां जो बड़े वयस्कों में अधिक आम हैं। इन और

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अन्य प्रमुख स्वास्थ्य स्थितियों का जोखिम भी नस्ल और सामाजिक वर्ग के आधार पर स्तरीकृत है। कम सामाजिक आर्थिक संसाधनों वाले सभी आयु वर्ग के वयस्क विशेष रूप से कमजोर होते हैं। पुरानी बीमारी उच्च दर पर और कम उम्र में ऐसे लोगों पर हमला करती है, जिनके पास स्वास्थ्य बीमा की कमी है और स्वास्थ्य देखभाल का एक नियमित स्रोत है, जो शारीरिक रूप से खतरनाक नौकरियों में काम करते हैं, और जो स्वस्थ खाद्य पदार्थों, पार्कों, सुरक्षित आवास और साफ–सुथरी पहुंच तक सीमित रहते हैं। आर्थिक अनिश्चितता और प्रणालीगत नस्लवाद से संबंधित दैनिक और लगातार तनाव को पुरानी सूजन और संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के साथ जोड़ा गया है।

जब स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं और प्रियजनों के साथ बातचीत के साथ अग्रिम देखभाल की योजना सबसे प्रभावी होती है, ताकि मरीज इस बारे में सूचित विकल्प बना सकें कि क्या वे संभावित रूप से जीवन–विस्तार वाले हस्तक्षेप जैसे कि फीडिंग ट्यूब और मैकेनिकल वेंटिलेशन की इच्छा रखते हैं या आराम देखभाल और पैलियेशन पसंद करते हैं। व्यायाम करने की क्षमता यकीनन कोविड–19 युग में कम कर दी गई है, क्योंकि वेंटिलेटर और अस्पताल के बेड की स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की कमी है, और नैतिकतावादी उम्र और पहले से उत्पन्न शर्तों के आधार पर राशन की बहस करते हैं। फिर भी ये चुनौतियाँ अग्रिम देखभाल योजना की आवश्यकता को और अधिक आवश्यक बनाती हैं।

चुनौती को तेज करते हुए, कोविड–19 एक उभरती हुई बीमारी हैरू स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के पास अभी तक लक्षणों की प्रगति पर निश्चित डेटा नहीं है, जिससे अग्रिम निर्णय मुश्किल हो जाते हैं। इसके अलावा, एक सार्थक एंडलाइफ वार्तालाप का अवसर अलगाव में मरने वाले रोगियों के बीच सीमित है। प्रियजनों के साथ उनका संवाद नर्स के स्मार्टफोन पर वीडियो कॉल के माध्यम से हो सकता है। महामारी सभी उम्र के सभी बुजुर्ग लोगों के लिए एक अजीबोगरीब आह्वान कर रही है, लेकिन विशेष रूप से जिनकी कोमोरिड स्थिति है, वे अग्रिम देखभाल योजना बनाने के लिए जल्दी और अक्सर – और इस बारे में सोचने के लिए कि उनकी प्रारंभिक प्राथमिकताएं उनके स्वास्थ्य परिवर्तनों के रूप में कैसे बदल सकती हैं, और कोविड–19 संक्रमण के रूप में मोम और वेन दर।

कोविड–19 के लिए एक प्रभावी और सस्ती वैक्सीन विकसित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयास चल रहे हैं, जबकि स्कूलों से लेकर सरकारों तक की संस्थाएँ वायरस के खतरे को कम करने के लिए बुनियादी ढाँचों को अपना रही हैं। कोविड–19 के दूरगामी परिणामों को कम करने के लिए व्यापक सामाजिक कार्यक्रमों की आवश्यकता है। महामारी ने प्रकाश डाला है और स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का सामना करने वाली कुछ सबसे लगातार चुनौतियों को बढ़ाया है। मेडिकेड प्रतिपूर्ति के बढ़ते स्तर से अंततः कमजोर वृद्ध वयस्कों की देखभाल करने वाले नर्सिंग होम में देखभाल और स्टाफ की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। पर्याप्त देखभाल और करियर उन्नति के अवसरों के साथ व्यक्तिगत देखभाल श्रमिकों को प्रदान करने के लिए अधिक अभिनव रणनीतियाँ कर्मचारियों को आकर्षित करेंगी और उन्हें उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए उचित रूप से पुरस्कृत करेंगी। किसी भी कारण से मौत– कोविड–19 से कैंसर तक – निश्चित रूप से, अपरिहार्य है। फिर भी महामारी ने एक ऐसा संदर्भ बनाया है जिसमें मृत्यु पूर्व वृद्ध वयस्कों, विशेष रूप से नस्लीय अल्पसंख्यकों, कम आर्थिक संसाधनों वाले लोगों और अल्पपोषित सुविधाओं की देखभाल करने वालों के लिए आ सकती है। यह सोच–समझकर तैयार की गई नीतियों के लिए समय है, जो कब, कैसे और किस स्तर की गरिमा के साथ निरंतर असमानता को कम कर सकती हैं।

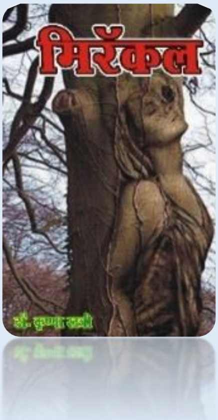

मिरॅकल

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-2-7

संस्करण : 2014, मूल्य : 180/-

शेखर शिखर

✍ चंद्रशेखर शुक्ल

आईएसबीएन : 978-81-929060-9-6
संस्करण : 2019, मूल्य : 251/-

कदम रखना मगर हौले से

✍ डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-5-4
संस्करण : 2020, मूल्य : 155/-

कोखजली

✍ डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-3-0
संस्करण : 2020, मूल्य : 150/-

जिनावर का जिन्न

डॉ. सम्राट् सुधा
रुड़की, उत्तराखंड
samratsudha66@gmail.com

जिनावर, यह शब्द मैंने लगभग बारह–तेरह वर्ष की आयु में सुना था और इसका अर्थ जानवर या पशु से लगाया था। ज्यों–ज्यों मेरी उम्र बढ़ी, त्यों–त्यों समझ आते–आते मुझे यह निश्चित हो गया कि 'जिनावर' का अभिप्राय 'जानवर' से नहीं है, ना आदमी से ही, ना यह शब्द जानवर या आदमी के बीच के किसी जन्तु का बोध कराता है। जब मैं स्नातक का विद्यार्थी था तो कवि–सम्मेलनों में काव्य–पाठ के लिए भी जाने लगा था। एक कवि–सम्मेलन में उर्दू के एक शायर जाने किस बात पर एक हिन्दी–कवि पर चीखे– 'जिनावर कहीं का!' बस उस घटना से मेरे हृदय में 'जिनावर' के प्रति 'शोध' का बीज पड़ गया।

शोधाध्ययन में उर्दू के सारे लुगत (शब्दकोश) छान मारे, किसी में 'जिनावर' शब्द ना मिला। हाँ, जानवर शब्द सभी में था, जिसके अर्थ उनमें यूँ मिले– प्राणी, पशु, जन्तु, हैवान व पशुओं जैसा आचरण करने वाला। इनमें शेष अर्थ तो सामान्य लगे, परन्तु 'हैवान' पर मेरी दृष्टि टिक गयी। क्या जानवर का अर्थ हैवान होना ठीक है!

अब शोध नियमों के अनुसार मुझे हैवान के अर्थ देखने पड़े, जो उसी शब्दकोश में यूँ मिले– प्राणी, जीव, पशु और मूर्ख व्यक्ति। इसमें विशिष्ट अर्थ– 'मूर्ख व्यक्ति' लगा, परन्तु साथ ही मस्तिष्क में यह भी कौंधा कि जानवर न तो हैवान ही है, न मूर्ख व्यक्ति ही, तो क्या इन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति को जानवर कहना उचित है। बात तो 'जिनावर' की थी।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

अब हिंदी –शब्दकोश खंगाले, तो वहाँ भी 'जिनावर' शब्द ढूंढे ना मिला। सोचा– 'हैवान' के सहारे शायद कुछ हाथ लगे, तो हिंदी– शब्दकोश ने निराश न किया, उसमें हैवान के कुछ लाक्षणिक अर्थ मिले– मूर्ख, उजड्ड और जंगली। बात बस इतनी साफ हुई कि इन लाक्षणिक अर्थों के अर्थ में कोई हैवान है, परन्तु मूलतः हैवान क्या है, यह यहाँ भी अनुत्तरित रहा और जिनावर तो गोल ही!

शोध–मीमांसा अब जानवर तथा हैवान से पूर्णतः हटकर विशुद्ध 'जिनावर' पर टिक गयी। यह स्पष्ट हो चुका था कि जिनावर न तो जानवर ही है और न हैवान ही, इस बिंदू पर आकर बहुत माथापच्ची की, कुछ निष्कर्ष ना निकला, तो शोध वहीं छोड़ दिया।

प्रोफेसर बना, तो स्नातकोत्तर में भाषाविज्ञान पढ़ाते हुए स्वयं भी शब्द–निर्माण की प्रक्रिया को और गहनता से पढ़ने का सौभाग्य मिला। शब्द का अर्थ, विशुद्ध अर्थ नहीं होता, उसमें लाक्षणिकता भी एकांगी कहाँ होती है, यह भी बोध होने लगा। जिनावर को विवेचन की 'टैस्ट ट्यूब' में डाला, तो जिनावर के तत्व यूँ टूटे– जिना (जिन्न का स्वर), जो लोग अरबी के 'जिनां' से परिचित हों, वे वहाँ भी दृष्टि रखें, यहाँ लिखना शोभनीय नहीं। जिनावर, जिस में 'जि' के ह्रस्व स्वर के बाद 'आ' का दीर्घ उच्चारण आदमी का बोध कराता और 'जि' का परित्याग कर यदि मिश्रित शब्द के रूप में विचारें तो 'नावर', अर्थात् जो चयन नहीं हो।

अब, बोध हुआ कि जिनावर किसी भी अर्थ में जानवर नहीं है, और जानवर किसी भी अर्थ में जिनावर। जिनावर जिन्न और आदमी के सम्मिश्रण से युक्त एक ऐसा पृथक जीव है, जो किसी भी दृष्टि से चयन के योग्य नहीं है और न चाहते हुए भी यह लिखना पड़ रहा है कि उसमें 'जिनां' की विशेषता तो अपरिहार्य रूप से है ही। ध्यान देने की बात यह है कि जिनां भी न तो जिनावर ही है और न ही जिनावर भी पूरी तरह जिनां ही! सो अब जब भी किसी को जिनावर कहने का मन हो तो तौल अवश्य लें, कहीं यूँ ना हो कि जानवर और हैवान, बेचारे बेवजह बदनाम हों जाएं और 'जिनावर' यह सोचकर इतराये कि लो, मैं पकड़ा तो गया ही नहीं!!

समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श

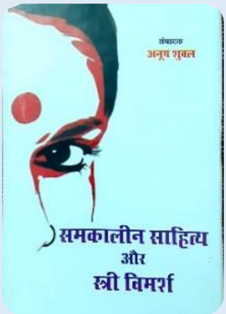

अनूप शुक्ल (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-5-8
संस्करण : 2015, मूल्य : 400/-

प्रयाग की साहित्यिक पत्रकारिता

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-87831-60-1
संस्करण : 2018, मूल्य : 250/-

पाठालोचन

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-929060-7-2
संस्करण : 2019, मूल्य : 1100/-

नमन–स्मरण

जीवन के महत्त्वपूर्ण अध्याय का पटाक्षेप

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

एक जनवरी 2021 को जब संपूर्ण संसार नए वर्ष के उल्लास में गोते लगा रहा था, तो 2021 के पहले प्रभात में हम दोनों भाई नौका पर अपने पिता जी की अस्थियाँ लिए भिठौरा स्थित गंगा की उत्तरवाहिनी धारा के बीच की ओर अग्रसर थे। उस समय वह लघु तरणि पिता जी के लिए तारनहार बनी हुई नाविक के संकेतों पर मंथर गति से जाह्नवी के स्थिर प्रवाह को चीरती हुई चल रही थी। भिठौरा फतेहपुर जनपद मुख्यालय से मात्र 12 किमी. दूर एक रमणीक स्थल है, जिसका पौराणिक नाम 'भृगुठौरा' है। कहा जाता है कि यह स्थान भृगु ऋषि की तपस्थली रहा है। विक्रमी संवत्सर 2077 की (वैदिक ऋतु हेमंत और) दृक ऋतु शिशिर, पौष मास के कृष्णपक्ष की द्वितीया तिथि और पुष्य नक्षत्र में दोपहर में 11:10 पर आरंभ होने वाले राहुकाल से पूर्व ही अस्थि–विसर्जन की क्रिया पूरी कर लेनी थी। पौष मास के कृष्णपक्ष की प्रथमा तिथि (तद्नुसार 31 दिसंबर 2020) के सूर्योदय से पहले पुनर्वसु नक्षत्र में पिता जी की सांसारिक लीला पूर्ण हो गई थी और दोपहर बाद 01:49 पर आरंभ हुए राहुकाल से पूर्व ही उनका प्राणहीन शरीर अग्नि के सुपुर्द किया जा चुका था।

2020 के दिनांक 23 दिसंबर को प्रातः स्नान करने से पहले स्नानागार में पिता जी को ब्रेन हैमरेज हुआ था। उस समय मैं उनसे अस्सी किमी. के फासले पर था। दोपहर साढ़े ग्यारह बजे जब मैं उनके पास पहुँचा, तब तक उनकी वाणी अवरुद्ध हो चुकी थी, किंतु वे पहचान रहे थे। उनका दाहिना हाथ और दाहिना पैर लकवाग्रस्त हो चुका था तथा चेहरे का दाहिना हिस्सा भी कुछ विकृत हो गया था। सीटी स्कैन से ज्ञात हुआ था कि उनके मस्तिष्क का बायाँ हिस्सा नसें फटने से क्षतिग्रस्त हो चुका था और लगभग चौरासी वर्ष की अवस्था सहित अन्य शारीरिक कमियों के

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

चलते उनका ऑपरेशन संभव नहीं था। उनकी देखभाल चार डॉक्टर कर रहे थे। कुछ अन्य डॉक्टरों की सलाह भी ली गई थी। 26 दिसंबर 2020 को हुए दूसरे सीटी स्कैन के बाद डॉक्टरों ने हाथ खड़े करते हुए कह दिया था कि अब उन्हें घर ले जाकर उनकी सेवा करें, फलस्वरूप 29 को अनिवार्य दवाओं की खुराक पूरी होने पर घर ले आए थे और आईसीयू में तब्दील कर दिए गए उनके कमरे में ही उन्हें व्यवस्थित करके हम लोग दिन–रात निगरानी रख रहे थे, किंतु कोई सुधार नहीं हो रहा था। अंततः 2020 के अंतिम दिन (31 दिसंबर) की सुबह के लगभग छह बजे उन्होंने अंतिम साँस ली थी। माता जी के आँचल की छाया 23 मार्च 2011 को ही उठ चुकी थी, अब पिता जी का साया उठ गया। माता–पिता के पालन–पोषण और आशीर्वाद से ही हम लोग फूले–फले हैं। उन्होंने हम चारों भाई–बहनों को नेकनीयत और सच्चरित्र बनाया एवं दुनिया की कुदृष्टि से बचाते हुए फौलादी व्यक्तित्व वाला बनाया। जब भी जीवन में झंझावात आए, तो दीवार बनकर हमारी रक्षा की। उन्हें हमारा कोटिशः प्रणाम!

विपदा के क्षण सहयोग और एकता को प्रमाणित करने वाले होते हैं। जितने दिन अस्पताल में रहे, सुबह से शाम तक मिलने–जुलने वालों का ताँता लगा रहता था। उनमें घर के अड़ोसी–पड़ोसी, नाते–रिश्तेदार और परिचित लोग शामिल थे। घर वापसी पर सभी पड़ोसियों ने हर प्रकार की आवश्यक सहायता की। निधन की सूचना प्रसारित होने के कुछ समय बाद लोग उपस्थित होने लगे थे और हमारा पूरा खानदान एकत्र होकर पिता जी की अंतिम यात्रा की तैयारियों में जुट गया था। माता–पिता रूपी वटवृक्ष की छाया से हम चारों भाई–बहन वंचित हो गए। हमारे जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण अध्यायों में से एक का पटाक्षेप हो गया।

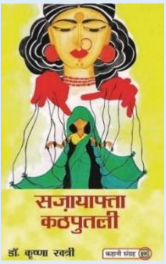

सज़ायाफ़्ता कठपुतली

✍ डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-946859-0-6

संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

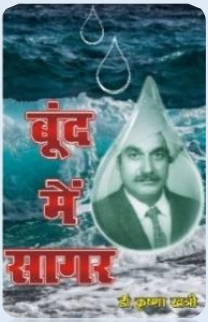

बूंद में सागर

✍डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-929060-8-9
संस्करण : 2019, मूल्य : 200/-

गले पड़ी गंगा

✍डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-7-8
संस्करण : 2020, मूल्य : 200/-

कृष्णा की कलम से...

✍डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-4-7
संस्करण : 2020, मूल्य : 150/-

कल शिवरात्रि थी...

राज महाजन
raj@binacatunes.com

कल शिवरात्रि थी
मैं भक्त था, तुम भगवान थे।
मंदिर का बाहर मैं खड़ा,
तुम अंदर विराजमान थे।
गजब की भीड़ थी कल जोश में उन्माद में,
गूंज रहा था सकल मंदिर "जय भोले' के नाद में।
मैं देख रहा था आपके भक्तों को जो आपकी तरफ जा रहे थे,
एक हाथ में लोटे में दूध और दूजे में थाली लिए आपका नाम गा रहे थे।
बेर, फल, फूल, दूध आदि से तुम्हारा भोग लग रहा था,
उल्लास और भक्ति का अतुलनीय योग लग रहा था।

हाथ जोड़ मंदिर से मैं ज्यों ही आगे बढ़ा,
मेरी ओर एक छोटा मैला–कुचेला अनायास किसी का हाथ बढ़ा।
कह रहा था मुझे थोड़ा सा खाना खिला दो,
अगर हो सके तो मेरी तीन साल की छोटी बहन को भी दूध पिला दो।
देखो बाबूजी ! वो सामने रोड के उस पार मेरी छोटी बहन बैठी हुई है,
भूख से बाबूजी उसकी उसकी आँतें ऐंठी हुई हैं।
दर्द है उसके पेट में बाबूजी भूख के मारे,
मेरे दिल में उतर गए वो भाई–बहन बेचारे।
कुछ कर मैं दुकान से दूध और कुछ फल लाया,
आपकी पूजा मानकर मैंने उन बच्चों को खिलाया–पिलाया।

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

उन बच्चों के चेहरे पर अब सुकून था, आराम था।
और थकी हुई उन आँखों की बेचौनी पर अब थोड़ा विराम था।
मैं उल्लसित था, जब वो बच्चे मुस्कुरा रहे थे,
मेरे प्रभु
मुझे तो उन बच्चों के होंठों पर
तुम मुस्कुराते हुए नजर आ रहे थे।

मंदिर के अंदर दूध लबालब चढ़ रहा था,
भक्तों के सैलाब बढ़ रहा था।
फल और फूल भी अपार चढ़ रहे थे,
पुजारियों की जेबों के वजन भी बढ़ रहे थे।
भगवान दूध पी रहे हैं, ऐसा कोई भक्त कह रहा था,
विस्मित तो मैं तब हुआ जब मंदिर के पीछे मैंने देखा,
नाली में वो सारा दूध बह रहा था।
आज सुबह,
वही मंदिर लग रहा है कुछ अकेला,
कल जहां लगा हुआ था तुम्हारे भक्तों का मेला।
लबालब कूड़ा कूड़ेदान में भरा हुआ था,
कुछ तो कूड़ेदान में, तो कुछ कूड़ेदान के बाहर फैला हुआ था।
उस कूड़े में दिखे वो ताजे फल, तो तुम पर अर्पित हो रहे थे,
मैं तो प्रभु चरणों में हूँ, ऐसा सोच कर वो गर्वित हो रहे थे।
अब तो फल, फूल और कूड़ा सब एक समान नजर या रहा था,
जो मिटा सकते थे भूख किसी की,
वो 'कूड़ा' अब तो कोई भी नहीं खा रहा था।

कल शिवरात्रि थी,
मैं भक्त था तुम भगवान थे।
लेकिन प्रभु ऐसी हो महाशिवरात्रि
ऐसे नहीं मेरे अरमान थे।

❖

ग़ज़ल

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022
gsvaish51@gmail.com

पुस्तकें

पुस्तकें
होती हैं अमर
इसमें सजे होते हैं
मोती जैसे अक्षर।

पुस्तकें
कभी नष्ट नहीं होतीं
कभी आकर्षण नहीं खोतीं
एक दीवाल से
दूसरी दीवाल तक
ठुँसी हुई, जमी हुई
गलियारे में. रसोई में
दरवाजे–खिड़कियों में
आलमारी में
घर के हर कोने में
भरी पड़ी हैं
सैकड़ों, हजारों पुस्तकें
जैसे अंतरिक्ष में एक–एक नक्षत्र
व्यवस्थित हों।

पुस्तकें देती हैं संस्कार
सिखाती हैं शिष्टाचार
लोग मरते हैं
जन्म लेते हैं
आते हैं, जाते हैं
परन्तु पुस्तकें
जन्म लेने के बाद
कभी नहीं मरतीं
वे काल से नहीं डरतीं!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

नफे सिंह योगी
महेंद्रगढ़ हरियाणा
nafesinghyog@gmail.com

फौजी ऐसे ही होते हैं

चाँद देखकर चलते रहते, दीपक की ज्यों जलते रहते
नींद उदासी पास न आए, हाथ से आँखें मलते रहते
नीर देख कर पी लेते हैं, देख कर फोटो जी लेते हैं
काँटो में पोशाक फटी को, अपने हाथों सी लेते हैं।

आसमान के नीचे सोते, रोज पसीने से मुँह धोते
गहना है हथियार हाथ का, पीठ गोला बारूद ढोते
हिम पर्वत पर घर होता है, नहीं किसी का डर होता
मंजिल मन की चाहत होती,क्षितिज पार सफर होता है।

भूखे–प्यासे चल लेते हैं, हर मौसम में ढल लेते हैं
कटे तने के पेड़ देखकर ,उनसे ही सम्बल लेते हैं
याद गाँव की आती सरहद, ताल किनारे पीपल बरगद
जोश रगों में दौड़े ऐसे, पार सभी कर जाता वो हद।

पत्थर ऊपर नाम लिखाते, सरहद रिश्ता गाँव दिखाते
बहत्तर घण्टों बाद खोलकर, छालों वाले पाँव दिखाते
दृढ़ संकल्पी रखे इरादा, कभी नहीं थकता है ज्यादा
खेल जान पर पूरा करता, बाधा तोड़ सके ना वादा।

फौजी ऐसे ही होते हैं, जगते ज्यादा, कम सोते हैं
जिम्मेदारी घर, सीमा की, कंधों ऊपर वो ढोते हैं
मुख पे हँसी सजाकर रखते, तन से हार भगाके रखते
सुला देश को नींद चौन की, खुद को खूब जगाके रखते।

दुख–दर्दों को खुश हो पीते, अपने सपनों खातिर जीते
जान हथेली पर रख चलते, हिमपर्वत हिंदुस्ताँ चीते
याद सभी करते महफिल में, रहते हिंदुस्तां के दिल में
हिम्मत बाधाओं में भी ना, आ जाए जो पथ मंजिल में।

ग़ज़ल

दर्द में याद यूँ आपकी आ गई
अब्र से ज्यों छिटक चाँदनी आ गई

खैर हो राजे उल्फत की यारब मेरे
हाथ उनके मेरी डायरी आ गई

मैं जिधर भी चला, जिस डगर पर चला
पीछे – पीछे मेरी बेबसी आ गई

वो जो गुजरे तो गलियाँ भी रोशन हुई
मेरे घर में भी कुछ रोशनी आ गई

उसके चेहरे की पाकीजगी देखकर
आशिकी की जगह बन्दगी आ गई

जब से आये हैं वो जिन्दगी में मेरी
जिन्दगी में मेरी जिन्दगी आ गई

जख़्म मुझको लगे, दर्द मुझको हुआ
आपकी आँख में क्यों नमी आ गई

उनकी यादों की खुशबू, कुछ ऐसे उड़ी
शायरी में मेरी ताजगी आ गई।

धर्मेन्द्र गुप्त
संपादक : समकालीन स्पंदन
के 3/10 गायघाट, वाराणसी 221 001
dharmendraguptsahil@gmail.com

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

ग़ज़ल

डॉ. शैलेश शुक्ला
दोणिमलै टाउनशिप, बेल्लारी, कर्नाटक
poetshailesh@gmail.com

है हर ओर भ्रष्टाचार, भला क्या कर लोगे
तुम कुछ ईमानदार, भला क्या कर लोगे ?

दूध में मिला है पानी या पानी में मिला दूध
करके खूब सोच–विचार, भला क्या कर लोगे ?

ईमान की बात करना नासमझी मानते लोग
सब बन बैठे समझदार, भला क्या कर लोगे ?

विकास की नैया फंसी पड़ी स्वार्थ के भंवर में
नामुमकिन है बेड़ा पार, भला क्या कर लोगे ?

इंसाफ के नाम पर बस तारीख पर तारीख
है लंबा बहुत इंतजार, भला क्या कर लोगे ?

फोड़ लोगे सर अपना मार–मार कर दीवारों पर
चलो, छोड़ो, बैठो यार, भला क्या कर लोगे ?

❖

कविता

खोया खोया-सा रहता हूँ

अंकुर सिंह
चंदवक, जौनपुर, उत्तर प्रदेश 222 129
ankur3ab@gmail.com

आजकल जीवन बड़ा मुझको,
अकेला अकेला सा लगता है।
तुम्हारे साथ ना होने से,
जीवन खाली खाली सा लगता है।।

जब जब तन्हा होता हूँ मैं,
तुझ बिन बैचौन सा रोता हूँ मैं।
बन्द आँखों से देख तुम्हे मैं,
तुममें खोया सा रहता हूँ मैं।।

बिन तुम इस जीवन में,
अकेला अकेला सा रहता हूँ।
किसे बताऊँ मन की व्यथा,
खुद में खोया खोया सा रहता हूँ।।

कमी खलती है मुझको भी तेरी
दूर रहकर उर में बसती तू मेरी।
कैसे करू तुम बिन मैं कल्पना,
मैं पतंग और तुम हो डोरी मेरी।।

भले दूर हो तुम आज मुझसे,
देखता मैं तुम्हे बन्द चक्षु से।
रहती तुम आज बड़े महलों में,
हर पल पाता तुझको मैं दिल से।।

पपीहा तड़पे स्वाति नक्षत्र को,
मैं भटकूँ तुमसे मिलन को।
आजकल खोया खोया सा रहता हूँ,
जन जन में निहारू मैं तुझको।।

एक बार तू जरा लौट के आ,
मुझको नींद की थपकी दे जा।
इस भोले भाले मेरे दिल को,
अपने घर का पता बता जा।।

तुम बिन खाली खाली सा लगता हूँ,
तुम बिन तड़प तड़प कर जीता हूँ।
प्रेम मिलन के बगिया में आ जा प्रिया,
तुम बिन खोया खोया सा रहता हूँ।।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

विरक्ति

शैलेन्द्र चौहान
34/242, सेक्टर–3, प्रतापनगर, जयपुर 302 033
shailendrachauhan@hotmail.com

कदापि उचित नहीं
दिगंत के उच्छिष्ट पर
फैलाना पर

शमन कर भावनाओं का
मनुष्य मन पर
प्राप्त कर विजय
उड़ भी तो नहीं सकते
अबाबीलों के झुंड में

ठहरी हुई हवा
बेपनाह ताप
बहुत सुंदर हैं
नीम की हरी–हरी
पत्तों भरी ये टहनियाँ

अर्थ क्या है
पत्तों वाली टहनियों का
न हिलें यदि
उमस भरी शाम

विरक्त मन,
फैल गई है विरक्ति
बोगनवेलिया के गुलाबी फूल
करते नहीं आनंदित
यद्यपि खूबसूरत हैं वे!

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

कविता

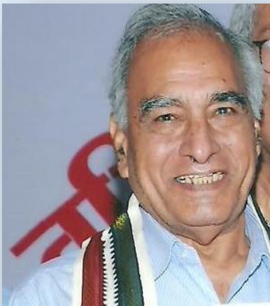

डा. केवलकृष्ण पाठक
संपादक : रवींद्र ज्योति मासिक
343/19, आनंद निवास,गीता कालोनी, जींद 126 102
ravinderjyotijind@gmail.com

लक्ष्य जीवन का स्वयं को जानना

आत्मा परमातना का अंश है
जीव के कण–कण में ही वह व्याप्त है
शुद्ध है, निर्मल है और निर्लिप्त है
देखने को वह कभी दिखती नहीं
ढूंढ़ते रहते ऋषिगण–बुद्धजन
पर ना देखा है किसीने आज तक
होता है आभास बस उस प्राणी में
जिस ने खोजा और पाया स्वयं में
आत्मा मरती नहीं जलती नहीं
ना ही पानी उस को गीला कर सके
प्राण ही इस जीव का आधार है
प्राण बिन निर्जीव हो जाता है वह
मृत्यु ही निष्प्राण का आधार है
मर के जीवन पाती है फिर आत्मा
अथवा फिर परमात्मा में लीन हो
लक्ष्य अपना पूरा कर जाती है वह

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

भोग कर संसार में कर्मों का फल
जीव लेता रहता है फिर फिर जन्म
आत्मा तो सारथी है जीव की
जीव जब पहचानता है आत्मा
फिर कभी दुष्कर्म होता ही नहीं
मस्त हो कर भोगता ऐश्वर्या वह
फिर कभी वह लिप्त होता ही नहीं
देखता रहता है जैसे खेल है
साधना है आत्मा को जानना
ज्ञान से ही मिलता है परमात्मा
वश में हो जाता है मन उस प्राणी के
करता भाव छूट जाता है तभी
जीता रहता है वह अहोभाव से
साक्षी भाव से देख कर संसार को
मन में खुश रहता है वह सदा
लोभ–क्रोध –कामना होती नहीं
रहता है वह दूर ईर्ष्या–द्वेष से
सत्य–प्रेम–करुणा का भाव ले
सफल कर लेता है अपने लक्ष्य को।

विकास का आधार
मानवाधिकार

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-90548-82-8

संस्करण : 2020, मूल्य : 225/-

घोषणाएं

राजनीति और भूख में
बडा गहरा संबंध होता है.

भूख केंद्र में होती है
और उसके इर्दगिर्द
घूमती रहती है राजनीति!

कभी–कभी लगता है.
राजनीति नदी के दो
किनारों की तरह होती है!

जिसके एक सिरे पर
होता है आदमी
और दूसरे सिरे पर होती हैं
राजनीतिक घोषणाएं
जैसे– सबको
रोटी, सबको शिक्षा, सबको
स्वास्थ्य, सबको आवास,
और सबको रोजगार !

या फिर
राजनीतिक घोषणाएं ,
और लोगों की जरूरतें रेल की
दो समानांतर पटरियों
की तरह होतीं हैं!

जो चलती तो
साथ–साथ हैं
लेकिन, आपस में
मिलती कभी नहीं!

महेश कुमार केशरी
मेघदूत मार्केट फुसरो,
बोकारो, झारखंड 829 144
keshrimahesh322@gmail.com

कविता

खरा विकास

हुई किरकिरी मुखिया जी की
बुधुवा ने दरखास दिया है

खड़ा हुआ तहसील दिवस पर
रटा हुआ सब सुना रहा है
नहीं पता है बेचारे को
कोई उसको भुना रहा है

हार गये पिछले प्रधान ने
बकरा खोज के फाँस दिया है

हाकिम ठहरे बड़े अनुभवी
सारा किस्सा जान लिया है
कौन छिपा परदे के पीछे
कारण को पहचान लिया है

धुआँ हो रहे मुखिया जी से
नजर मिली तो खाँस दिया है

सुख–दुख अपने हमराही के
मजबूरी है साथ निभाना
अब मुखिया के समझ में आया
क्यों अच्छा है बाँट के खाना

पिटा ढिंढोरा पंचायत का
उसने खरा विकास किया है!

सूर्य प्रकाश मिश्र
बी 23/42, ए के, बसन्त कटरा (गाँधी चौक)
खोजवा, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी 221 001
surya.misra1958@gmail.com

 ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

शीत की रात

शीत की ये रात है
काँपता हर गात है
धूप लेकर गुनगुनी–
आ गई ये प्रात है।

प्रात उजियारी लगे
धूप ये प्यारी रगे
है बड़ी जो शीत की–
रात ये भारी लगे।

दीन दुखियारे सभी
और बेचारे सभी
जल रहा अलाव एक–
सहारे उसके सभी।

जाग्रत ये समाज हो
करुण हिय सब आज हो
कष्ट इनका हो हरण–
ऐसा कुछ रिवाज हो।

दान धर्म की बात हो
कंबल की सौगात हो
दुखी न कोई आज हो–
सुखमय शीत रात हो।

रूणा रश्मि 'दीप्त'
राँची, झारखंड
runa.rashmi@gmail.com

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बसंत तुम इठलाना मत...

कविता

व्यग्र पाण्डे
कर्मचारी कालोनी, गंगापुर सिटी,
स. माधोपुर (राज.) 322 201
vishwambharvyagra@gmail.com

बसंत तुम इठलाना मत
गीत बेसुरे गाना मत।

तुझसे सजेगी धरती प्यारी
फूल फूल हर क्यारी क्यारी
देख–देख स्वयं की शोभा
हम पर रोब जमाना मत।

भँवरे गुञ्जेंगे तितली नाचेगी
कोयल तेरी गाथा बाँचेगी
सुनकर अपनी प्रशंसा उससे
अपना मुख विचकाना मत।

सर्दी अब ना सताये तुमको
धूप सहज सहलाये तुमको
हवा के प्यारे झूले से
मस्ती में गिर जाना मत।

तुम दिखना हर चेहरे पर
गाँव–शहर हर डेरे पर
लुटा देना जो पास है तेरे
तनिक भी बचाना मत।

तू कवियों का विषय रही
खुशबू वाली मलय रही
संभल के चलना हे ऋतुरानी
विरहन को सताना मत।
बसंत तुम इठलाना मत!

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

बेटियां

प्रेम प्रकाश उपाध्याय 'नेचुरल'
पिथौरागढ़, उत्तराखंड
naturalprem5@gmail.com

दंभ भर जीवन से उसके
वंशज की जो मुहर लगती
चर्चा आम से खास हो जाती
खुसियाँ घर–घर सिलकती।

सुबह से शाम तक
शाम से साँझ तक
दिन के उजाले से
रात के अंधेरे तक
शुरू से अन्त तक
एक से अनंत तक
शून्य से शिखर तक
बस गिनती उसकी होती
भूल चुके उस धुरी को अब
जो सबके केंद्र में होती।

खामोश निगाहें.....?
सेवा को खड़े रहते हाथ
हाशिये में खिसकने को नियत समझकर,
सबकी चाह में निज चाह विलय कर,
मिटा दिया उस बीज ने अपने होने को

क्योंकि ....
उसे निर्माण जो करना था
पूरी दुनिया का
वो कोई और नही
आधी दुनिया थी
उस घर की एक बेटी थी।

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

साहित्य समाचार

साहित्य के युगपुरुष थे फणीश्वरनाथ रेणु

ग्राम संवेदना के कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की 100वीं जयन्ती मनाने के लिए 4 मार्च, 2021) को भादर के कुरंग गाँव में एक समारोह आयोजित हुआ। समारोह में मौजूद साहित्यकारों ने रेणु को युगपुरुष बताया। वर्तमान समय में जब साहित्य नगरीयध् महानगरीय हो गया है, गाँव वहाँ आमतौर पर अनुपस्थित है या छौंक की तरह बचा है, ऐसे में कथाकार शिवमूर्ति के द्वारा अपने गांव कुरंग, अमेठी में रेणु जन्मशती समारोह का आयोजन रेणु के कथन को मूर्त करने की सुचिंतित कोशिश है। यह साल रेणु के जनमशती का वर्ष रहा और 4 मार्च सौंवा जन्मदिन। इस मौके पर 'स्मरण रेणु' के तहत विचार गोष्ठी और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें बंगाल, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न हिस्सो से बड़ी संख्या में लेखक व कलाकार जुटे। बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने हिस्सेदारी की और हिन्दी के इस रचनाकार रेणु को जाना–समझा। इसकी संयोजक थीं सावित्री बाई फुले पुस्तकालय की शिक्षिका ममता सिंह। रेणु के चित्र पर माल्यार्पण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

'रेणु स्मरण' के माध्यम से रेणु का सहित्य, उनकी परम्परा, सामाजिक संघर्ष तथा वर्तमान के संदर्भ में साहित्यकारों की भूमिका पर चर्चा हुई। इसके केन्द्र में 'मैला आंचल', 'परती परिकथा', 'जुलूस' और 'पलटू बाबू रोड' जैसे उपन्यास, 'पंचलेट', 'लालपान की बंगम', 'मारे गये गुलफाम', संवेदिया', 'रसप्रिया आदि कहानियां, 'जल प्रलय' कथा रिपोर्ताज तथा रेणु की कविताओं के साथ उनकी सामजिक–राजनीतिक भूमिका थी। दो सत्रों में सम्पन्न विचारगोष्ठी के पहले सत्र के अध्यक्ष मंडल के सदस्य थे प्रसिद्ध कथाकार संजीव व जाने–माने आलोचक वीरेन्द्र यादव। इस सत्र में कमल नयन पांडेय, स्वप्निल श्रीवास्तव, अखिलेश, लाल रत्नाकर, अनिल कुमार सिंह, अनिल त्रिपाठी, तरुण निशान्त, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, शिव कुमार यादव और पंकज शर्मा ने विचार प्रकट किये। वहीं, दूसरे सत्र की अध्यक्षता 'समकालीन जनमत' के प्रधान संपादक रामजी राय और इप्टा के महासचिव राकेश ने की। वक्ता थे रामप्रकाश कुशवाहा, डी एम मिश्र,

राधेश्याम सिंह, दीर्घ नारायण, भगवान स्वरूप कटियार, प्रो सूर्यदीन यादव,, आशाराम जागरथ, अरुण सिंह, ब्रजेश यादव, हरेन्द्र मौर्य, सोमेश शेखर, इन्द्र मणि कुमार, अरुण निषाद, मोती लाल, प्रवीण शेखर और जमन्नाथ दूबे। सत्रों का संचालन कौशल किशोर और के के पाण्डेय ने किया। वक्ताओं का कहना था कि फणीश्वरनाथ रेणु आन्दोलन के रास्ते साहित्य में आए। उनके सामाजिक जीवन का आरम्भ किसान आन्दोलन से होता है। सन्1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में वे शामिल हुए। नेपाल की राणाशाही हो या भारत की तानाशाही इसके विरुद्ध लोकशाही के संघर्ष में वे शामिल हुए और जेल भी गए। वे लेखकों से जब गाँव जाने की बात करते हैं तो इसके पीछे के वास्तविक सन्दर्भ को समझा जाना चाहिए। उनका जीवन एक सक्रिय बुद्धिजीवी का जीवन है और इस दायित्व को उन्होंने निभाया।

प्रेमचन्द की परम्परा के साथ उनके जुड़ाव के सन्दर्भ में वक्ताओं की राय थी कि यहाँ परम्परा का अनुवाद नहीं है। प्रेमचन्द के सबल पक्ष का यहाँ आत्मसात है तो वही इन्होंने बहुत कुछ नया दिया। जहाँ प्रेमचन्द का सहित्य आजादी के संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता हैं, वहीं रेणु का लेखन आजादी के बाद पैदा हुए मोहभंग का लेखन है। दोनों की अन्तर्वस्तु में समानता है पर अभिव्यक्त का भूगोल अलग है। रेणु ने यथार्थ को भेदने की

अपनी भाषा विकसित की। प्रेमचंद में विचार की बहुलता है, वहीं रेणु में संवेदना की सघनता है। वक्ताओं का यह भी कहना था कि रेणु ने भारत की सामाजिक व्यवस्था, उत्पीड़ित समुदाय व इस लोकमन के मर्म को समझा और मनुष्य के अंदर की संवेदनशीलता और करुणा को व्यक्त किया। इनके यहाँ इन्द्रियबोध है। ध्वनियां मूर्त होती दिखती हैं। लोकजीवन अपनी पूरे रूप, रंग, रस, स्पर्श, संगीत आादि के साथ उपस्थित है। रस और रोचकता जरूरी है पर रोचकतावाद नहीं। सार रूप में कहा जा सकता हैं रेणु ने कला विधाओं का समुच्चय रचा और अपने समय यथार्थ को अभिव्यक्त किया।

जन्मशती समारोह के दूसरे चरण में रेणु की कहानी 'पहलवान की ढ़ोलक' का मंचन हुआ। आजमगढ़ की नाट्य संस्था सूत्रधार ने इसे प्रस्तुत किया जिसकी परिकल्पना और निर्देशन ममता पंडित का था। जन्मशती समारोह के आरम्भ में कथाकार शिवमूर्ति ने सभी का स्वागत किया और कहा कि रेणु को स्थापित करने की आवश्यकता नहीं। हम इसके लिए नहीं आये हैं। कोशिश यह है कि हम देखें कि रेणु हमें क्यों अपील करते हैं और हम उनसे क्या ग्रहण कर सकते हैं। सावित्री बाई फुले पुस्तकालय की संयोजक ममता सिंह ने बाहर से आये लेखकों, कलाकारों व नाटय संस्था सूत्रधार और स्थानीय लोगों को इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रस्तुति : डॉ. अरुण कुमार निषाद

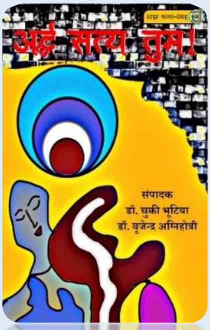

अर्द्ध सत्य तुम!

डॉ. चुकी भूटिया (सं.)

आईएसबीएन : 978-81-946859-4-4

संस्करण : 2021, मूल्य : 225/-

ज्योतिर्गमय अंजुमन संस्थान गगरिया, पूर्णियाँ के तत्वाधान में स्काउट भवन जिला स्कूल, पूर्णियाँ में आयोजित एक समारोह में युवा गजलकारा अंजु दास गीतांजलि द्वारा लिखी गई गजल पुस्तक ज्योतिर्गमय अंजुमन गजल संग्रह –1 जो बिहार हिंदी राजभाषा निदेशालय , बिहार सरकार,पटना द्वारा अनुदानित है, का लोकार्पण किया गया। इस सास्वत समारोह की अध्यक्षता बिहार के वरिष्ठ हास्य कवि परमेश्वर गोयल उर्फ काका बिहारी ने की। समारोह में ज्योतिर्गमय अंजुमन संस्थान द्वारा कटिहार से – डॉ० अनवर इरज (मुख्य अतिथि) ,पूर्णियाँ से – गोपाल चन्द्र घोष मंगलम, किशनगंज से– डॉ. पी. पी. सिन्हा, अररिया से– अजय कु. अकेला एवं भागलपुर से– डॉ. रमेश आत्मविश्वास को खेतीश चन्द्र दास 'राम बाबु' स्मृति सम्मान के अंतर्गत अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो से सम्मानित किया गया। इस समारोह में सम्मानित कवियों ने गजलकारा अंजु दास गीतांजलि के साहित्य सफर के विषय में अपने–अपने वक्तव्य रखे। गजलकारा अंजु दास गीतांजलि द्वारा ज्योतिर्गमय अंजुमन संस्थान एवं अपने स्वसुर खेतीश चन्द्र दास ष्राम बाबुष के जीवन संघर्ष के विषय में विस्तार से बताई की कैसे वे जनमानस के मसीहा बने और समाज के लिए जनहित में उनके द्वारा किए गए कार्यों की विस्तार से चर्चा की एवं उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प

ली। संस्थान के आयोजक श्री संजय कुमार दास एवं संयोजक श्री शैलेश प्रजापति शैल ने भी विस्तार से अपनी– अपनी बातों को रखा। गजलकारा के पिता श्री मणिकांत मंडल ने भी अपने वक्तव्य रखे एवं अपनी पुत्री को आशीर्वाद दिए।

समारोह के दूसरे सत्र में कव्यपाठ किया गया। इस अवसर पर अतुल मल्लिक अनजान, कुमार प्रकाश,अनुपमा अधिकारी अनु, उमेश पंडित उत्पल,शमशाद जिया,बाबा बैद्यनाथ झा,श्याम देव राय, गौरी शंकर पूर्ववर्ती, अजुकुर रहमान सरिक,ठाकुर तैश झा, प्रो० कासिम अख्तर,प्रकाश मणि, दिनकर दीवाना, लक्ष्मी नारायण मधुलक्ष्मी,त्रिलोकीनाथ दीवाकर, प्रीतम विश्वकर्मा 'कवियाठ' समेत दर्जनों कवि एवं सहित्यकार उपस्थित थे।

प्रस्तुति : अंजुदास गीतांजलि

जुम्बिश

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-946859-3-7

संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

हिंदी साहित्य का निकष

डॉ. बृजेन्द्र अग्निहोत्री

आईएसबीएन : 978-93-90548-81-1

संस्करण : 2020, मूल्य : 299/-

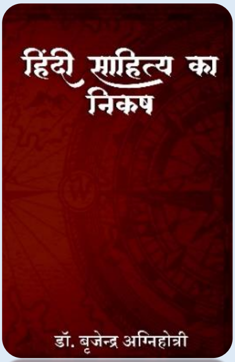

संतोष हॉल, मैग्नेटो मॉल में नवरंग काव्य मंच द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी कारीगरी का कार्यक्रम बेहद सफल रहा। युवा रचनाकारों ने अपनी कविताओं, गजलों से खूब समां बाँधा। प्रख्यात शिक्षाविद डॉ. जवाहर सुरिसेट्टी ने कविता विद कैरियर पर अपने बहुमूल्य विचार रखे। मंच पर रहे डॉ जवाहर सुरिसेट्टी, श्री आई.एन. सिंह, डॉ के.के.अग्रवाल (पूर्व प्ै अधिकारी), कवि श्री शीलकान्त पाठक जी।

संचालन का दायित्व कवि राजेश जैन 'राही' और अनिल श्रीवास्तव ने संभाला। कार्यक्रम में कवि राजेश जैन राही ने युवा कवियों के लिए कॉफी विद काव्य का कार्यक्रम लांच किया। कार्यक्रम में तीन कोरोना योद्धाओं श्री राजकुमार चौहान, श्री अश्विनी पटेल एवं श्रीमती निशा बघेल का सम्मान किया गया। डॉ अर्चना पाठक द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम में श्री आर डी अहिरवार, आकृति द्विवेदी, रिक्की बिंदास, राकेश अग्रवाल, राकेश तिवारी, संघमित्रा राय गुरु, रंजीत सिंह, रोशन कुमार, राखी वैद्य, मोहम्मद आरिफ मलिक, मयंक साहू, प्राची सिंह स्मिता मिश्रा, भागीरथ वर्मा, अमित चतुर्वेदी, अजेंद्र सिंह, भूपेंद्र साहू ने अपनी रचनाओं से संतोष हॉल को काव्य के विभिन्न रसों से सराबोर कर दिया। शहर के काव्य प्रेमियों ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

प्रस्तुति : राजेश जैन राही

ISSN : 2319-2178 (P) 2582-6603 (O)

साहित्य अकादमी पुरस्कार

बिहार की हिन्दी कवयित्री प्रोफेसर अनामिका, मैथिली रचनाकार प्रोफेसर कमलकांत झा, उर्दु के रचनाकार हुसैन–उल–हक को वर्ष २०२० के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। मूल रूप से मिथिलॉचल मधुबनी शहर के कलुआही प्रखण्ड श्हरिपुर डीह टोलाश के रहने वाले कमलाकांत झा को मैथिली कहानी श्गाछ रूसल अछिश के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा हुई है। यह पुरस्कार उन्हें लघु कथा के लिए प्रदान किया गया है। रचना में पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए पेड़–पौधे के महत्व को बयां किया गया है। अनामिका को हिन्दी कविता संग्रह श्टोकरी में दिगन्तरू थेरी गाथाश और हुसैन–उल–हक को श्अमावस में ख्वाबश उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। बिहार के इन तीन साहित्यकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि बिहार के रचनाकारों को सम्मान मिलना राज्य के लिए गर्व की बात है। वहीं उन्होंने कहा कि अनामिका को पुरस्कार मिलने से आधी आबादी को प्रेरणा मिलेगी। पहली महिला साहित्यकार हिन्दी कवयित्री प्रोफेसर अनामिका मिथिलॉचल मुजफ्फरपुर शहर के रज्जू साह लेन निवासी लेखक, कवि और बिहार विश्वविद्यालय

के पूर्व कुलपति सह हिन्दी विभागाध्यक्ष श्यामनंदन किशोर और आशा किशोर की पुत्री हैं। हिन्दी में कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाली ये देश की पहली महिला साहित्यकार हैं। अनामिका को राजभाषा परिषद् पुरस्कार, साहित्य सम्मान, भारत भूषण अग्रवाल एवं केदार सम्मान आदि पुरस्कार मिल चुके हैं।

साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने बताया कि 20 भाषाओं के लिए अपने वार्षिक साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इन पुस्तकों को सम्बन्धित भाषा के त्रिसदस्यीय निर्णायक मण्डल ने निर्धारित चयन प्रक्रिया का पालन करते हुए पुरस्कार के लिए चुना है। पुरस्कारों की अनुशंसा 20 भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई। पुरस्कार 01 जनवरी 2014 से 31 दिसम्बर 2018 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिया गया है। विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल और एक लाख रुपए की राशि दी जाएगी। वहीं, राउरकेला के संताली साहित्यकार जयराम टुडू को बाल साहित्य पुरस्कार दिया जाएगा। मलयालम, नेपाली, उड़िया और राजस्थानी भाषाओं में पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएंगे।

इन्हें मिला पुरस्कार–

कविता : अरुंधति सुब्रमण्यम (अंग्रेजी), हरीश मीनाश्रु (गुजराती), अनामिका (हिंदी), आर एस भास्कर (कोंकणी), ईरुंगबम देवेन (मणिपुरी) रूपचंद हांसदा (संताली) व निखिलेश्वर (तेलुगू)

कहानी संग्रह : अपूर्व कुमार सैकिया (असमिया), दिवंगत धरनीधर औवारी (बोडो), दिवंगत हृदय कौल भारती (कश्मीरी), कमलकांत झा (मैथिली) एवं गुरदेव सिंह रूपाणा (पंजाबी)

उपन्यास :नंदा खरे (मराठी), डॉ महेशचन्द्र शर्मा (संस्कृत), इमाइयम (तमिल) व हुसैन–उल–हक (उर्दू)

नाटक : ज्ञान सिंह (डोगरी) एवं जेठो लालवानी (सिंधी)

संस्मरण : एम वीरप्पा मोइली

महाकाव्य : मणिशंकर मुखोपाध्याय (बांग्ला)

मूल रूपरसंताली के जाने माने कवि रूपचंद हासदा को उनके कविता संग्रह श्गुड़ थारू कासा दारूश (मीठा गुड़, तीता गुड़) के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। संताली भाषा की पुस्तक 'गुड़ दक कासा दक' (हिन्दी में अथरू श्मीठा पानी कड़वा पानीश) के लिए संताली साहित्यकार रुपचंद की कविताओं का संग्रह है जिसमें 65 कविताएं हैं। किताब के शीर्षक के अनुरूप ही इसमें छपी सारी कविताएं संताली जीवन के अलग–अलग भाव को दर्शाती हैं। रुपचंद हांसदा ने ये कविताएं

वर्ष २०१६–१७ में लिखी थी। उन्होंने संताली जीवन के हर रूप को उकेरा है। इसमें संताली जीवन के संघर्ष का यथार्थ चित्रण है। वर्ष 2018 में प्रकाशित हुई थी। रूपचंद हांसदा को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने पर रॉची के साहित्यकारों ने खुशी जताई है। वे रॉची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के स्नातकोत्तर के पूर्वी छात्र हैं। हालांकि वे स्नातकोत्तर की पूरी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए क्योंकि पढ़ाई के दौरान ही रेलवे में उन्हें नौकरी मिल गई। रॉची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के पूर्व अध्यक्ष और वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गिरधारी राम गंझू ने कहा कि जनजातीय भाषाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलना सुखद है। उन्होंने कहा कि संताली के साथ अन्य जनजातीय भाषाओं में भी काफी साहित्य लिखा जा रहा है, जिन्हें राष्ट्रीय पटल पर पहचान दिए जाने की जरूरत है। रॉची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ हरि उरांव ने कहा कि रूपचंद हांसदा को साहित्य अकादमी सम्मान मिलना जनजातीय लेखकों के लिए गर्व की बात है। डीएसपीएमयू में संताली की सहायक प्राध्यापक डॉ डुमनी माई मुर्मु ने कहा है कि जनजातीय भाषाओं के शोधिर्थियों को इस सम्मान से प्रेरणा मिलेगी।

59 वर्षीय रूपचंद हांसदा पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिला के बनबांव थाना क्षेत्र के कैरा गांव के रहने वाले हैं। अभी वे खड़गपुर में रेलवे कर्मचारी हैं। 1980 में झारग्राम के सेवा भारती कॉलेज से स्नातक करने के बाद से ही वे संताली साहित्य की साधना में जुट गए। अभी तक उनकी 21 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

साहित्य अकादमी पुरस्कार–2020 की खास बात यह भी है कि इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एम वीरप्पा मोइली को भी चयनित किया गया है। उन्हें कन्नड़ महाकाव्य के लिए सम्मान दिया जाएगा।

युवा साहित्य अकादमी, 2020 का भी एलान किया गया है। 18 भाषाओं के युवा साहित्यकारों को चुना गया है। इसमें हिन्दी के अंकित नरवाल को उनकी पुस्तक 'यूआर अनंतमूर्ति : प्रतिरोध का विकल्प' (साहित्य–आलोचना), संताली की कवयित्री अंजली किस्कू को उनके काव्य संग्रह 'अंजलि' तथा मैथिली के साहित्यकार सोनू कुमार झा को उनके कहानी संग्रह 'गस्सा' के लिए यह पुरस्कार दिया जाएगा।

प्रस्तुति : बी. आकाश राव

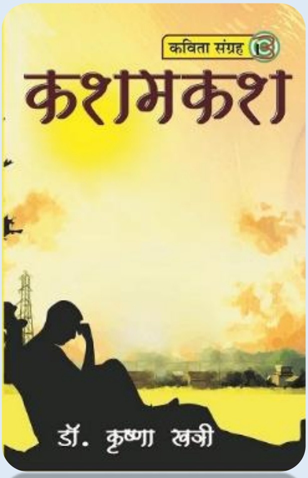

कशमकश

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-8-5
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

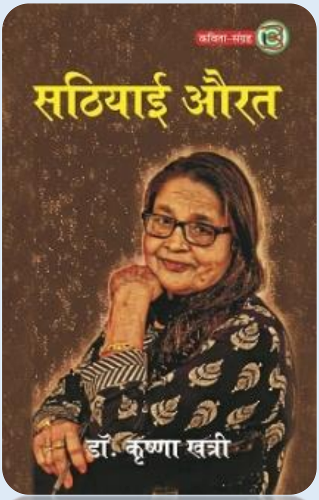

सठियाई औरत

डॉ. कृष्णा खत्री

आईएसबीएन : 978-81-945460-9-2
संस्करण : 2020, मूल्य : 250/-

शोध-प्रतिमान

सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा शोधलेख संग्रह

सहयोग आधार पर प्रकाश्य साझा शोधलेख संग्रह 'शोध-प्रतिमान' के लिए मौलिक शोध-लेख आमंत्रित हैं। शोध लेख किसी भी विषय-क्षेत्र से हो सकते हैं, किंतु उनकी भाषा हिंदी होनी चाहिए। आदर्श शोध लेख की शब्द-सीमा 2000 से 2500 शब्द है। यदि शोधलेख से संबंधित चित्र या आरेख हों, तो साथ में संलग्न करें।

प्रकाशन नियम-

1. अनुमानित प्रति प्रष्ठ प्रकाशन लागत व्यय 250.00 है।
2. सहयोग राशि का भुगतान रचना-चयन के उपरांत करना है।
3. 'शोध-प्रतिमान' संग्रह का प्रकाशन मई, 2021 माह में किया जाना प्रस्तावित हैं।
4. प्रत्येक शोध-लेखक को संग्रह की पाँच प्रति कोरियर/पंजीकृत डाक से प्रेषित की जाएंगी। यदि किसी लेखक को पाँच से अधिक प्रतियों की आवश्यकता हो तो वह अपनी सहयोग राशि में प्रति संग्रह 200.00 अतिरिक्त जोड़कर भुगतान करे।
5. शोध-लेख **30 अप्रैल, 2021** तक ही स्वीकार होंगे।
6. प्रत्येक शोध-लेखक को शोधलेख के चयन के पश्चात प्रकाशन सहयोग राशि प्रति पृष्ठ 250.00 की दर से भुगतान करना होगा। इस भुगतान में लेखकों को प्रेषित करने पर लगने वाला डाकव्यय भी सम्मिलित है। यह भुगतान 'मधुराक्षर' के भारतीय स्टेट बैंक के खाता-क्रमांक 31807644508 (IFS Code SBIN0005396, MICRCode-212002004) में जमा करें। PayTM या GooglePay के माध्यम से भुगतान करने के लिए 9918-69-5656 मोबाइल नंबर को चुनें। भुगतान करने के पश्चात रसीद व्हाट्सप्प नंबर 9918-69-5656 पर प्रेषित करें।

- किसी भी तरह का पत्र व्यवहार madhurakshar@gmail.com में करें, और विषय (Subject) में 'शोध-प्रतिमान' लिखना न भूलें।

जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई।
गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई।।
श्रीरामचरितमानस